श्री अद्भुतरामायण

भाषा पद्यानुवाद



—तेजभानुसिंह

श्रीजगदम्बाय नमः

श्री अद्भुतरामायण

भाषा पद्यानुवाद



अनुवादक

बाबू साहब श्रीमान् तेजभानुसिंह जू देव रईस

राज्य टेकारी—ज़िला रायबरेली

श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर,
देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय)
व्यवस्थापक-पं. चक्रधर जोशी

प्रथम बार ५००]   [मूल्य २) सजिल्द २॥)

प्रकाशक
बा० तेजभानुसिंह जू देव रईस
राज्य टेकारी, रायबरेली.



मुद्रक
पं० मन्नालाल तिवारी
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

'श्री लक्ष्मीधर विद्यामन्दिर' को
सादर समर्पित
लेखक की
हस्ताक्षर
२७।७।१

अद्भुतरामायण की विषयानुक्रमणिका

सर्ग — विषय

१—रामजानकी का परब्रह्मरूप प्रति पादन
२—अम्बरीष नृप को नारायण का वर देना
३—नारद पर्वत मुनिका नृप सभा में आना
४—रामचन्द्र के जन्म लेने का कारण
६—हरिमित्रो पाख्यान तथा कौशिकादि बैकुण्ठ गमन वर्णन
७—नारद जी को गान विद्या की प्राप्ति
८—सीताजी का जन्म वर्णन
९—परशुराम को श्रीरामजी का विश्वरूप प्रदर्शन
१०—श्रीरामजी का पवनकुमार को चतुर्भुज रूप दिखाना
११—राम का सांख्य योग वर्णन करना
१२—उपनिषत्कथन
१३—राम का भक्तियोग कथन
१४—श्रीराम मारुति संवाद
१५—श्रीहनुमानजी का श्रीराम स्तुति करना
१६—श्रीरामजी का रावण वध के पश्चात् राज्याभिषिक्त होना
१७—जानकी वचन सहस्र मुख का रावण का वृत्तान्त
१८—रावण की सेना का निकलना
१९—सहस्रानन के पुत्रों का युद्धार्थ जाना
२०—संकुल युद्ध वर्णन
२१—रावण द्वारा रामसैन्य विक्षेप
२२—श्रीरामजी का मूर्च्छित होना
२३—सीता-कृत सहस्र मुख वध वर्णन
२४—देवतों का रामजी को आश्वासन देना
२५—सहस्र नाम से जानकी की स्तुति
२६—श्रीराम विजय वर्णन
२७—श्रीअवध में आना

समर्पणम्

कवित्त

मोहतम पुञ्ज को वचन रविरश्मिजासु ,
मुक्ति पददायक अनुग्रह महान है ।
जाके पद पद्म को पराग नैन अञ्जन है ,
आशिष सुधा सी जासु जीवन विधान है ।
सोई गुरुदेव के पदारविन्द ग्रन्थ यह ,
अर्पत हौं जामें सियाराम गुन-गान है ।
ताकी वस्तु ताहि देत वारिद ज्यों वारिधि को ,
जोरिकर सादर विनम्र 'तेजभान, है ।

अज्ञानान्ध्यहरस्सुधीगणहरि ज्ञानोपदेशांशुभिः ।
गौरीशङ्कर शास्त्रिमद्गुरुवरो भूपैस्सदाभ्यादृतः ॥
वेदाङ्गागशास्त्रवित् सुयशसा विभ्राजते भारते ।
तस्याङ्घ्र्यब्जमुपानयत्यथ कृतिं 'श्री तेजभानुः' कविः ॥

'श्री हरिः पातात्'

प्राक्कथन

माननीय सज्जनगण !

मुझे बाल्यकाल से ही धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन तथा सत्समाज में बैठकर उनके आध्यात्मिकादि विविध वक्तव्यों के परिशीलन करने का अनुराग था और साथ ही उसके कवित्व प्रियता का बीज भी अन्तर्लीन था। अतएव सन्तवाणियों का संग्रह और तत्तत् पुस्तकों का अध्ययन करते-करते फलतः उस सञ्चयन को सन् १९४१ ई० के अक्टूबर माँह में पुस्तकाकार "सन्तवाणी सार संग्रह" नाम से ग्रन्थ प्रकाशित कर दिया जिसे आदरणीय दृष्टि और विचार बुद्धि से उपादेय समझ कर भगवत्प्रेमी महाशयों ने साम्यक् प्रकोरण अपनाया किञ्च उसी सन् में श्रीतीर्थराज में कुम्भ पर्व्व पर बड़े-बड़े मठाधीशों, आचार्यों, जगद्‌गुरुओं का शुभागमन सुन कर इस दास को भी सन्त सेवा तथा दर्शन की महती अभिलाषा उत्पन्न हुई, उसे चरितार्थ करने और इन चर्म चक्षुओं को 'सन्त दरस जिमि पातक टरई' के कथनानुसार सफल करने को दास भी त्रिवेणी क्षेत्र को आत्माराम महात्माओं के पद पद्म पराग से पवित्र होने की कांक्षा से गया—और वहाँ २०-२२ दिवस रहकर उपर्युक्त पुस्तक वितरण कर साधु सेवा की—तथा महात्माओं के श्री मुख से भगवत्कीर्तन निरन्तर श्रवण करता रहा अन्ततोगत्वा पूर्व सञ्चित कविता प्रियता का बीज वाणी देवी के अपूर्व कृपा सलिल से सिञ्चित होकर हृदय क्षेत्र में ५५ वर्ष के वय में अंकुरित हो उठा और उसी उमङ्ग में 'भजन कीर्तन' नामक एक संक्षिप्त पुस्तक अपने टूटेफूटे शब्दों में मुद्रित कराकर प्रकाशित कर दिया—तबतक मुझे छन्द रचना का शास्त्रीय ज्ञान कुछ भी नहीं था विचार हुवा कि पिङ्गल शास्त्रीय रीतियाँ जानकर रचना करना श्रेयस्कर होगा अतः टेकारी राज्य निवासी श्रीयुत मुंशी माताप्रसाद श्रीवास्तव (चकोर) कवि से कतिपय मास तक छन्द रचना की प्रणाली

मैंने सीखी--और उनके संस्कृत 'आनन्द रामायण' के भाषा पद्यानुवाद को देखकर मुझे भी 'अद्भुत रामायण' के भाषा पद्यानुवाद करने का हृदयोल्लास हुआ। मुझ जैसे नवीनाभ्यासी के लिये यह कार्य वैसे ही हुआ जैसा कि महाकवि कालिदास ने कहा है (प्रांशुलभ्ये फले लोभा दुद्बाहुरिव वामनः) अर्थात् जैसे एक खर्व काय मनुष्य उन फलों को तोड़ना चाहे जो उच्च विग्रह मनुष्य से लभ्य हों और भक्त शिरोमणि श्री तुलसीदास जी ने जैसा कहा है—'मति अति नीच ऊँच रुचि आछी' इत्यादि परन्तु मेरी मनोवृत्ति इतनी प्रबला हो उठी कि चिन्तित लक्ष्य पर सुदृढ़ा हो गई फिर क्या था भगवती जगज्जननी श्री सीता देवी की प्रेरणा से उनके अद्भुत चरित्र को अपने टूटे फूटे शब्दों में श्री गुरुदेव जू के प्रसाद से लिखना आरम्भ कर दिया और साल भर के परिश्रम से विविध छन्दों में ग्रन्थ का अनुवाद पूर्ण किया मैं कवि नहीं और न मुझे काव्य विषय का सम्यक् परिज्ञान है किन्तु मैंने (दारु विचार कि करिय कोउ, बन्दिय मलय प्रसङ्ग) इस बुद्धि से दुःसाहस कर डाला। क्योंकि मर्यादा पुरुषोत्तम करुणा वरुणालय भगवान् श्री रामचन्द्र जी और भक्त वत्सला भगवती आद्या शक्ति श्री सीता जी का चरित्र सभी सनातन धर्मी आबाल वृद्ध नारी नर को प्रियतम है यथा—(गिरा ग्राम्य सियराम यश, गावहिं सुनहिं सुजान) आशा है कि सहृदय समुदाय इसे श्री सीताराम जी के नाते भवरुज हारी समझ कर काव्य विषयक दोष गुणों का विचार न कर अवश्य अपनायेंगे।

इस अनुवाद के सम्बन्ध में यह वक्तव्य है कि सम्पादनावसर में अवधगत प्रतापगढ़ मण्डलान्तर्गत अठेहाग्रामवासि पं० दामोदर जी शुक्ल शास्त्री और रायबरेली प्रान्तान्तः पाति केलौली ग्राम वास्तव्य पं० श्री दयाशङ्कर जी वाजपेयी 'गिरीश' द्वारा मुझे पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। जिसके लिये मैं उन दोनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

अलंविज्ञेषु

विनीत—तेजभानु

भूमिका

अद्भुत रामायण आदि कवि महर्षि श्री वाल्मीकिजी ने अमरभारती में रचा है, जिसमें अम्बरीष चरित्र, पर्वत और नारद मुनियों का मोह, श्रीहरि को मुनिकृतशाप, तद्नुसार इक्ष्वाकुवंश में जन्म धारण करना, सीतोत्पत्ति, तथा उनका विवाह परशुराम रामसंवाद, मारुति मिलन, और उनके प्रति ब्रह्मज्ञानोपदेश, फिर लंकापर चढ़ाई, दशमुख रावण वध, अवध प्रत्यागमन, रामराज्याभिषेक और उसमें चारों दिशाओं से महामुनियों का आगमन और मुनियों का अभिनन्दन देना, इसपर सीता जी से सहस्रानन रावण का चरित्र कथन सुनकर श्रीरामजी का ससैन्य पुष्कर द्वीपपर धावा बोलना और युद्ध करना, श्रीरामजी के मूर्छित होने पर सीता जी का कालीरूप धर कर उसका बध करना, श्रीरामजी का निजी मूर्च्छा दूर होने पर ब्रह्मा जी के द्वारा कुल वृत्तान्तावगम करना, और सहस्रनाम से काली की स्तुति करना, काली जी का पुनः सीता रूप धारण करना, अयोध्या प्रत्यागमन तथा आनन्दोत्सव आदि आदि अद्भुत कथाओं का वर्णन है, जिसे अनुवादक महोदय ने विविध छन्दों में अनुवाद किया है।

काव्य भाषा

यह अनुवाद अवधी, वैसवाड़ी, व्रजभाषा, तथा संस्कृत मिश्रित भाषा में किया गया है। भाषा मधुर, रसवती, सरला और चित्ताकर्षिका है। अनुवादक ने अनुवाद करने तथा भाषा को सर्वसाधारण गम्य बनाने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। जोकि मेरे विचार से स्तुत्य है।

कविता प्रणाली

लेखक ने ग्रन्थानुवाद करने में भक्त शिरोमणि, साहित्य सम्राट श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी का अनुसरण एतद्धिया किया है कि—

अति अपार जे सरितवर, जो नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलकहु परमगति, बिनु श्रमपारहिं जाहिं॥

काव्यवृत्त

प्राचीन शैली के अनुसार दोहा, सोरठा, चौपाई, पद्धरी, दिकपाल, हरिगीतिका, आदि-आदि हैं, जो सरस, भावग्राही, माधुर्य और सौष्ठव विशिष्ट हैं। लेखक महोदय एक कान्हवंशीय श्रौत, स्मार्त क्रियानिष्ठ सदाचारी क्षत्रिय हैं। आप रायबरेली प्रान्तान्तर्गत टेकारी राज्य के रईस बिद्वप्रेमी, साहित्यसेवी और भक्त हृदय हैं। मैं लेखक महोदय के सराहनीय श्रम की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करता हूँ कि जिन्होंने एक राजकुमार रईस और अमीर होते हुये भी एक संस्कृत महाकाव्य के अनुवाद को दैनन्दिन के श्रम से राज्यकार्य की देखरेख करते हुये सुसज्जित किया है। यह कार्य मातृ-भाषा की सेवा के नाते कम नहीं कहा जा सकता इस अद्भुत गुप्त कथानक को भाषा पद्यानुवादित करके सर्वसाधारण जनता का जो परमोपकार किया है मेरी तुच्छ बुद्धि में श्रेयोजनकत्वेन वह स्वल्प नहीं है परोपकार के प्रण्योप पादक होने से श्रम श्लाघ्यतम है। आशा करता हूँ इसे कवित्वरसिक और भक्तहृदय सहर्ष पढ़ेंगे और अ।नायेंगे अब मैं भक्तेष्ट पूरण पटु श्रीरामबल्लभा जी के चरण सरोरुह में निज मस्तक को मधुपायित करता हुआ लेखनी को उपराम देता हूँ।

अलंविज्ञेषु

हरिदासानुगो – दामोदर शुक्लः

श्रीचन्द्रभानु पाठशालाध्यापकः

राज्य टेकारी

अद्भुत रामायण



श्रीयुत् १०८ गुरुवर पं० गौरीशंकर जी शुक्ल, शास्त्री

(श्रीयुत् तेजभानुसिंहजी साहेब के गुरु महाराज)

अद्भुत रामायण



श्रीयुत् बाबू तेजभानुसिंह जी रईस, टेकारी स्टेट
जिला रायबरेली

अनुवादक वंश परिचय

सहृदय वाचकवृन्द !

किसी भी ग्रन्थ के पढ़ते समय पाठक के हृदय में ग्रन्थ रचयिता की जीवनी जानने की उत्सुकता प्रबल रूप से बढ़ती है। वह यह कि कवि कौन है गिरादेवी की कैसी कृपा है उसका सांसारिक तथा ईश्वरीय जीवन कैसा है इत्यादि प्रश्न उठते हैं तदर्थ मैं ग्रन्थ रचयिता के जीवन चरित्र व तद्वंशपरिचय के सम्बन्ध में कतिपय पंक्तियाँ सेवा में सादर अर्पण करता हूँ। आप रायबरेली प्रान्तान्तर्गत टेकारी राज्य के रईस हैं। इस राज्य के संस्थापक, वीरपुंगव, बाबू श्रीरघुनाथ सिंहजू देव बहादुर हैं जो कि आपके प्रपितामह थे, गोविप्र साधु सेवी बाबू साहब बहादुर जी के राजत्वकाल में प्रजावर्ग अमन अमान से था। टेकारी राज्य का संस्थापन अपने बाहुबल से करके न्यायतः और धर्मतः प्रजापर शासन किया था इस प्रकार राज्य शासन कर अपनी मनोवृत्ति भगवती भागीरथी की सेवा में लगाई और अपने सुयोग्य नररत्न ज्येष्ठ पुत्र बाबू श्री सर्वजीत सिंहजू देव बहादुर को राज्यभार सौंपकर जगत तारिणी श्री जाह्नवी के प्रख्यात 'गोकर्ण' घाट पर ४२ वर्ष तक अविच्छिन्न रूप से रहकर अतिथि सेवा करते हुये जीवन दीप निर्वाण किया। बाबू श्री सर्वजीतसिंहजू देव पिता से किसी बात में कम न पाये गये वरन वीरता, उदारता में अधिक ही थे। नीति पूर्वक प्रजापालन करते हुये जब इस नश्वरलीला को संवरण किया तब आपके ज्येष्ठपुत्र धीरवीर वचन गंभीर बाबू श्रीगङ्गाबख़्शसिंह जू देव राज्याधिकारी हुये आप धर्मपूर्वक राज्य करते थे जिसके फलस्वरूप भगवान आशुतोष श्रीशङ्कर जी की कृपा से चन्द्रभानु, उदयभानु, भैरवबख़्श, तेजभानुसिंह, नाम के चारु चार तनय उत्पन्न हुये, जिनको पाकर उक्त बाबू साहब परम प्रसन्न थे, परन्तु दैवी

घटना बड़ी विचित्र है, उसकी प्रेरणा से यह प्रसन्नता अचिरस्थायिनी हुई, आपही के जीवनकाल में ज्येष्ठ पुत्र लाल चन्द्रभानुसिंह तथा भैरव बख़शसिंहजी का स्वर्गारोहण होगया। इस हृदय विदारक घटना ने बाबू साहबजू का शेष जीवन सुख रहित बिताया। इनके स्वर्गगामी होने पर इनके पौत्र विज्ञवर गीर्वाण वाणी तथा हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी आदि विविध भाषा के परमविद्वान् बाबू श्रीशशिधरसिंह जू देव राज्याधिकारी हुये। आपके दो ही तीन साल के राजत्वकाल में मध्यम पितृव्य बाबू उदयभानुसिंह जू का देहावसान होगया। तदनन्तर आप संसार को सारशून्य समझ अपने कनिष्ठ पितृव्य अनुवादक महाशय बाबू श्री तेजभानुसिंहजी को राज्य भार सौंपकर श्रीविन्ध्येश्वरी के समीप्य में रहते हुये तत्त्वानुसन्धान करने लगे। कतिपय काल के बाद अपने लघुभ्राता की आकस्मिक मृत्यु को सुनकर बाबू हिंमांशुधरसिंहजी के नाम वसीयत कर दिया। जो श्रीमान् बाबू तेजभानुसिंहजी के औरस पुत्र हैं, अल्पकाल के बाद ही बाबू शशिधरसिंहजी स्वर्गगामी हुये और बाबू हिमांशुधर सिंहजी राज्याध्यक्ष हुये जो कि एक युवराज विद्वत् प्रिय विचारशील भूपाल हैं, ग्रन्थ प्रणेता हिन्दी, उर्दू के विद्वान् तथा सत्संगी हैं इस ग्रन्थ के पूर्व आप 'सन्तवाणी सारसंग्ररह', भजन कीर्तन, स्तोत्र माला ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं अब यह महाकाव्य का अनुवाद आप लोगों की सेवा में उपस्थित है, आशा है कि सज्जनगण सहृदयता पूर्वक अपनायेंगे।

विनीत—

दयाशङ्कर वाजपेयी

"गिरीश"

अथ शुद्धा-शुद्ध पत्रम्

शुद्ध	पृष्ठ	अशुद्ध	पृष्ठ
जगदम्बायै	१	जगदम्बाय	१
वेदाङ्गागम	समर्पण	वेदाङ्गाग	समर्पण-पत्र
सम्यक्	२	साम्यक्	२
तदनुसार	२	तद्नुसार	२
विद्वत्प्रेमी	२	विद्वप्रेमी	२
पुण्योपपादक	२	प्रण्योपपादक	२
जगत्तारिणी	२	जगततारिणी	२
भगवान्	२	भगवान	२
सामीप्य	२	समीप्य	२
हिमांशुधर	२	हिंमांशुधर	२
श्रीगणेशाय	३	श्रीगणशाय	३
पद्यानुवाद	३	पद्मानुवाद	३
त्रिशङ्कु	५	त्रिशङ्क	५
तुम्हरे	७	तुम्हरै	७
अस्तुति	७	स्तुति	७
नाभ	१८	नाम	१८
अहैं	२३	आहैं	२३
अहीप	२३	पहीप	२३
नृपगान	२३	गान	२३
मुहूर्त	२४	मूहूर्तं	२४
सुनहु	२५	पाहि	२५
यह बृतान्त सुनहु जस भयऊ	२५	यह बृतान्त जस भयऊ	२५
राक्षसि	२८	राक्षस	२८
निहोरा	२८	नहोरा	२८
सोनित	२९	सोमित	२९
उलूकेन्द्र	३०	उलकेन्द्र	३०
अंसा	३०	अंशा	३०
रहैं	३४	रहै	३४
विद्या	३५	विद्मा	३५

शुद्ध	पृष्ठ	अशुद्ध	पृष्ठ
दर्शन	२९	दर्शना	२९
सागरि	४५	सागिर	४५
सेवित	५२	से-वित	५२
दियो	५२	कियो	५२
होय	५३	भयो	५३
नहिं	५५	न	५५
अब	५८	अम्ब	५८
हेतुभूत	७१	हेतु-भूत	१७
सेना	८४	सैन	८४
अरमा	८६	धरमा	८६
उदबाहू	८९	दँउबाहू	८९
सुप्रसाद	८९	सूप्रसाद	८९
सुतजे	८९	सुततजे	८९
आरूढा	९६	आरूढ	९६
है	१०५	हैं	१०५
योगिनि	१०६	योगिन	१०६
जान न	१०१	जानत	१०१
उपजायो	१११	सनउपजै	१११
हिजायो	१११	विभ्राजै	१११
सिय	१११	सिया	१११
निष्कल	१११	निष्फल	१११
अनन्ता	१११	अन्ता	१११
गिरयो	११२	गियो	११२
सर्वाकार	११६	सर्वीकार	११६
सर्वविद्या	११८	सर्वविया	११८
पूज्या	११८	पूज्ये	११८
वेदगर्भा	,,	वेदग्गर्भा	,,
सर्वेन्द्रिय	१२०	सर्वेन्दिय	१२०
की	,,	की की	,,
पद्मनिभा	१२१	पद्यनिभा	१२१

शुद्ध	पृष्ठ	अशुद्ध	पृष्ठ
शशि	१२२	शार्शं	१२२
बीज संभवा	,,	बीज संभवरे	,,
योग	१२३	योग्य	१२३
प्रद्युम्न	१२४	प्रयुम्न	१२४
वंशहारिणि	१२७	वंशहेरिणि	१२७
अष्टादश	१२८	अष्टयेदश	१२८
महेश्वरि	१२९	महेबरि	१२९
वेदवेद्य	१३०	वेदविद्या	१३०
निरपत्रपा	१३१	निरप्रत्रपा	१३१
निलया	,,	निलषा	१३१
रुद्रगनाहिं	१३४	रुद्रग-नाहिं	१३१
हृदयस्थित	१३४	हृदयस्थिल	१३४
मायाविन	१३४	मायाचिन	१३४
जनुर्नाश	१३५	जनुर्नीश	१३५
वहत	१३६	बहुत	१३६
सुर	१३८	सर	१३८
डरि	१३८	डीर	१३८
पुन	१३८	युन	१३८
छन्दअर्धं	१३९	श्लोक अर्धं	१३९
छन्द	१३९	श्लोक	१३९

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

श्री अद्भुत रामायण

भाषा पद्यानुवाद

अथ मङ्गलाचरण

दोहा

गणपति गौरी सुवन जेहि, जपत सकल संसार ।
बन्दौं तिनके पदकमल, जे बुधि बलदातार ॥ १

बन्दौं गौरी शंकरहिं, जोरि जुगल पदपानि ।
जासु चरनरज अघहरन, सुर नरमुनि सुखदानि ॥ २

बन्दौं सीता राम पद, पावन परम सुजान ।
जेहि पद निकसीं सुरसरी, तारन हेतु जहान ॥ ३

सब मिलि होहु दयालु अब, चरन उपासक जानि ।
कहा चहौं रघुपति चरित, जो मुद मंगल खानि ॥ ४

पुनि प्रणवौं श्री शारदहिं, जो बुधिदायिनि माय ।
बसैं सोमम रसना सदा, भनित सरस ह्वै जाय ॥ ५

अथ प्रथम सर्ग प्रारम्भः

चौपाई

बन्दौं बालमीकि मुनि चरना । अद्भुत रामायण जिन बरना ॥
एक समय तमसा सरि तीरा । बैठे बालमीकि मुनि धीरा ॥
भरद्वाज तिन्ह कीन प्रणामा । पूँछा हुलसि राम गुणग्रामा ॥
जो शतकोटि कही रामायन । महा विशाल परम सुख दायन ॥
ब्रह्मलोक जेहि भई प्रतिष्ठा । द्विज सुरपितर सुनत करिनिष्ठा ॥
सहस पचीसहि पृथिवी माहीं । प्रचलित सुन्यो ऋषी मुनि पाहीं ॥
रामचरित शतकोटिक माहीं । गुप्त रहस्य कौन दर साहीं ॥
सो सुनि बालमीकि परबीना । रामचरित सुमिरन पुनि कीना ॥
करामलक इव भासेउ सबहीं । साधु बचन बोले मुनि तबहीं ॥
भरद्वाज चिर जीवहु ताता । सुरति करायहु तुम भलि बाता ॥

दोहा

सहस पचीस चरित्र जो, प्रकट अहै महि माहिं ।
तिन महँ सीता चरित वर, सम्यक बरनेउ नाहिं ॥ १

चौपाई

आदि शक्ति सीतायश पावन । परम गुप्त सुरनर मुनि भावन ॥
तासु चरित अद्भुत सुखदाई । कहहुँ मुनीश सुनहु मनलाई ॥
ब्रह्मलोक जो गुप्त कहाई । तुम्हरे हेतु कहब सब गाई ॥

आदि प्रकृति सीता महरानी । सृष्टि बीज देवन्ह सुखदानी ॥
स्वर्ग सिद्धि दायिनि गुण खानी । तपकी सिद्धि विभव वरवानी ॥
विद्या और अविद्या रूपा । गुणातीत जेहि मुनिन निरूपा ॥
ब्रह्म और ब्रह्मांड विधात्री । कारण रूप जगत की धात्री ॥
सकल जगतविलसित कुंडलिनी । ब्रह्म स्वरूप मोह दल दलिनी ॥
जेहि कुंडलिनी शक्तिहिं हेता । ध्यान धरहिं मुनि प्रेम समेता ॥
खोलि अविद्या ग्रंथि सुखारी । ह्वै अभीत विचरत महि सारी ॥

दोहा

जब जब होत गलानि जग, धर्म केरि सुनु तात ।
आदि शक्ति प्रगटै तबै, नाशन अधरम ब्रात[1] ॥ २

चौपाई

परम पुरुष पुरुषोत्तम रामा । स्वयं प्रकाश रूप सुख धामा ॥
मूल प्रकृति सीता महरानी । वेद बिदित अरु शास्त्र बखानी ॥
केवल रूप भेद दोउ माहीं । तात्विक भेद है रंचहु नाहीं ॥
सीता जौ न सोई हैं रामा । राम सोइ जानकी ललामा ॥
कहन सुनन को भिन्न लखाहीं । वास्तव भेद नहीं इन माहीं ॥
विद्वज्जन जानैं यह भेदा । होहिं अमरतजि संसृति खेदा ॥
सब जग साक्षी घट घट वासी । आनन्द रूप राम सुखरासी ॥
सर्वलोक के निसि दिन करता । आनंद मूर्ति और संहरता ॥
सीता के संयोग सों रामा । ध्यान योग्य होवहिं सुख धामा ॥
बिन पद पानि शीघ्र सो गामी । करत ग्रहण सब अन्तरयामी ॥

दोहा

जानत सो सब विश्व कहँ, ताहि न जानत कोय ।
वर्णित वेद पुरान महँ, पुरुष पुरातन सोय ॥ ३

१—समूह ।

चौपाई

नयन बिना निरखत सब काहीं। स्रवन बिना सब सुनत सदाहीं ॥
भली भाँति जानत संसारा। संसारी नहिं जानन हारा ॥
प्रकृति सीय पुरुषोत्तम रामा। जिनते भइ यह सृष्टि ललामा ॥
बरनब तिन कर जन्म अनूपा। जेहि कारन धारेउ नर रूपा ॥
रूप रहित इन कर वपु धारन। भयेउ सगुन सज्जन उपकारन ॥
यह चरित्र महिसुर जो गावहिं। बाणी में बुधिमत्ता पावहिं ॥
क्षत्रिय पढ़िकै भूपति होई। पढ़त बणिक उन्नति कर सोई ॥
शूद्र सुनत निज जातिहिं माहीं। लहै बड़प्पन संसय नाहीं ॥

दोहा

श्री अद्भुत रामायणहिं, प्रथम सर्ग भा पूर।
यथा भाव बरनन कियो, सिय प्रसाद भरि पूर ॥ ४

हरि पूजा करि नृप प्रिया, पायो पुत्र सुभक्त।
अंबरीष नामक जिमि, कहौं कथा हित जक्त ॥ ५

इति श्री अद्भुत रामायणे, प्रथम सर्ग समाप्तः।



अथ द्वितीय सर्ग प्रारम्भः

चौपाई

बालमीकि बोले मुनि नाथा। भरद्वाज मुनि सुनु हरि गाथा ॥
नृप इक्ष्वाकु वंश वारिधि वर। प्रगटे तहँ श्रीराम सुधाकर ॥
आदि शक्ति प्रकटीं महि सीता। महादेवि जगमाहिं पुनीता ॥
जन्म हेतु दोउन्ह कर भाई। सुनहु मुदित मन तुम चितलाई ॥
राम जनम कारन कर अंगा। अंबरीष नृप कथा प्रसंगा ॥
बरनौं सब प्रसंग अघहारी। राम महातम जन सुखकारी ॥
पद्मावति त्रिशङ्क की रानी। सब शुभ लच्छन सद गुनखानी ॥
अंबरीष नृप की शुचि माता। विश्व माहिं जसु जासु बिख्याता ॥
करति बिष्णु की नित प्रति पूजा। मन बच कर्म ध्यान नहिं दूजा ॥
भक्ति भाव सों निज कर रानी। गूथति माला कुसुमन आनी ॥

दोहा

धूप दीप नैवेद्य धरि, देति दच्छिणा दान।
मंत्र जाप करि प्रेम सों, करहि विष्णु गुनगान ॥ ६

चौपाई

बैष्णव भक्तन कर सन्माना। करहि प्रसन्न द्रव्य दै दाना ॥
एक समय तिथि द्वादसि माहीं। बिष्णु मूर्तिढिगनिजपतिपाहीं ॥
पारन करि अति प्रेम समेता। सोय गईं सोइ ठौर अचेता ॥

तेहि अवसर हरि स्वप्न देखावा । माँगहु वर जो तव मन भावा ॥
दरस पाय रानी हरषानी । बोली मधुर बचन मृदु बानी ॥
एक पुत्र अस दीजै स्वामी । सार्व भौम तव पद अनुगामी ॥
कर्म निष्ठ अरु ज्ञान प्रवीना । तव पद प्रीति सदा लवलीना ॥
सुनि अस बिनय बिष्णु भगवाना । इक फल दै भे अन्तरध्याना ॥
पावत ही फल जागीं रानी । स्वप्न कथा पति पाहिं बखानी ॥
पुनि प्रसन्न मन सो फल खायो । कुल वर्धक सुत गर्भहिं आयो ॥

दोहा

विष्णु परायण भक्त हरि, शुभ लच्छण सम्पन्न ।
चक्राङ्कित सुत श्रेष्ठ भो, रानी सों उत्पन्न ॥ ७

चौपाई

पुत्रहिं देखि भूप सुख पायो । प्रमुदित जात कर्म करवायो ॥
बोलि पुरोहित बिबुध प्रवीना । नाम करन बरहें दिन कीना ॥
अंबरीष राखे तेहि नामा । जानि सुलच्छन शुभ गुनधामा ॥
कछुक काल सब सुख अवगाहीं । पिता गयेउ तब सुरपुर काहीं ॥
राज तिलक तब मुनिगन कीन्हा । बिप्रन्ह दान नृपति बहु दीन्हा ॥
मंत्रिन्ह राज सौंपि नृप दीन्हा । तपहित काननगवनसो कीन्हा ॥
तहाँ उग्र तप कीन्ह भुवाला । सम्वत सहस मंत्र जपि माला ॥
अष्टाच्छर मंत्रहिं नित जपेऊ । ध्यान समाधि करत सो तपेऊ ॥
शंख चक्र पीताम्बर धारी । गरुड़ चढ़े आये दनुजारी ॥
इन्द्र रूप धरि दर्शन दीन्हा । गरुड़हिं ऐरावत इव कीन्हा ॥

दोहा

इन्द्र रूप धारी हरी, बोले नृपति समीप ।
हौं सुरपति वर देन को, आयेउँ निकट महीप ॥ ८

चौपाई

कौन वस्तु देवहुँ तुम काहीं । रच्छा हित आयौं तव पाहीं ॥
बोले मधुर मनोहर बानी । तुम्हरै हेत न मैं तप ठानी ॥
राउरदीन कछुक नहिं चहऊँ । नहिं वर इच्छुक तुम सन अहऊँ ॥
नारायण स्वामी हैं मेरे । गमन कीजिये आप सबेरे ॥
तब श्री विष्णु बिहँसि निज रूपा । प्रगटत भये चतुर्भुज रूपा ॥
शंख सुचक्र गदा धनुधारे । गरुड़ारूढ़ श्याम छबिवारे ॥
सुर विद्याधर स्तुति करहीं । मुनिगण निरखिमोदमनभरहीं ॥
अंबरीष उठि कीन प्रणामा । आज भयो मम पूरन कामा ॥
होहु प्रसन्न जानि जन दीना । हे भगवन मैं सब विधि हीना ॥

घनाक्षरी

आदिदेव भक्तराज बन्दनीय लोकनाथ, आदि हौ अनादि हौ अनन्त रूपवारे हौ । रावरे समान कोउ तीन लोक माहिं नाहिं, व्यापक सकल लोक तीन गुन धारे हौ ॥ पौन हौ कपाली हौ गोविन्द हौ सुरेशहू हौ, शरन अनाथन के जन रख वारे हौ । कोऊ न सहाय मेरो आपके सिवाय आज, दीन जानि करो दया दया के अगारे हौ ॥ १ ॥

दोहा

धन्य धन्य मैं धन्य हौं, मोसम को संसार ॥
अखिल भुवन पति दरस लहि, भये सकल अघछार॥६

चौपाई

श्रीहरि तब बोले हरषाता । मन भाई इच्छा कहु ताता ॥

पुरवहुँ सकल मनोरथ तोरे। नहिं अदेय कछु भक्तन्ह मोरे ॥
भक्त सदा मोहिं परम पियारे। प्रगट भयों वर देन तुम्हारे ॥
हरि के बचन सुनत रस साने। गदगद कंठ भूप हरषाने ॥
कर सम्पुट बोले मृदु बानी। देहु भक्ति निज सारंग पानी ॥
मन बच करम प्रेम पद तोरे। भूलेहु और देव नहिं मोरे ॥
करि हरि भक्त जगत सब काहीं। तब पालहुँ महि नाथ कृपाहीं ॥
यज्ञ होम पूजन करि नाना। तृप्त करौं सुरगन सन्माना ॥
रक्षा करौं भक्तजन केरी। हतौं असुर दल करौं न देरी ॥
एवमस्तु कहि कृपा निधाना। मन वांछित दीन्ह्यो वरदाना ॥

दोहा

तव रक्षा नित जगत महँ, करहि सुदर्शन चक्र।
बार न बाँका करि सकै, जो रिपु हों शत शक्र ॥१०

सोरठा

पायों शम्भु प्रसाद, चक्र सुदर्शन जौन मैं।
करिहि नष्ट अपवाद, ऋषी शाप रुज आदि तव ॥ १

चौपाई

अस कहि अन्तरहित प्रभु भयऊ। मुदितनृपति हरिपदचितदयऊ ॥
तब राजा निजपुर पग धारेउ। पुरबासिन्ह हित सुख संचारेउ ॥
चारिउ बरन स्वकर्म लगायो। भक्तन पालि परम सुखपायो ॥
अश्वमेध मख कीन अनेका। वाजपेय पुनि करि सविवेका ॥
भूमंडल सागर पर्यन्ता। कीन्ह राज नृप वर्ष अनन्ता ॥
गेह गेह हरि मूर्ति विराजहिं। बेदघोषचहुँदिशिछितिछाजहिं ॥
नाम कीरतन घर घर होई। स्वाहा शब्द करत सब कोई ॥

यहि विधि पुण्य कर्म बहुतेरे । राज्य काल नृप होत घनेरे ॥
धान्यपूर्ण महि दुरभिछ्छ खेदा । पाप ताप नहिं नेकु बिभेदा ॥
सुन्दर सुभग सुदर्शन द्वारा । रक्षित रह नृप सह परिवारा ॥

दोहा

पाल्यो पुहुमि समुद्र लगि, हरि चरनन चित लाय ।
जे हर हिय राजत सदा, प्रेम सहित सति भाय ॥११
द्वितिय सर्ग सम्बन्धिनी, कथा भई अब पूरि ।
"तेजभानु" बिरचित कियो, अम्ब चरण धरि धूरि ॥१२

इति श्री अद्भुत रामायणे द्वितीय सर्गः समाप्तः ।



अथ तृतीय सर्गप्रारम्भः

दोहा

नारद पर्वत उभय मुनि, गये विष्णु के धाम ।
रूप सुभग याँचन अरथ, कथा कहौं अभिराम ॥ १३

चौपाई

सुन्दरि सुता श्रीमती नामा । जनमी अम्बरीष नृप धामा ॥
सुन्दर बदन कमल चखवारी । सर्व सुलच्छन शुभ गुनधारी ॥
तेहि अवसर नारद तहँ आये । पर्वत मुनिहिं संग महँ लाये ॥
भूपति तिन कर स्वागत कीन्हा । पाद्य अर्घ दै आसन दीन्हा ॥
नारद देखेउ कन्या जबहीं । लच्छण लखि बिस्मित भे तबहीं ॥
भूपति सन बोलेउ मुनिराया । सुतासुलच्छनि किनयह जाया ॥
देव सुता सम लच्छन वारी । कहौ महीश कथा बिस्तारी ॥
सुनि मुनि बचन कहेउ कर जोरी । सुनहु नाथ यह दुहिता मोरी ॥
इतना सुनि नारद मन माहीं । भये छुब्ध लखि कन्या काहीं ॥

दोहा

पर्वतहू इच्छा कियो, जो नारद मुनि कीन ।
शुभ लच्छनयुत कन्यका, निरखि कला परबीन ॥ १४

चौपाई

तब नारद एकान्त बोलाई । कहेउ नृपति सों निज मन भाई ॥

यह कन्या भूपति मोहिं दीजै । मम इच्छा पूरन अब कीजै ॥
तब पर्वत मुनि नृपहिं बोलाई । निज इच्छा प्रगटयो समुझाई ॥
उभय मुनिन्ह के सुनि नृप बैना । भयो भयातुर रह्यो न चैना ॥
नारद सों कह भूप सुझाई । कीन्ह प्रार्थना दोउ मुनि आई ॥
करौं कौन विधि इच्छा पूरी । इच्छुक दुइ कन्या इक रूरी ॥
सुनहु दोउ मुनि एकसम मोरे । वरहि सुभग कन्या जेहिं भोरे ॥
तेहिं देउँ कन्या हरषाई । सत्य वचन मम सुनुमुनि राई ॥
ह्वै प्रसन्न तब दोउ मुनिराया । कहेउ काल्हि आउब नृप राया ॥
विष्णु लोक नारद तब गयेऊ । करि प्रणाम हरि सों इमि कहेऊ ॥

दोहा

प्रणतपाल एक भक्त तव, अम्बरीष जेहि नाम ।
तासु सुता अति सुन्दरी, शुभ लच्छन गुन धाम ॥ १५

सोरठा

जासु श्रीमती नाम, सुघर सुलोचन कंजसे ।
बसी सो मम उर धाम, पानिग्रहन चाहौं करन ॥ २

चौपाई

पर्वत मुनिहूँ भक्त तुम्हारे । चाहत कन्यहिं बड़तपवारे ॥
पर भूपति यह कह्यो कृपाला । है अधीन कन्या जयमाला ॥
दोउ महँ अधिक रूप जेहि होई । सुता बरै मनवांछित सोई ॥
आपनि सुता देब हम ताहीं । सुनियह बचनचलेउँ प्रभु पाहीं ॥
तेहि कारन प्रभु के ढिग आयों । सकलकथानिजकहिसमुझायों ॥
पर्वत मुख बानर सम कीजै । आपन रूप मोहिं प्रभु दीजै ॥
यह चरित्र नृप तनया जानैं । और लोग सब मुनि मन मानैं ॥

बिहँसि बचन बोले भगवाना । करब सोइ जस तव मन माना ॥
मन प्रसन्न अवधहिं तुम जाहू । चले देव ऋषि करत उछाहू ॥
पर्वत मुनि आये तेहि काला । कहे सकल तब आत्म हवाला ॥
नारद कर मुख बानर करेऊ । इतना ध्यान अवसिप्रभु धरेऊ ॥
नृप तनया बानर मुख देखै । अपर लोग सब मुनि अवरेखै ॥

दोहा

यह सुनि बचन मुनीश के, कहेउ विष्णु भगवान ।
करिहौं वच तव सत्य मैं, अवधहिं करो पयान ॥१६

चौपाई

जो मंत्रणा कीन्ह मोहिं पाहीं । नारद स्रवन परै सो नाहीं ॥
सुनि हरि बचन मानि मुनिराया । तैसेहि करब नाथ जस भाया ॥
पुनि पहुँचे दोउ अवधहिं जाई । भूपति सों निज खबरि जनाई ॥
जानि आगमन दोउ मुनि केरा । भूपति दीन्हेउ सुभग बसेरा ॥
पुनि निज नगर अलंकृत कीन्हा । बन्दनवार बाँधि बहु दीन्हा ॥
ध्वजा पताका बीथिनि माहीं । शोभा देहिं अनेकन ठाहीं ॥
लावा तथा सुमन बिखराये । नीर सुगन्धित मार्ग सिंचाये ॥
दिव्य धूप धूपित करवाये । अवध नगर सब भाँति सजाये ॥
सभा स्वयम्बर पुनि सजवायो । भूप अनेकन न्योति बुलायो ॥
रतन जड़ित खम्भा बनवाये । बिबिध भाँति माला सजवाये ॥

हरि गीतिका छन्द

साजे स्वयम्बर भवन भूपति, दिव्य वस्तु मँगायके ।
गाड़े रतन के स्तम्भ बिच बिच, दीपरासि सजायके ॥
क़ालीन सुन्दर मखमली अरु, रंग रंग बिछायके ।
सब देस देसन के महीपति, मंच बैठे आयके ॥ १

दोहा

सुघर सुलोचनि कन्यका, भूपति लाये साथ ।
सुन्दर भूषण-भूषिता, माला लीन्हें हाथ ॥१७

सोरठा

बनिता बृन्द समेत, सभा मराडपहिं आयके ।
राजत मंच सहेत, जय माला करमें लिये ॥ ३ ॥
आये एकहिं साथ, परबत मुनि नारद तहाँ ।
गावत हरि गुण गाथ, ब्रह्म पुत्र पुलकित तनू ॥ ४ ॥

दोहा

तीन सर्ग पूरन भयो, कृपा कीन जगदम्ब ।
"तेजभानु"वरनन कियो, जगत जननि अवलम्ब॥१८

इति श्री अद्भुत रामायणे तृतीय सर्गः समाप्तः ।



अथ चतुर्थ सर्गप्रारम्भः

दोहा

मध्य स्वयम्बर सों हरी, नृप कन्यहिं चकपानि ।
मुनि दोउ निरखत रहि गये, कहौं कथा सुख दानि ॥ १९

चौपाई

देखि दोउ मुनि कहँ नृपराया । अर्घ पाद्य दै मंच बिठाया ॥
बैठे दोउ मुनिवर बिज्ञानी । प्रमुदित मनलखि सुतासयानी ॥
तब राजा कन्यासों बोले । मृदुल मनोहर बचन अमोले ॥
उभय मुनिन्ह महँ जे तोहि भावै । करि प्रणाम माला पहिरावै ॥
कनक माल कर महँ लै कन्या । सखी समेत चली सो धन्या ॥
रही सकुचि मुनि बदन निहारी । कह्यो भूप का सोचु कुमारी ॥
पिता वचन सुनि श्री मति बोली । अपने मन की आसय खोली ॥
देखौं मुख मर्कट सम दोऊ । जय माला लायक नहिं कोऊ ॥
दोउन मध्य एक वर राजै । नील वर्ण तन तेज बिराजै ॥
अति सुन्दर भूषण बहु भ्राजत । पीत बसन तन में अति राजत ॥

दोहा

दच्छिन पानि पसारि के, बिहँसत मम दिसि देखि ।
ताही ते मन रमि रह्यो, बरिहौं याहि बिसेखि ॥ २०

चौपाई

कन्या बचन सुनत मुनि नारद । बिस्मित बोले वेद विशारद ॥
कह मुनीस हे राजकुमारी । यथा तथ्य कह बात बिचारी ॥
जेहि तू देखत शुभ तनधारी । केतिक भुजा पुरुष सो धारी ॥
तब कन्या बिस्मित ह्वै बोली । बाहु जुगल देखौं चख खोली ॥
राज सुता सन पर्वत कहेऊ । हृदय तासु का देखति अहेऊ ॥
काह पाणि महँ धारन कीने । सत्य कहै तू परम प्रबीने ॥
मंजुल माल हिये बिच राजै । धनुष बाण कर कंजन भ्राजै ॥
बचन सुनत मुनि कीन्ह बिचारा । यह माया धौं कौन प्रसारा ॥
विष्णु रचित माया यह होई । तिन सम छली और नहिं कोई ॥
नाहिंत अस मुख होत न मोरा । आये अवसि इहाँ चित चोरा ॥

दोहा

नारद पर्वत उभय मुनि, या बिधि करत बिचार ।
यामें कारन कौन है, कपि मुख भयो हमार ॥ २१

चौपाई

तब प्रणाम करि मुनिन्ह महीपा । बोले किमि मति मोह समीपा ॥
यदि कन्या कर इच्छुक अहऊ । तौ मुनि शान्त चित्त ह्वै रहऊ ॥
यह सुनिदोउ मुनिनृपसों भाख्यो । नृप तुमहीं कौतुक करि राख्यो ॥
काहे न कहत सुता सन एही । बरै दोउन महँ चाहै जेही ॥
मुनी शाप भय विह्वल राजा । आयसु दीन सुतहिं तेहि काजा ॥
पितु आयसु लहि राजकुमारी । चली वरन जयमाल सुधारी ॥
श्याम रूप पहिले जेहि देखा । पहिरायो तेहि प्रेम बिसेखा ॥
यह चरित्र काहू नहिं जाना । कन्या भइ सो अन्तरधाना ॥
भयो कोलाहल सभा मँझारी । हरी कौन यह राजकुमारी ॥
कन्या लै गो रमा बिहारी । भये दोउ मुनि महादुखारी ॥

दोहा

पूर्व जन्म किय कन्यका, विष्णु तपस्या घोर ।
याते हरिपुर लै गयो, चतुर्भुजी चित चोर ।। २२

सोरठा

सुनि मुनि कीन विचार, एकएक सन कह्यो अस ।
तुमको है धिक्कार, यहि विधि कहि दुःखित भये ।।५।।

चौपाई

दोउ मुनि चले विष्णुपुर काहीं । करत विचार मनहिं मन माहीं ।।
मुनि आवत लखि कह भगवाना । होहु श्रीमती अन्तरध्याना ।।
अन्तर्हित भइ मानि निदेशा । जेहिविधि कीन्हविष्णु आदेशा ।।
करि प्रणाम नारद उचारे । कस तुम हमरे रूप बिगारे ।।
कौने कारण प्रभु यह कीना । सत्य कहौ हे नाथ प्रबीना ।।
तुमहीं निश्चय कन्या लायो । सभा मध्य अपमान करायो ।।
सुनि मुनि बचन धरे कर काना । काह कहत यह ह्वै गुनवाना ।।
काम भाव रत ह्वै मुनि दोऊ । किह्यो काज जस कीन न कोऊ ।।
विष्णु बचन सुनि बोले नारद । कपि मुख ममकियज्ञानविशनद ।।
सुनत बचन उत्तर हरि दयऊ । मम कृत मुख बानर तव भयऊ ।।

दोहा

ज्यहि विधि मुख पर्वत किह्यों, तेहि विधिकीन तुम्हार ।
दोउ प्रार्थना कीन जस, तैसेन कोन विचार ।।२३

चौपाई

निज इच्छा कपि रूप न दीना । जस तुम कह्यो तैसही कीना ।।
भक्त मोर जो इच्छा चहई । मन वांछित फल मोसन लहई ।।

नहिं कछु मोर तोर गुन दोषा । सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोषा ॥
हित तुम्हार कीन्हेउँ मुनि नाथा । सत्य कहौं गहि आयुध हाथा ॥
नारद कहेउ सुनहु असुरारी । दोउ बिच कौन हुतो धनु धारी ॥
जो कन्यहिं लै गयो चुराई । सत्य कहौ जनि करो दुराई ॥
बहुत छली बिचरैं जग माहीं । काहू हरी होय तेहि काहीं ॥
चक्र पाणि चौभुज मम रूपा । हम कस होब तहाँ नररूपा ॥
यह बानी सुनि दोउ मुनि कहेऊ । नहिं अपराध नाथकर रहेऊ ॥
सब अपराध अहै नृप केरा । माया करि जेहि मम मति फेरा ॥

दोहा

अस कहि लौटे भूप ढिग, कह्यो बचन करि कोप ।
भ्रष्ट होय तव बुद्धि नृप, देहुँ शाप प्रन रोप ॥२४॥

चौपाई

हमहिं बोलाय कीन अपमाना । दीन्ह और कहँ कन्यादाना ॥
ताते तमोगुणी तुम होऊ । आत्म ज्ञान भासै नहिं कोऊ ॥
तेहि अवसर प्रगट्यो तम भारी । चला सो भूप विकट विकरारी ॥
विष्णु चक्र प्रगट्यो तेहिकाला । तेहि लखि तम भो भीत विसाला ॥
पुनि पलट्यो सो मुनिन सकासा । व्याकुल भयो चक्र परित्रासा ॥
तेहि पाछे चक्रहु सो धायो । दोउन्ह कहँ लखि मुनि घबरायो ॥
भागत भये विकल मुनि ज्ञानी । कन्या सिद्धि मिली भल जानी ॥
भरमत फिरे दोउ मुनि ज्ञानी । तीनिहुँ लोक चक्र भय मानी ॥
पहुँचे विष्णु लोक हरि पाहीं । रक्षा करो नाथ गहि बाहीं ॥
हे जगपति पुरुषोत्तम स्वामी । वासुदेव हे अन्तरजामी ॥
हृषीकेष हे रमाविहारी । बिपति हरौ यह बेगि हमारी ॥

दिग्पाल छन्द

हे विष्णु कान्त कमला हे संख चक्रधारी,
हे पद्म नाम केसव वैकुंठ के बिहारी ।
हे चीर सिन्धु शायी द्विज धेनु दुःख हारी,
हे दीन बन्धु माधव रक्षा करो हमारी ॥

दोहा

कीन अनुग्रह भक्त पैं, है प्रसन्न भगवन्त ।
वारन करि तब चक्र को, अभय कीनदोउ सन्त २५॥

चौपाई

यहिविधि हितमुनि अरु नृपकाहीं । कीन विचार समुझि मनमाहीं ॥
निकट बोलाइ मुनिन सों बोले । करि प्रसन्न बानी अनमोले ॥
छमा करो मों पै मुनिराया । चक्र तुम्हैं बहुविधि भरमाया ॥
छमा सील साधू गुन एहा । ताते कृपा करहु करि नेहा ॥
माया जानि रमापति केरी । दीन साप हरि कहँ तेहि बेरी ॥
मनुज रूप धरि प्रगटत भयऊ । छल करि श्रीमति हरि लै गयऊ ॥
ताते अंबरीष कुल माहीं । दशरथ पुत्र होउ युग बाहीं ॥
धरनि पुत्रिका श्रीमति होई । पोषन करै जनक नृप सोई ॥
हरन कीन जस राजकुमारी । निशिचर हरैं तुम्हारिउ नारी ॥
नारि हेतु विह्वल हम दोऊ । तुमहूँ विकल नारि हित होऊ ॥

दोहा

जेहि विधि दीन्हेउ दुख हमैं, छलिकै राजकुमारि ।
सोइ विधि भोगो धरनि महँ, कानन फिरो पुकारि ६२॥

चौपाई

मुनिन शाप करि अंगीकारा । बोले हरि इमि वचन उदारा ॥

अम्बरीष कुल दशरथ नामा । नृप ह्वैहै बल अरु गुणधामा ॥
तेहिकर ज्येष्ठ पुत्र मैं होई । राम नाम तहँ कह सब कोई ॥
दच्छिन भुजा भरत मम भाई । वाम शत्रुहन नाम कहाई ॥
शेष स्वयं भ्राता तहँ मेरो । लछिमन नाम कहहिं तेहि केरो ॥
ऋषि कर शाप अन्यथा नाहीं । होइहि सत्य अवसि जग माहीं ॥
जाहु चक्र तुम अत्र नृप धामा । इहाँ तुम्हार नाहिं कछु कामा ॥
जब मैं अवध लेउँ अवतारा । तब तुम आयहु करि निरधारा ॥
यहि अवसर छोड़हु मुनि काहीं । अभय करो निज आस्रम जाहीं ॥
चक्र गयो नृप की रखवारी । तुरतहि मिटेउ महा तम भारी ॥

दोहा

शाप सीस निज धरि लियो, भक्तहिं लीन उबारि ।
ऐसे दीन दयाल को, भज तू "तेज" विचारि २७॥

चौपाई

भय से मुक्त भये दोउ मुनिवर । कीन प्रनाम युगल कर श्रीधर ॥
विदा भये हरि सों मुनि सोई । कह्यो परस्पर सोकित होई ॥
जब लौं जीवन रहै हमारा । तब लौं ग्रहनन करि हौं दारा ॥
यहि विधि दुहुँ मुनि हिय प्रन कीन्हा । मौन बरत धारन करि लीन्हा ॥
विधिवत अम्बरीष महिपाला । प्रजहिं पालि सब कीन निहाला ॥
सेवक बन्धु सहित परिवारा । बिष्णु लोक कहँ नृप पगुधारा ॥
मान हेतु मुनि अरु नृप राई । पाल्यो बचन राम रघुराई ॥
नृप कुल मध्य राम अवतारा । भयो भूप दसरथ आगारा ॥
साप तिमिर बस श्री भगवाना । छादित रहे महामति माना ॥
किन्तु कार्यवस श्री भगवाना । होत अस्मरन आतम ज्ञाना ॥
सर्व अर्थ परिपूरन स्वामी । मनहुँ अकिंचन अन्तर्यामी ॥
भक्त हेतु असि प्रभुगति होई । पारब्रह्म कृत माया सोई ॥

माया बस नर तन हरि धरेऊ । ज्ञानवान जनि यहि भ्रम परेऊ ॥
यहि बिधि जन्म कथा रघुराई । अम्बरीष महिमा अधिकाई ॥
जेहि बिधि माया बस हरि ठयऊ । सो सब चरित कहत मुनि भयऊ
माया वस जस हरि अवतारा । सो सब कहेउँ सहित विस्तारा ॥

दोहा

पढ़ै सुनै चित लायके, यह चरित्र जो कोय ।
अन्त काल हरि ढिग बसै, यम यातना न होय ॥२८
चौथ सर्ग पूरन भयो, अम्बा के परसाद ।
"तेजभानु" वरनन कियो, त्यागि सबै परमाद ॥२९

इति चतुर्थसर्गः समाप्तः



अथ पञ्चम सर्ग आरम्भः

दोहा

कौसिक मालव द्विजन्ह कर, बरनौं श्रीहरि भक्ति ।
तृप्त रहत करि कीरतन, हरि पद दृढ़ अनुरक्ति ॥ ३०

चौपाई

भरद्वाज मुनि सुनहु सुबानी । सीता उतपति कहौं-बखानी ॥
त्रेतायुग एक कौशिक नामा । हरि पद पूजक द्विज गुणधामा ॥
खात पियत सोवत प्रभु ध्याना । गावत निसिवासर गुनगाना ॥
बिष्णु क्षेत्र जहँ तहँ सोजावै । ताल मूर्च्छना दै करि गावै ॥
भक्ति भाव सों अन्न जो पावै । ताहि समर्पि हरिहिं पुनि खावै ॥
यहि प्रकार बीतत दिन राती । पुलकित गावत हरि गुन पाँती ॥
गावत देखैं जो यहि भाँती । देइ प्रसन्न अन्न दिन राती ॥
विप्र एक पद्माक्ष प्रधाना । देत कौसिकहिं अन्न महाना ॥
कौसिक पाय अन्न दिन राती । पालत कुटुम सबै बहु भाँती ॥
ह्वै प्रसन्न हरि रस में माता । तत्पर रहत रामगुन ब्राता ॥

दोहा

सुनै जो कौशिक गान को, प्रेम सहित नित नेम ।
तन मन पुलकित होत अति, लगै विष्णु महँ प्रेम ॥ ३१

कौसिक शिष्य सप्त तहँ आये । कछुक काल बीते हरषाये ॥
ब्राह्मन क्षत्री वैश्य कुलीना । ज्ञानवान हरि भक्ति प्रवीना ॥

सिष्यन्‌युत कौशिक दै भिच्छा। द्विज पञ्चाशत्‌ भरत हरि इच्छा ॥
हरि मन्दिर तहँ एक विशाला। कौसिक रहत तहाँ सब काला ॥
राम नाम गावत भलि भाँती। कौसिक सिष्य सहित दिन राती॥
मालव नामक वैद्य द्विजाती। बसि तहँ भजन करत दिन राती॥
नारायन मन्दिर सब काला। बारत दीपक विप्र बिशाला॥
नाम मालती सती सुनारी। करि परितुष्ट रहति पति प्यारी ॥
हरि मन्दिर गोमय सोंलिम्पति। सुनत रामगुन रह द्विज दम्पति ॥
आये तहाँ द्वारका वासी। पंचाशत द्विज हरि अभ्यासी ॥
श्रीहरिगान करन के हेता। कौसिक हित साधक सुठि चेता ॥

दोहा

सुन्यो गान कौसिक जबहिं, मुग्ध भयो तत्काल ।
गीत विशारद सकल द्विज, निपुण भाव लय ताल ॥ ३२
इनहो द्वारा प्रगट भों, कौसिक गान जहान ।
कलिङ्ग राज तब कीर्ति सुनि, बोलवायो करिमान ॥ ३३

चौपाई

सभा मध्य आये जब राजा। कौशिक हू गे सहित समाजा ॥
नृप कौशिकहि कह्यो यह बानी। गान करो मम कीर्त्ति बखानी ॥
भूसुर द्वारवती के वासी। कीरति कहहि मोरि गुणरासी ॥
वचन प्रबोधक कौशिक बोले। सुनहु महीप कहौं मैं खोले ॥
जिह्वासन निकसत नहिं बानी। कहौं कवन विधि कीर्ति बखानी ॥
दूसर गान न हरि तजि करऊँ। राम भक्ति निसि दिन अनुसरऊँ ॥
इन्द्रहु कीर्ति कबहुँ नहिं कहऊँ। सदा राम गुन गावत रहऊँ ॥
गौतमादि बोले सब मुनिवर। कौसिक कथन सत्य सुनुनृपवर ॥
तैसेहि श्रीकर बोले भूपा। अनुमोदन मैं करौं अनूपा ॥
सुनौ स्रवन नहिं दूसर गाना। हरि तजि धरौं और नहिं ध्याना ॥

दोहा

कीरति ताते सुनैं नहिं, कबहुँ तुम्हारि महीप ।
सृष्टि माहि जबलौं आहैं रविशशि और पदीप ॥ ३४

चौपाई

राजा सुनि यह अप्रिय बानी । रुष्ट भयो अहि इव अभिमानी ॥
बोले पुनि निज किंकर काहीं । मम कीरति गावहु सब ठाहीं ॥
ये द्विज हरि कीरति जस सुनहीं । तस मम कीरति किमि नहिं गुनहीं ॥
जहँ तहँ जायकै अनुचर लोगा । करहिं मुदित गान सुयोगा ॥
गान सुनत सब महिसुर लोगा । मूदेउ स्रवन भयो अति सोगा ॥
जान्यो जबहीं यह सब भूपति । कील स्रवन महँ मेल्यो द्विजप्रति ॥
कौशिकादि ब्राह्मन सब जेते । आशय जानि भूप कर तेते ॥
कारन कौन भूप हठ ठाना । आपन कीर्ति करन भल जाना ॥
बिप्र वृन्द काटेउ निज रसना । करि मन ही मन नृपभयकसना ॥
ताते कोप महीपति कीन्हा । देश निकासन आज्ञा दीन्हा ॥

दोहा

दूत लीन सब छीन धन, पाय रजायसु भूप ।
उत्तर दिसि द्विज गमन किय, ध्यान करत हरि रूप ॥ ३५

चौपाई

उत्तर दिसि जब पहुँचे जाई । बेला मरन तबै नियराई ॥
द्विज गन लहे काल के धर्मा । तिनहिं देखि यम सोचेउ मर्मा ॥
का कर्तव्य इनहिं प्रति मोरा । विस्मित भयो न बोलेउ थोरा ॥
सुराधिपन सन तब बिधि बोले । सब द्विज अहैं भक्त अनमोले ॥
गान योग सों श्री हरि देवा । करैं मुदित मन सब मिलि सेवा ॥
लावहु बिप्रन तुम मम पासा । पावहिं ते फल बिनहिं प्रयासा ॥
लोकपाल सन जब अस कहेऊ । लै तिन नाम पुकारत भयेऊ ॥

सुरगन सह सब द्विजगन चलेऊ। अर्ध मूहूर्त ब्रह्मपुर लहेऊ ॥
कौसिक आदि बिलोकि विधाता। स्वागत कीन भुवन के ताता ॥
भयो कोलाहल तब तेहि काला। बिधि कृत गौरव लखिसुरपाला ॥

दोहा

कौशिकादि कहँ साथ लै, ब्रह्मा गे हरि धाम।
शंख चक्र युत देखि हरि, सादर कीन प्रनाम ॥ ३६

चौपाई

बिष्णु लोक महँ थित हरि देवा। करत सबै सुठि भाव सुसेवा ॥
ज्ञानेश्वर अरु सिद्ध परायन। चारि भुजा युत मनहुँ नरायन ॥
शंख गदादिक संयुत रहहीं। दीप्तिमान अति सोभित अहहीं ॥
सहस अठासी जो मनगामी। सिद्ध जनन सों सेवित स्वामी ॥
मैं नारद सनकादि मुनीसा। अपर ऋषी गण नावहिं सीसा ॥
सुरवनिता सब ओर बिराजैं। सेवक सेव्यमान तहँ राजैं ॥
जेहि बिमान भद्रासन राजै। तेहि उपमा केहि बिधि कबि साजै ॥
चारि सहस्र कोस लम्बाई। तै सेहि पुनि मानहु चौड़ाई ॥
मनि मानिक विमान अति राजित। तेहि बिचभद्र पीठ सो भ्राजित ॥
तापै श्रीहरि सोभित अहहीं। लोक पाल कारज लखि रहही ॥

दोहा

तेहि औसर बिधि प्रकट भे, कौसिकादि मुनि साथ।
करिके सो अभिवादनहिं, लगे करन गुन गाथ ॥ ३७

घनाक्षरी

आदि देव बासुदेव प्रनवहुँ बार बार,
माधौ मधुसूदन जू मोपै दया कीजिये ;
हृषीकेस राधिकेस ये हो ब्रजराज राज,
भक्त निज जानि मोहिं भक्ति निज दीजिये।

द्वार द्वार फिरौं नाहिं आपही को द्वार चहौं,
त्याग दीन सबै नाथ मोहिं पै पतीजिये;
कीजिये न देर पद्मनाभ अब मेरी बेर, 'तेज'–
पै कृपाल ह्वै सरन राखि लीजिये ॥ ३५ ॥

चौपाई

ऋषि गन देखि विष्णु तब बोले । कौशिक बचन पाहि अनमोले ॥
सुनि संबोधन श्री हरि केरा । जय जय घोष भयो बहुतेरा ॥
विश्व रूप हरि बिधिसन कहेऊ । यह वृत्तान्त जस भयऊ ॥
जे द्विज देव द्वारकावासी । कौसिक हित रत रहेउ सुपासी ॥
गान तत्व कोविद महिदेवा । कीरति सुनहिं करहिं नित सेवा ॥
साध्य देव ते होहिं बिधाता । सदा समीप रहैं मम ताता ॥
पुनि कौसिक सों कह भगवाना । दिग्बल होहु सशिष मतिमाना ॥
गन स्वामी ह्वै तुम मम पासा । रहौ जहाँ मैं करौं निवासा ॥
बधू सहित मालव प्रति कहेहू । दिव्य रूप अनुचर ह्वै रहेहू ॥
यावत्काल रहौं निज धामा । तावत्काल विहरु सुख कामा ॥

दोहा

बोले तब पद्माक्ष सन, धनपति होहु सुजान ।
यथाकाम विचरन करो, लागि रहौ मम ध्यान ३६॥

चौपाई

विधि सों बोले श्री भगवाना । कौशिक गनपति होंहिं सुजाना ॥
सब गन अस्तुति करि मन भावैं । मम सालोक्य मुक्ति ए पावैं ॥
महायशस्वी ये सब द्विजवर । सदा रहे मम भक्ति सुतत्पर ॥
औरन्ह केरि सुनी नहिं कीरति । सदा विलोके उर मम मूरति ॥
लहहिं देवतापन ए ताते । सन्निधि रहहिं सदा गुन गाते ॥

वधू सहित मालव मम कीरति । सुनत सदा पुनि पूजत मूरति ॥
ताते प्राप्त भयो मम लोका । शुद्ध सनातन परम विशोका ॥
महाभाग पश्चात्त महीसुर । धनपति पद पायो सो मम पुर ॥
विश्व वन्द्य बोले यह बानी । श्रवन सुखद सुन्दर रस सानी ॥
कनक सिंहासन बैठे देवा । कर सरोज परसे द्विज सेवा ॥

दोहा

सकल महीसुर मुदित भे, परसि पानि भगवन्त ।
राजत भे बैकुण्ठ महँ, लहि सन्तोष अनन्त ३९ ॥
पंचम सर्ग सुपूर्न भो, भुवनेश्वरि परताप ।
"तेजभानु" बरनन कियो, करत नाम को जाप ॥४०

इति पञ्चम सर्गः समाप्तः ॥



अथ षष्ठ सर्ग प्रारम्भः

दोहा

षष्ठ सर्ग बरनन करूँ, कथा सुगम हरि मित्र ।
जामें कीर्तन भूरि है, सुनिये परम पवित्र ॥ ४१

चौपाई

महा महोत्सव कीन अरम्भा । कौसिक प्रीति हेत तजि दम्भा ॥
वीना वादन गुन विधि आगर । विद्या बाद्य विचत्तण नागर ॥
विष्णु पत्नि आई तेहि काला । गान विचित्र करहिं संगबाला ॥
दासी कोटि लिये कर बेंता । सेवहिं स्वामिनि प्रीति समेता ॥
सुर मुनि सहित प्रजापति केरा । देखि समागम अतिहिं घनेरा ॥
लिये हाथ महँ रमा भुशुण्डी । रुष्ट भईं तह दारिद खंडी ॥
श्री रुख पाय चेरि तेहि काला । सुर मुनि सबन निकास्यो शाला ॥
ब्रह्मादिक सब बाहर कीना । जाहु दूरि बैठहु कह दीना ॥
तब ब्रह्मादि कहन अस लागे । युक्तहि है जो भा प्रभु आगे ॥
विगत क्रोध सब सुर मुनि भयऊ । जोरि पाणि निज मस्तक नयऊ ॥

दोहा

तेहि औसर कमला पती, तुंबुरु लियो बुलाय ।
मान सहित आसन दियो, लियो समीप बिठाय ॥ ४२

चौपाई

बैठि सुआसन गावन जबहीं । बीना स्वर विस्तारेउ तबहीं ॥
ताल मूर्छना विविध प्रकारा । राग अनेक सुगान प्रचारा ॥

कौशिक प्रीति हेत भगवाना । सन्मानेउ गायकहिं सुजाना ॥
नाना भूषण वसन अनेका । दीन रमापति सहित विवेका ॥
हर्षित ह्वै तुंबुरु निज धामा । कीन पयान त्यागि हरि ठामा ॥
तथा प्रजापति आदिक देवा । कीन प्रणाम जानि हरि भेवा ॥
जय जय करत चले निजलोका । पहुँचे मुदित देव निज ओका[१] ॥
तुंबुरु आदर नारद पेषा । मन महँ भयो विषाद विशेषा ॥
शोकाकुल ह्वै मूर्छित भयऊ । यह विचार तब मन महँ ठयऊ ॥
दासिन द्वारा भो अपमाना । कीन रमा नहिं यह भल जाना ॥

दोहा

लक्ष्मी राक्षस भाव करि, कीन मोर अपकार ।
ताते दैहौं साप तेहि, कोपन वृथा हमार ॥ ४३ ॥
उपजै राक्षस गर्भ ते, बचन मोर यह तथ्य ।
निज कृत कर्महि भोग करि पावै दुःख अकथ्य ॥ ४४

चौपाई

जस गति तासु सेवकिन कीना । बेंत[२] मारि बाहर करि दीना ॥
तिमिलै यातुधानि महि माहीं । ताहि सतावहि संसय नाहीं ॥
नारद साप सुनत त्रयलोका । कम्पित भयो महा भय सोका ॥
हाहाकार करन सब लागे । सकल सुरासुर धीरज त्यागे ॥
सुनि बिलाप सब देवन केरा । नारद क्रोध तबहिं निरबेरा ॥
निज कृत करम सोचि मुनिराया । धिक्‌धिक् करि पुनिपुनि पछिताया
सुनि ऋषि राज साप हरि घोरा । रमा सहित तब आय नहोरा[३] ॥
नम्र बचन कहि नारद तोषा[४] । जोरि पानि बहु बिधि परिपोषा[५] ॥
जो कछु कह्यो सत्य सब सोई । बचन अन्यथा तब नहिं होई ॥

१—मुकाम । २—चाबुक की मार । ३—बिनती । ४—खुश किया ।
५—पुष्ट किया ।

बार बार बिनवौं मुनि राया । मो पै नाथ करिय अब दाया ।।
अब करि कृपा कीजिये स्वामी । ऋषि सोमित उपजौं महि गामी ।।

दोहा

कृपा कीजिये नाथ अब, जेहि प्रकार भल होय ।
ऋषि शोणित उपजौ मही, करिय यतन प्रभु सोय ।।४५

चौपाई

मुनिन्ह रक्त घट संचित होवे । रहै दुरायो नहिं कोउ जोवे ।।
रजनीचरी पियै यह जोई । तासु गरभ मम उत्पति होई ।।
मुनिसन बिनय कीन बहु रूपा । बचन मोर पुरवहु मुनि भूपा ।।
लक्ष्मी मुख सुनि या विधि बानी । कहि तथास्तु मुनिवर सन्मानी ।।
तब नारायण मुनिसन बोले । बचन हमार सुनहु अनमोले ।।
गान कीरतन रीझौं मैं जस । जप तप योग न भावै मोहिं तस ।।
प्रेम सहित जो कीर्तन कहई । सो सायुज्य मुक्ति नर लहई ।।
यामे कौशिक विप्र प्रमाना । जो पायो मम लोक महाना ।।
मोर नाम गावत यहि भाँती । ताल मूर्छनायुत दिन राती ।।
सो प्राणी अति प्रिय मोहि लागै । कर्म शुभाशुभ तेहिकर भागै ।।

दोहा

तुंबुरु गान प्रभाव ते, मोहिं प्रिय अतिशय जान ।
तैसेहि गान विधान करि, लहहु तुमहुँ सनमान ।।४६

चौपाई

गान विषय महँ जो मति तेरी । करु उलूक सन प्रीति घनेरी ।।
मानस उत्तर गिरि सो रहई । "गान बन्धु" विख्यात जो अहई ।।
करहु पयान निकट तुम ताके । गायक बनहु जाय ढिग वाके ।।
प्रभु आयसु लहि तव मुनिराया । गान बंधु के निकट सिधाया ।।

किन्नर यक्ष और गन्धर्वा। नाक नटी राजत तहँ सर्वा ॥
गान बन्धु तिन मध्य विराजैं। देत गान शिक्षा सो भ्राजैं ॥
गान चतुर खग गन सब भयऊ। गान बन्धु उपदेशहिं लहेऊ ॥
मधुर कण्ठ के खग आसीना। गान उलूक करत लव लीना ॥
आवत दीख नारदहिं जबहीं। कीन प्रणाम मुदित मन तबहीं ॥
उठिकर स्वागत मुनिकर कीन्हा। अर्घ पाद्य, आसन शुभ दीन्हा ॥

दोहा

शोभायुत नारद मुनी, आयहु तुम केहि काज।
देहु रजायसु मोहिं प्रभु, सपदि करौं मैं आज ॥४७

चौपाई

बुद्धि विशारद नारद सुनेऊ। उलकेंद्र सन बोलत भयेऊ ॥
कथा हमारि सुनहु गुननागर। करहु कृपा सुनि बुद्धि उजागर ॥
मम अपकार भयो हरिधामा। तुंबुरु पायो मान निकामा ॥
तुंबुरु कर आवाहन कीन्हा। सुनि तेहि गान प्रबोधन दीन्हा ॥
ब्रह्मादिक हम मुनि सब जेते। पद च्युत भये सभा से ते ते ॥
कौशिक आदि रहे आसीना। गान प्रभाव हरिहिं लवलीना ॥
गाणपँत्य पदवी तिन पायो। हरि आराधन करि यश छायो ॥
जप तप हवन पठन जो कीन्हा। नाना मुनिन्ह ज्ञान जो दीन्हा ॥
सो सब तुलहिं न षोडश अंशा। श्रीहरि गान विहँग अवतंसा ॥
पश्चात्ताप मोर हरि देखी। कीन्हों कृपा कृपालु विशेषी ॥

दोहा

तव इच्छा जो गान की, जाहु समीप उलूक।
गानाचार्य सो तोहिं पै, करिहै अमित सलूक ॥४८

१—शोभित। २—शीघ्र। ३—मनमाना, खूब। ४—गणों की अफ़सरी का दर्जा।

चौपाई

हरि आज्ञा मैं पालन कीना । तुम्हरे निकट तुरत चलि दीना ।।
तुम अविनाशी ज्ञान महाना । किंकर जानि देहु मोहिं ज्ञाना ।।
गान बन्धु बोले नारद सन । पूर्व वृतान्त सुनहु मम दै मन ।।
अति अद्भुत सब पाप निवारक । कथा समस्त सबहिं सुख कारक ।।
धर्मनिष्ठ राजा मैं रहेऊँ । नहि अधर्म पथ भूलेहु गहेऊँ ।।
विविध दान महिसुर कहँ दीन्हा । भूशासन विधिवत पुनि कीन्हा ।।
कीन निवारन हरि गुन गाना । दूतन्ह प्रति निदेश[1] यह ठाना ।।
केशव गान करै जो कोई । प्रानदण्ड तेहि तुरतै होई ।।
विष्णु स्तुति वेदन सन होई । तेहिते मैं बरजौं जिय जोई ।।
गान करैं नहिं द्विज श्रुतिधारी । बेद गान के ते अधिकारी ।।

दोहा

गान मोर महिला करैं, जस गावैं सर्वत्र ।
मम आज्ञा पालन करैं, मागध सूत एकत्र ।।४६

चौपाई

यहि प्रकार आज्ञा जब कीना । महि पालिबे माहिं चितदीना ।।
मम समीप इक द्विज रह ज्ञानी । बुध हरि मित्र नाम हरिमानी ।।
रहित विकार भक्त भगवाना । निसिदिन पूजत करि हरिध्याना ।।
भूसुर[2] जाय नदी तट अर्चा । करत हरिहिं विधिवत शुभचर्चा ।।
शास्त्र विहित सब वस्तु चढ़ावहिं । नारायणहिं सदा मन लावहिं ।।
लययुत ताल बजावहिं बीना । नारायण गुन गान प्रवीना ।।
प्रगट्यो प्रेम महा मन माहीं । तन मन सुधि सब गयो पराहीं ।।
ऐसे द्विज कर मोरे दासन । पूजा द्रव्यनि कीन विनासन ।।

१—आज्ञा । २—ब्रह्मन ।

द्विज कहँ पकरि दूतगन लीना। लाय हमारे सम्मुख कीना ॥
मैं तब भूसुर प्रति दुर्बादा। कहत हरेउँ धन कुल मरजादा ॥

दोहा

मैं पुनि अपने देश सों, विप्रहिं दीन निकारि।
लागेउ विचरन मान्यवर, जपत नाम असुरारि ॥५०

चौपाई

निज इच्छा नारायन मूरति। कीन्हेउँ दरसन लायों सूरति ॥
बहुत काल बीते मुनि नाहा। यमपुर गयउँ लहेउँ दुख दाहा ॥
पायों देह उलूक विसाला। कोउ नहिं देइ भच्य तेहि काला ॥
भरमत रह्यों सदा तेहि भेसा। भच्य बिना बहु लह्यों कलेसा ॥
आतुर ह्वै तब यम सन कहेऊँ। स्वामिन छुधित दुःखबड़ लहेऊँ ॥
दुर्गति अहै मोरि यहि भाँती। कल नहिं पावौं दिन अरु राती ॥
कौन पाप कीन्हेउँ मैं भारी। जेहि कारन दुर्गति यह सारी ॥
धरमराज बोले तेहि काला। पाप तुम्हार अमित बिकराला ॥
बिष्णु भक्त हरि मित्र अनूपा। कीन दुष्टता तेहि सन भूपा ॥
ताते छुधा[1] सतावति भूरी। बोले नृप सों यम नयसूरी[2] ॥
भये नष्ट तव मख सब दाना। कीन्हेउ जो तुम द्विज अपमाना ॥
द्विज हरि मित्र करत हरि अर्चा। निसिवासर नहिं दूसरि चर्चा ॥

दोहा

ताहि बुलाय भूप तुम, लीन सकल धन छीन।
ताते तुम निसिदिन रहत, छुधित भूरि मन खीन॥५१
बासुदेव उपहार सब, दूतन दीन बहाय।
पाय रजायसु भूप तव, यह सब कीन उपाय ॥५२

१—अधिक। २—नीति के पंडित।

चौपाई

हरि कीर्तन वारन तुम कीन्हा । तेहि कारन दारुन दुख लीन्हा ॥
स्वर्गादिक सुख भोग महाना । नास भये तेहि हेतु सुजाना ॥
भूधर कोटर महँ तुम जाहू । नोचि देह आपनि तुम खाहू ॥
मन्वन्तर इक करहु निवासा । घोर नरक महँ लेत उसाँसा ॥
तदनन्तर होइहौ गृहंपाला । गृह गृह फिरिहौ होत विहाला ॥
तत्पश्चात मनुज वपु भूपा । लहिहौ अरु सुख अमित अनूपा ॥
यम इमि कहि भे अन्तरध्याना । पहुँचे जाय निजै अस्थाना ॥
नारद सुनहु सोइ मैं राऊ । भयों उलूक विप्र दुरभाऊ ॥
मानस पर्वत कोटर वासा । मृतक शरीर मिलेउ तेहि पासा ॥
खाय खाय सोइ मृतक शरीरा । मेटत रह्यों पेट की पीरा ॥

दोहा

तेहि छन द्विज हरि मित्र को, देखेउँ चढ़े विमान ।
नाक नटी बन्दन करत, हरिजन करत सुमान ॥ ५३

चौपाई

देखि मोहिं मधि मारग माहीं । आई दया मित्र हरि काहीं ॥
निकट उलूक देखि भुवनेसा । मृतक सरीर परा तेहि देसा ॥
दया लागि पूछेउ महिदेवा । किमि भुवनेस देह कहु भेवा ॥
कहु उलूक केहि कारन एहा । भच्छन करत अतीव सनेहा ॥
सुनि हरि मित्र केरि प्रिय बानी । बोले तब उलूक सनमानी ॥
पूर्व जन्म वृत्तान्त सो भाषेउँ । तुम्हरे प्रति दुराव मैं राखेउँ ॥
तेहि कारन फल पायउँ एहा । मन्वन्तर खैहों यह देहा ॥
पुनि मैं कूकुर होइहौं जाई । तदनन्तर मानुष तनु पाई ॥

१—कूकर ।

वचन हमार सुनेउ जब द्विजवर । ह्वै प्रसन्न बोले वच सुखकर ॥
मोहिं सन अब तुम सुनहु उलूका । पहिले जो तुम कीन्हेउ चूका ॥

दोहा

छमा कीन अनजान कर, भयो जो तुम सन पाप ।
शव यह अन्तर धान हो, लहहि श्वयोनिन[1] आप ॥५४

चौपाई

गान योग पै हौ खगनाहा । मम प्रसाद होइहौ गुनगाहा ॥
विष्णु गान रत रसना होवै । गान योग करि मल सब खोवै ॥
देव अप्सरा किन्नर गन के । होवहु गानाचार्य सबन के ॥
विविध प्रकार भोज्य तुम पैहौ । कछुक काल बीते सुख लैहौ ॥
जब हरि मित्र कह्यो यह बानी । विष्णु दूत सन्मुख सुख सानी ॥
नरक वस्तु तुरतै भइ दूरी । नारद सुनहु कथा यह रूरी ॥
विष्णु भक्त कर सहज स्वभाऊ । पाछिल बैर न लावैं काऊ ॥
दुःख निवारन करत दुखी के । वचन जोबोलतमनहुँ अमी के ॥
यहि प्रकार कहिके द्विजराया । हरिके लोक शीघ्र तब धाया ॥
तुमसों सकल कथा मैं गावा । गानाचार्य भयों जेहि भावा ॥

दोहा

मैं हरि मित्र प्रसाद सों, लहिहौं श्री भगवान ।
कथा पूर्व की कथन किय, नारद सुनहु सुजान ॥५५
चित दै जो जन सुनहि यह, पैहैं ते मन काम ।
सुत वितसों पूरन रहै, अन्त बसैं हरिधाम ॥५६
छठाँ सर्ग पूरन भयो, जननी के परसाद ।
"तेजभानु" बरनन कियो, ग्रन्थ सहित मरजाद ॥५७

1—कूकर योनि निवास ।

इति श्री अद्भुत रामायणे, षष्ठ सर्ग समाप्तः ।

अथ सप्तम सर्ग प्रारम्भः

घनाक्षरी

पावतै शरण जन लहत अनन्द घन, ताप तीन धूरि होत चरण गहनते। दृष्टि में प्रकाश होत मल सब नाश होत, भक्ति को विकाश होत साधु सन्त जनते। देह गेह भूलि जात मान को न भान होत, सब में समान होत पाय ब्रह्मज्ञान ते। ऐसी मातु चण्डिका को बार बार शीश नाय "तेजभानु" चाह और मनते न आनते ॥ ५ ॥

चौपाई

गान बन्धु नारद सन कहहीं। विद्याधर किन्नर जे अहहीं ॥
मोरे निकट सदा ते आवहिं। विद्या गान सुसिच्छा पावहिं ॥
विद्या गान न तप से आवै। विनु स्रम किये न कोई पावै ॥
सीखहु गान कला मम पाहीं। परम चतुर होइहौ तेहि माहीं ॥
तब नारद मुनि कीन प्रनामा। गान करन लागे हरि नामा ॥
मुनिवर कीन्हेउ हरिहिं प्रनामा। मानि उलूक वचन अभिरामा ॥
क्रम सो सिच्छा पायो गाना। कछुक काल महँ भयो सुजाना ॥
गान बन्धु बोले नारद सन। लज्जा त्यागहुँ इनसोंमुनि जन ॥

तिय संभोग[1] छींक अरु गीता । धन व्यवहार बात अरु चीता ॥
लेन देन आदिक व्यवहारे । इन महँ लज्जा करिय न प्यारे ॥
तेहि अस्थान न गावै कोई । ढका जो चारिहुँ ओरते होई ॥
हाथ समेटै अरु फैलावै । जीभ मीच कर मुख को बावै ॥

दोहा

पंडित जन इमि कहत हैं, यहि प्रकार नहिं गाव ।
गीत सास्त्र बरनित यथा, तुमहिं बतावौं भाव ॥५८

चौपाई

देखत निज अंगहिं मुनिराई । भुजा दृष्टि पुनि ऊर्ध्व उठाई ॥
भय अरु हास कम्प अथ सोगा । छुधा पिपासा आदि विसोगा ॥
जब असि दशा न गाइय कबहूँ । सुरपति सरिस मिलै नृप जबहूँ ॥
अन्धकार होवै जहँ भाई । हे मुनिराज तहाँ नहिं गाई ॥
सोच विचार करिय यहि भाँती । उचित समय गावै दिन राती ॥
जब उलूक यहि विधि समुझावा । नारद ज्ञान अनूपम पावा ॥
दिव्य सहस्र वर्ष पर्यन्ता । मुनिवर सीखेउ गान अनन्ता ॥
गान विसारद पुनि सो भयेऊ । मन महँ मान न रंचक लहेऊ ॥
वीनास्वर सब ज्ञाता भयऊ । अपर भेद स्वर मन माँ ठयऊ ॥
सहस छियालिस इकसत उत्तर[1] । यहि प्रकार जानेउ स्वरमुनिवर ॥

दोहा

किन्नर अरु गन्धर्वगन, मुनिसहु[2] कीन मिलाप ।
भयो अतुल सुख मिलनते, उपजा मोद अमाप ॥५९

१—मैथुन ।

१—आगे । २—साथ ।

चौपाई

गान बन्धु सन कहेउ मुनीसा । तव प्रसाद गुन लहेउँ गुनीसा ॥
गीत विसारद तुम सम्पन्ना । देत सुखहिं जन कहँ परपन्ना ॥
अब प्रिय काह करौं मैं तोरा । गान बन्धु सुनिमुनिहिंनिहोरा ॥
होत दिवस ब्रह्माकर तबहीं । चौदह मनु बीतत हैं जबहीं ॥
करिय कृपा मुनिवर गुन नागर । तौलौं मम यस रहै उजागर ॥
मनन करत मैं जानन हारा । होउँ सकल विद्या आगारा ॥
एवमस्तु कहि तब मुनिराई । गरुड़ होहु तुम कल्प बिताई ॥
श्री हरि गान करन के हेता । पैहौ सायुजं मुक्ति सहेता ॥
मंगल होय विज्ञवर तोरा । पाउँ रजायसु मैं तोहिं वोरा ॥
अस कहि तुम्बुरु जीतन गयऊ । तेहिगृह निकट पधारतभयऊ ॥

दोहा

देखेउ नारी पुरुष बहु, सबै देह विकरार ।
पूछेउ नारद तिनहिंसन, भइ गतिइमिकेहि द्वार ॥६०

चौपाई

सहस नारि देखेउ बिलखाती । तिन सोमुनिपूछेउ यहिभाँती ॥
अङ्ग तुम्हार नष्ट किन्ह कीना । अति दारुनदुख तुमकहँ दीना ॥
सुनि यह वचन कहत भईं नारी । हम सब तुम्हरे हेतु दुखारी ॥
राग रागिनी हम सब अहहीं । तुम्हरे भिन्न गान दुख लहहीं ॥
जब तुम गावत हौ यहि भाँती । तबहीं होति दसा तन घाती ॥
सुद्ध गान जब तुम्बुरु गावैं । सबके अंग साधु ह्वै जावैं ॥
यह कौतुक जब नारद देखा । धिकधिकमानेउआपु विसेखा ॥

१—शरणागत ।

१—मुक्ति ।

विष्णु निकट तुरतै चलि दयऊ । स्वेत द्वीप महँ पहुँचत भयऊ ॥
नारद सन बोलेउ भगवाना । गान बन्धु सन सीखेउ गाना ॥
गान विसारद तुम नहिं भयेऊ । तुम्बुरु तुल्य ज्ञान नहिं लहेऊ ॥

दोहा

अष्टविंस द्वापर युगहिं, वैवस्वत मनुमाहिं ।
प्रगट होहुँ यदुकुल जबै, मिलेहु मुनीस तहाहिं ॥६१
देवकि अरु वसुदेव के, जन्मौं मैं गृह जाय ।
कृष्ण नाम विख्यात ह्वै, द्वापरान्त मुनिराय ॥६२

चौपाई

मम समीप तब आय मुनीसा । कहेहु कथा निजसुनु गुनईसा ॥
तब तोहिं करिहौंस्वर गुन आगर । तुम्बुरु सरिस विप्रवर नागर ॥
तौलौं तुम गन्धर्वन्ह पाहीं । सीखहु गान मुदित मन माहीं ॥
नारद सन इमि कहि भगवाना । अन्तरहित भे कृपा निधाना ॥
मुनि श्रीहरिहिं कीन परनामा । वादन वीन कीन्ह तेहि ठामा ॥
सुर सम भूषन भूषित मुनिवर । भये परायन भक्ती श्रीधर ॥
काँधे ऊपर वीना धारे । विहरत मुनि लोकन्ह महँसारे ॥
वरुन कुबेर इन्द्र के धामा । ईस अगिन संजमनी ठामा ॥
कर धरिवर वीना मुनि राई । बिचरत विष्णुगान चित लाई ॥
देवबधू किन्नर गन जेते । नारद आदर कीन सहेते[१] ॥

दोहा

पहुँचे इमि विधिधाम महँ, कछुक काल उपरान्त ।
पदसरोज पितु बन्दिमुनि, आसिष लहि भे सान्त ॥६३

१—होशियार । २—तत्पर ।

चौपाई

विद्याधर हूहू अरु हाहा । विधि के गायक वरगुन गाहा ॥
तिन सों मिलि कीन्हें हरि गाना । मुदित चित्त मुनि परमसुजाना ॥
लोक पितामह आदर दीन्हा । तब मुनिवर प्रनाम पितु कीन्हा ॥
मन इच्छित बिचरन तब कीन्हा । लोकलोक बिचजनसुख दीन्हा ॥
तुंबुरु गृह पहुँचे तेहि काला । सुरकन्या तहँ लखेउ कृपाला ॥
धैवत षड्ज आदि सुर कन्या । रहीं विराजि धाम तेहि धन्यां[2] ॥
तिनहिं निरखि लज्जित मुनिराया । प्रस्थित[4] भे द्रुत अन्यनिकाया[3] ॥
जहँ तहँ सिच्छा बहुतन्ह दीना । गावत हरि गुन गिरा प्रवीना ॥
काल व्यतीत भयो बहु ताहीं । प्रगटे बिष्णु तबहिं महि माहीं ॥
तहाँ पधारेउ दर्शना हेता । ऋषि नायक गुनज्ञान निकेता ॥

दोहा

देवकि अरु वसुदेव घर, विष्णु लीन अवतार ।
सब कहँ सुखकारी भये, श्रीधर जगदाधार ॥ ६४
रैवत पर्वत पर गयो, बीते कतिपय काल ।
देखन हित ब्रजराज को, लहि भे दरस निहाल ॥ ६५
सातों स्वर सह अंगना, रहीं निकट यदुराय ।
तिनहिं देखि अति मुदितभे, मुनिमन महँ पुलकाय ॥ ६६

चौपाई

स्वेत द्वीप महँ भइ जसि बाता । सूचित कियो हरिहिं जगत्राता ॥
सुनि हँसि बोले कृष्ण मुरारी । जाम्बवती सुनु बात हमारी ॥
गान योग सिखवहु मुनिकाहीं । बादन वीन चतुर ह्वै जाहीं ॥

१—प्रेम सहित—२—पुण्यवती—३—दूसरी जगह—४—रवाना हुये ।

तब स्वीकार जाम्बवति कीन्हा । हँसत हँसत सिच्छा तब दीन्हा ॥
संवत्सर पूरन जब भयऊ । केसव नारद सन तब कहेऊ ॥
अब सीखहु सत्या सन जाई । मानि निदेस चले मुनि राई ॥
जाय मुनी तब कीन प्रनामा । बरस एक लौं रह तेहि ठामा ॥
कृष्ण रजाय पाय पुनि मुनिवर । चले रुक्मिनी भवन चारुतर ॥
तेहि अस्थान लखेउ बहु दासी । करत विनोद मनहिं मन हाँसी ॥
दुइ संवत सिख दीन्हेउ मुनि कहँ । स्वर कर ज्ञान न आयो उर महँ ॥

दोहा

पाय सुसिच्छा रुक्मिनिहिं, नारद सीख्यो गान ।
भली भाँति नहिं गान की, भई मुनिहिं पहिचान ॥ ६७

चौपाई

तब बुलाय मुनि कहँ यदुराई । गान योग की विधि समुझाई ॥
मुनि कहँ गान सिखायो जबहीं । स्वर अंगना पधारेउ तबहीं ॥
ब्रह्मानन्द भयो मुनिचेता । राग द्वेष से भयो अचेता ॥
तुम्बुरु प्रति इरषा जो रहेऊ । मुनि चित तुरत विगत[1] सो भयेऊ ॥
वासुदेव कहँ कीन प्रनामा । नृत्य करन लागेउ तेहि ठामा ॥
कृष्णं[2] कहेउं[3] नारदं[4] सन बाता । अब सर्वज्ञ भयो तुम ताता ॥
गावहु गान योग प्राचीना । निकट हमारे स्वर लवलीना ॥
इतना सुनि नारद हरखाये । नाचि गाय के हरिहिं रिझाये ॥
जेहि कारन मम लोक सिधारे । पूरन भयो मनोरथ सारे ॥
नित प्रति तुम तुम्बुरु सह गावहु । यथा तथ्य सुठि भाव लगावहु ॥
यह सुनि नारद विचरन लागे । कृष्ण निदेसहिं सिवपग पागे ॥

१—दूरि भई ।

दोहा

रुक्मिनि, सत्या, जाम्बवति, कृष्ण सहित मुनिराव ।
गान करन लागे तबै, सिव समीप बड़ि चाव ॥६८

चौपाई

हे मुनिवर बरनेउँ क्रम गीता । जो अति पावन परम पुनीता ॥
नारद गावत श्रीहरि गाना । लहेउ मुक्तिसुख परम निधाना ॥
सो चरित्र हम तुम सन भाखा । तामे रंचहु गोय न राखा ॥
प्रति दिन वासुदेव रत गाना । जासों सायुज मिलहिं निदाना ॥
अपर कीर्ति गावैं जे लोगा । नरक वास पावैं दुख भोगा ॥
मन वच क्रम जो सुन हरि गाना । सो जन पावै पद निरबाना ॥
सो जन श्रेष्ठ परम प्रियवादी । ताहि सराहैं सिव सनकादी ॥
भरद्वाज सुनु अद्भुत बाता । सीता उतपति वरनेहुँ ताता ॥
स्त्रवन सुखद अरु मन अभिरामा । यह प्रसंग बुध जन विस्रामा ॥
यह रहस्य मुनिवर मैं बरना । प्रीति तुम्हारि हेरि हरि चरना ॥

दोहा

अघहारी कल्यानप्रद, यह चरित्र जगदम्ब ।
सब सुखदायकदुख कदन, जेहि न औरअवलम्ब ॥६९
सप्तम सर्ग सुपूर भो, कमला के आसीस ।
"तेजभानु" वरननकियो, चरन कमलधरि सीस ॥७०

इति श्री अद्भुत रामायणे, सप्तम सर्गः समाप्तः ।

अथाष्टम सर्ग प्रारम्भः ।

दोहा

सोनित[1] सों प्रगटीरमा, जेहि विधि निसिचरि माहिं ।
कथा कहौं सुखदायिनी, सुरनर मुनि सब काहिं ॥७१

चौपाई

जिमि राछसी गरभ महँ आई । रमा भूमि सों पुनि जगजाई ।
जिन कहँ सीता कह सब कोई । सुनहु मुनीस कथा अब सोई ।
तेहि अवसर रावन मन कीना । होय त्रिलोकी मम आधीना ।
अजर अमर होऊँ महिमाहीं । सब पै सासन करौं सदाहीं ।
भूरि काल लौं तप सो ठाना । भयो तेज बल अगिनि समाना ।
जगत जरत सब जब बिधिजाना । सुर समेत तब कीन पयाना ।
हे रावन अब तप तुम त्यागहु । मन इच्छित मोंसन वर माँगहु ।
व्याकुल है जग तप सों तुम्हरे । करो निवारन दुख अब सिगरे ।
बिधि कहँ दसमुख कीन प्रनामा । युग कर जोरि कह्यो मन कामा ।
हे प्रभु मोहिं देहु वरदाना । अमर करहु वर और न आना ।

दोहा

अस सुनि तब ब्रह्मा कह्यो, अमर न जगमहँ कोय ।
दूसर वर अब माँगु तै, देउँ तोहिं अब सोय ॥७२

१—रक्त ।

चौपाई

सुर अरु असुर यच्छ गन्धर्वा । उरग पिसाचनिसाचर सर्वा ॥
किन्नर देव वधू गन जेते । मोहिं न मारि सकैं ये तेते ॥
यह उत्तम वर दीजै मोहीं । ब्रह्मा कह्यो दीन वर तोहीं ॥
रावन कह्यो तुरत यह बाता । और जो वर माँगौं मैं ताता ॥
सुनहु मोह बस जब मैं चहऊँ । निज दुहिता सनरत चित लहऊँ ॥
तब मम मृत्यु होय यह कहेऊ । कहि "तथास्तु" ब्रह्मा फिरि गयेऊ ॥
सब मानुष तृन समकरि माना । इन सों आपन मरन न जाना ॥
तेहिं कारन वर माँगेउ नाहीं । मारि नसकहिं मनुज मोहि काहीं ॥
ब्रह्मा सों वर पायो जबहीं । बलदर पित भो रावन तबहीं ॥
बिजयी तिरलोकी जब भयऊ । सुर नर पै तब सासन ठयऊ ॥

दोहा

दगडक बन तब दसबदन, गयो मुनिन्ह के पास ।
ऋषिनतपोनिधि जानिकर, मनमहँ भा यह भास ॥७३
जीते बिनु इन ऋषिन्ह के, विजयी नहिं जगमाहिं ।
मारौं जौ इन्ह ताप सन्ह, मेरो मंगल नाहिं ॥७४

चौपाई

दुष्ट हृदय तब करि अनुमाना । मुनिन्हसोकहनलगेउगुनवाना ॥
सब जनपै मेरो है सासन । तुमहु देहु जयलहि अनुसासन ॥
बेधेउ बान मुनिन तन जबहीं । निकस्यो धार रुधिरकी तबहीं ॥
कलस रहा तहँ एक प्राचीना । तेहि बिच रुधिर मूढ़ धरि दीना ॥
तहाँ गृत्समद जेहि द्विज नामा । सौ पुत्रन जुत रह तेहि ठामा ॥
सो प्रति दिन निज पत्नी संगा । हरिसों बिनवत प्रीति अभंगा ॥

बनिता सहित प्रार्थना कीना । भगवन जानि मोहिं आधीना ॥
देहु कृपा करि यह वर मोहीं । मोरि कन्यका लछिमी होहीं ॥
करि संकल्पहिं कलस मझारी । कुश समन्त्र पय नाव पुजारी ॥
कलस तहाँ धरि कीन पयाना । विपिन विहार कियो मनमाना ॥
कलश गृत्समद जो धरि गयेऊ । तामें रावन सोनित धरेऊ ॥

दोहा

कलस रुधिर युत गहनकरि, लंकहिं कीन पयान ।
निकट मंदोदरि के धरेउ, कीनेउ तासु बखान ॥७५

चौपाई

रच्छा करेहु भली विधि घटका । रुधिर भरा मुनि राखेहु खटका ॥
बिष से अधिक अधिक बिष जानो । मुनि कर रुधिर न याको मानो ॥
विजयी भयो जबहिं त्रयलोका । रावन सबहिं दीन बहु सोका ॥
मन्दर सह्य[1] हिमालय माँहीं । विन्ध्य मेरु क्रीडत हरठाहीं ॥
रमन करत चिरकाल बितावा । तब मय तनया मन यह आवा ॥
प्रीतम मोपै प्रेम न करई । परनारिन सों रत चित धरई ॥
अस विचारि निज निन्दा कीना । नारीकुल करधिक धिक जीना ॥
पति वञ्चित ह्वै अब नहिं जीना । दारुनदुख जो यह मोहिं दीना ॥
प्रथमहिं दस मुख मोसन कहेऊ । तीख रुधिर यहबिषसम अहेऊ ॥
मयतनया पति वञ्चित भयेऊ । रक्त पान हित तब चित दयेऊ ॥

दोहा

महा सती मन्दोदरी, कीन जो मन अनुमान ।
शास्त्रो चित यह काज नहिं, सुनहु महा मतिमान ॥७६

१—पर्वत का नाम ।

चौपाई

रक्त मंदोदरि कीन जो पाना । गरभ तुरत रहअगिनि समाना ॥
यह कौतुक मन्दोदरि देखा । विस्मित ह्वै पुनि मन में लेखा ॥
विष से अधिक रक्त जो रहेऊ । तेहि के पियतगरभ कस भयेऊ ॥
मोरे निकट न स्वामी वासा । यहि कलंक दारुन परिहासा ॥
कामिनि संग नित क्रीडत स्वामी । बरस एक भो परतियगामी ॥
अब का कहिहौं निज पति पाहीं । यह चिन्ता व्यापी मन माहीं ॥
तीरथ यात्रा कीन बहाना । चढ़ि विमान पै कीन पयाना ॥
कुरुक्षेत्र कहँ तब पगुधारी । गरभपात करि गर्तहिं डारी ॥
सरसइं[1] जल महँ करि असनाना । तुरत कीन निज सदन पयाना ॥
यह रहस्य काहू नहिं जाना । जो मय तनयाकिय मन माना ॥
कछुक काल बीते मुनिराजा । गे कुरुक्षेत्र जनक महराजा ॥
तहाँ नृपति कीन्हेउ मखभारी । विधिवतसबमखक्रिया सुधारी ॥

दोहा

सुन्दर सुवरन हल जबै, जनक लीन कर माहि ।
यज्ञ अवनि खोदन लगे, प्रगटी सुता तहाँहि ॥७७

तोटक छन्द ४ सगण

बरषा पुहुपानि की होन लगी, सुरनारि नचैबहुनेह पगी
यहदेखिमहीपमहाभ्रमभो, तबसोचविचारमनागमभो॥
तेहिऔसरबानिअकासभई, यहिकन्यहिंपालहुविस्वमई
यहपुत्रिमहागुनसागिंरहै, जगकाजविधाननागरिहै॥ ६

१—सरस्वती नदी।

दोहा

राजन मख पूरन करहु, विघन भये सब अस्त ।
यह कन्या जगदम्बिका, करिहै कुसल समस्त ॥७८

चौपाई

सीता सों उतपति के कारन । सीता नाम भयो जगतारन ॥
यहिकहँ निज कन्या करि जानो । और भाव नहिं यामें मानो ॥
असकहि गिरा शान्त जबभयऊ । सुनि वर बचन भूप सिरनयऊ ॥
कीन अमित व्यय मखके हेता । परिपूरन भो मधि कुरु खेता ॥
नृप लइ सीतहिं ऋषि करदीना । पुनिप्रतिदानऋषिन्ह नृप कीना ॥
जन्म जानकी बरनन कीना । सुनै जौ मन चितकरि लवलीना
सुनत कथा सब पाप पराहीं । फिर नहिं आवत है भवमाहीं ॥
पुन्यवान होवै सो प्रानी । लछिमी वास करैं सुखमानी ॥
सब पापन सों मुक्ती पावै । धरम सुजस लहि सुरपुर जावै ॥
पाप हारिनी कथा अनूपा । बरनन कीन "तेज" अनुरूपा ॥

दोहा

अष्टम सर्ग समाप्त भो, सीता भईं सहाय ।
"तेजभानु" बरनन कियो, मातु निदेसहिं पाय ॥७६

१—फाल । २—ग्रहण की हुई वस्तु को वापस देना ।

इति श्री अद्भुत रामायणे अष्टम सर्ग समाप्तः ।

अथ नवम सर्ग प्रारम्भः

दोहा

परसुराम मद भंग किय, जा विधि श्री रघुनाथ ।
कथा सुधा बरनन करौं, सुनहु मुदित मुनिनाथ ॥८०

चौपाई

जनक सुता श्रीराम विवाहू । पुनि भ्रातन कर भाउदवाहू[1] ॥
दशरथ आदि सहित श्रीरामा । पुलकित चले अवध सुखधामा ॥
बाजन बाजहिं विविध विसाला । गावहिं किन्नर गीत रसाला ॥
अद्भुत विक्रम सुनि रघुनन्दन । बीचहिं पंथ मिले भृगुनन्दन ॥
गहे चाप छत्रिय कुल नासक । आये रघुपति बल जिज्ञासक ॥
भृगुनन्दहिं गहे कर चापा । देखेउ राम करत बलदापा[2] ॥
भृगुपति सनहँसि बोले रामा । का सतकार करौं यहि ठामा ॥
तब भृगुपति बोले यह बानी । स्वागत से न होउँ सनमानी ॥
हे राजन छत्रिय कुल काला । हाथ हमारे धनुष कराला ॥
हौ समरथ तौ चाप चढ़ावहु । मोसन बहुत न बात बनावहु ॥

दोहा

असतुनि रघुनायक तबहिं, मुनिसन कहेउ जनाय ।
मों सन व्यङ्ग न बोलिये, तुम सों कहौं चेताय ॥८१

१—ब्याह । २—घमण्ड ।

चौपाई

छत्री करहिं न द्विज पै रोषा। सुनि कटु वचन करतसन्तोषा ।।
इच्छ्वाकु कुल जे भूपाला। नहिं गावहिंभुजबलनिजगाला ।।
परसुराम बोले रघुराया। उपदेसिय न मोहिं करि दाया ।।
रिपुबालक यह चाप चढ़ावहु। छत्री कुलहिं कलङ्क न लावहु ।।
सुनत वचन कोपेउ रघुराई। कर महँ लियो धनुष तुरताई ।।
लीन्हेंउ चाप जबहिं निज कर में। चढ्यो चाप लीलहिं छन भर में ।।
हँसत राम रोदा टंकोरा। वज्र समान शब्द भा घोरा ।।
तब रघुपति भृगुपति सों बोले। कहहु बात सब अब मन खोले ।।
दिव्य बान इक भृगुपति दीना। बोले तमकि चढ़ाव प्रवीना ।।
सुनि बोले सकोप रघुराया। अब लगि छमा कीन द्विजराया ।।
किन्तु तबहुँ तुम दर्पन त्यागहु। अजहूँ धीर वीर निज मानहु ।।
आप पितामह आसिर बादा। छत्री गन सों करत विवादा ।।

दोहा

दिव्य दृष्टि मैं देउँ तोहिं, दरसन करहु हमार।
मम स्वरूप सब कहुँ लखहु, त्यागहु द्वैत विकार ।।८२

चौपाई

अस कहि दियोअलौकिक नयना। पर शुधरहिं रघुवर सुख अयना ।।
लखे परशुधर राम सरीरहिं। विस्वरूप घट पट नभ नीरहिं ।।
तब राघव छाँड़ेउ सो बाना। भार्गव दियोजोकरि अभिमाना ।।
भयो सबद सो वज्र समाना। उल्कापात दिखान जहाना ।।
बरसा धूरि होन तब लागी। जगती सकल महा भय पागी ।।
भूकम्पादि सबद निरघातां। सुनि भृगुनन्दन भय युत गाता ।।
भयो तेजहत मुनि तेहि काला। बुद्धि भ्रमित चकरात बिहाला ।।

१—चोट।

चला बान जब रघुपति प्रेरा । विह्वल भयो चित्त भृगु केरा ।।
मुनि कहँ भई चेतना जबहीं । कीन वन्दना रामहिं तबहीं ।।
राम रजाय पाय चलि दीना । तब महेन्द्र गिरि मारग लीना ।।
तहाँ विनय युत उर भय भीता । संवतसर भरि कियो व्यतीता ।।
भृगुपति कहँ निरखेउ अति दीना । बोले पितर न यह भल कीना ।।

दोहा

जगत पूज्य श्रीराम सों, कियो न भल तुम तात ।
जानेउ राम स्वरूप नहिं, मुधा[1] बढ़ायो बात ।। ८३
नाम वधू सरथान महँ, नदी पुनीत प्रसिद्ध ।
तहँ तीरथ असनान करि, होइहौ पूरन सिद्ध ।। ८४
दीप्तोदाख्य सुतीर्थ जहँ, भृगु तप कीन महान ।
तेहि तीरथ अवगाहि[2] कर, लहौ तेज मतिमान ।।८५
पितृदेव कर वचन सुनि, भृगुपति तैसेहि कीन ।
तेज पुञ्ज तुरतहि भयो, चित्त महा सुख लीन ।।८६
राम कथा अति पावनी, सुनै जो मन चित लाय ।
तेहि सब पाप नसाय के, विष्णु धाम लै जाय ।।८७
रामचन्द्र श्री जानकिहिं, पानि परस जब कीन ।
मागध सूत सुभक्ति सों, अस्तुति महँ मन दीन ।।८८

तोटक छुन्द ४ सगण

सब देवन आय कियो हरसा, पुहुपों कि लगे करने बरसा ।
सियराम तबै मुद मोद भरी, पुर कोसल काँ हित यारि करी ।।

१—व्यर्थ । २—स्नान करिके ।

सोरठा

भा मुद मङ्गल चार, वधू सकल आवत भईं ।
लै गईं महल मंझार, सासु सबै परिछन कियो ।।४।।

दोहा

नवम सरग पूरन भयो, वैदेही पर ताप ।
"तेजभानु" सबसुखलह्यो, मिटा सकल सन्ताप ।।८६

इति श्री अद्भुत रामायणे नवम सर्गः समाप्तः ।



अथ दशम सर्ग प्रारम्भः

दोहा

दसम सरग बरनन करौं, सुनहु महा मुनिराय ।
राम पवन सुत मिलन की, कथा कहौं चित लाय ॥६०

चौपाई

सीता लषन सहित रघुनाथा । पहुँचे दण्डक बन सब साथा ॥
पाछिल हेतु रहा यहि माहीं । तेहि कारन आयो बन काहीं ॥
तट गोदावरि रचि प्रनसाला । मृगया करत रहे कछु काला ॥
मोह ग्रसित रावन एकबारा । सीतहिं हर लै गयो अगारा ॥
राम लषन तेहि अवसर आये । सीता सून कुटी तहँ पाये ॥
वैदेही खोजन के हेता । विचरे जहँ तहँ विपिन निकेता ॥
सीता खोज कतहुँ नहिं पाये । स्रवन नयन जल जात सुहाये ॥
आँसू वितरन हेतु महाना । वैतरनी विख्यात जहाना ॥
तहँ नहाय जो देवै दाना । पितर तृप्त होवें मनमाना ॥
यहि कारन वैतरनि कहाई । ऋषि मुनि नाम विचारि धराई ॥

दोहा

गिरयो नयन मल जो तहाँ, सो भे सैल विसाल ।
अति विचित्र पावनजहाँ, मुनि बसिहोयँ निहाल ॥६१

१—घर ।

चौपाई

जहाँ बसत सुग्रीव हरीसा ॥ । सहित पाँच मंत्रिह्व गुन ईसा
इत उत खोजत सीतहिं रामा । ऋष्य मूक पर भा विस्रामा ॥
तहँ रह त्रासित बालि सुग्रीवाँ । देखेउ राम लषन बलसीवाँ ॥
धरे चाप सायक दोउ वीरा । ग्रसत अकास मनहुँ रनधीरा ॥
देखि उभै चित भयो गलानी । पठयो बालि मनहुँ अभिमानी ॥
अस विचारि हनुमान पठावा । भिक्षुक ह्वै पुनि सो तहँ आवा ॥
राम लषन सन पूछेउ जाई । आयो कहँते तुम दोउ भाई ॥
यह सुनि उत्तर कछु नहिं दीना । विष्णु स्वरूप प्रगट तब कीना ॥
मुकुट चारु अरु चौभुज धारे । चक्र गदा दर[1] पद्म सवाँरे ॥
बनमाला सोभित तनु माहीं । उंर[2] भृगुलता विचित्र सुहाहीं ॥
गात पीत पट सुन्दर सोहै । निरखतछबिमुनिजनमनमोहै ॥
यहि प्रकार जब रूप दिखावा । हनुमत मन महँ विसमय आवा ॥

दोहा

उभय बगल से वितरमा, गिरा[3] बन्ध सनकादि ।
देव पितर गन्धर्व गन, सेवहिं राम अनादि ॥६२॥

हरिगीतिका १६-१२

सहसान भान समान आभा, चन्द्रवत मुखराजही ।
रघुनाथ सिरपै छत्र छाया, सेष निज फन साजही ॥
असरूपअद्भुतदेखिहनुमत, हृदयअतिविसमयकियो ।
छनभरनिमीलितनयन ह्वैकर, चित्तहरि चरननकियो ॥

१—शंख । २—छाती में । ३—सरस्वती ।

सोरठा

रामहिं कीन प्रनाम, बार-बार करजोरि कर ।
कहन लगे निजनाम, मैं मंत्री सुग्रीव कर ॥ ६ ॥

तासु दूतहौं धीर, जिन मोहिं भेज्यो आप ढिग ।
देखहु तुम इनवीर, कौन कहाँ आवत भये ॥ ७ ॥

दोहा

द्विभुज रूप देखा तुमहिं, प्रथमहिं हे मतिमान ।
चतुरभुजहिं अबलखतहौं, संसय हृदयसमान ॥ ६३

निज वृत्तान्त कहहु अब, को तुम हौ महराज ।
जासों भ्रम छूटै सकल, सिद्ध भयो सब काज ॥६४

बोले रघुबर बचन तब, सुनु गाथा विस्तार ।
रघुकुल जन्म हमार भा, धरा भार निस्तार ॥ ६५

दसम सरग पूरन भयो, भूतनया परताप ।
"तेजभानु" बरनन कियो, जेहिसुनि छूटैपाप ॥ ६६

इति श्री अद्भुत रामायणे दशम सर्गः समाप्तः ।



अथ एकादश सर्ग प्रारम्भः

दोहा

सरग एकादस कहौं अब, भरद्वाज सुनु तात ।
श्रीरघुपति हनुमान सों, कहेउ ज्ञान की बात ॥६७

चौपाई

राम कहेउ अब सुनु कपि ज्ञानी । तोहिं सन कथा कहौं जनजानी ॥
जो सुनि आत्म ज्ञान तोहिं होई । औरह्व सन यह राखेउ गोई ॥
द्विज देवता जतन भल कीना । खोज न पायो परम प्रवीना ॥
आत्म ज्ञान लहै द्विज कोई । होय ब्रह्ममय जग महँ सोई ॥
जेहि जाने जग जाय हेराई । ताते गुपुत राखु तेहि भाई ॥
जो जानै यह आतम ज्ञाना । तासुवंस होवैं गुनवाना ॥
आत्मा केवल स्वच्छहि जानो । सूक्ष्म सान्त सनातन मानो ॥
गुनातीत चैतन्य स्वरूपा । अन्तरजामी पुरुष अनूपा ॥
जेहि अव्यक्त[1] निरूपहिं वेदा । उतपति थिति लय करै अभेदा ॥
सो मायास्रित ह्वैकर भाई । धरै रूप जग महँ बहुताई ॥

दोहा

रहै अचल यह तात सुनु, काहूसों न चलाय ।
आवागमन रहित नित, आगम वदहि स्वभाय ॥६८

१—जो प्रगट न हो ।

पावक, पवन न ध्रान न जल है । नहिं आकास न पृथिवी तलहै ॥
मन असपरस सबद रस नाहीं । गन्ध रूप नहिं धरु मन माहीं ॥
अहंकार इन्द्रिय नहिं रूपा । करता भोक्ता शुद्ध स्वरूपा ॥
जथा प्रकास न तम सम्बन्धा । तथा प्रपञ्च परेसं प्रबन्धा ॥
छाया वृच्छ अलग जस रहहीं । पुरुष प्रपञ्च पृथक तस अहहीं ॥
आत्मा मलिन रहै जेहि भाई । सो सौ जन्म मुक्ति न पाई ॥
तत्व ज्ञानकरि मुनिजन देखहिं । आतम अलिप सनातनलेखहिं ॥
सुखी दुखी कृस अरुहौं पीना । अहंकार कृत बुद्धि मलीना ॥
मलिन चित्त जन अस आचरहीं । आरोपित आतम महँ करहीं ॥
वेद तत्व के जानन हारे । साछी रूप कहहिं तेहि सारे ॥

दोहा

भासत जग अविवेक सों, तेहि जो मलिन स्वभाव ।
तैसेहि आतम प्रकृति संग, संसारी इव धाव ॥६६

चौपाई

परम प्रकासक अन्तरजामी । पुरुषोत्तम सब अगजग स्वामी ॥
आतम ज्ञान बिना नहिं सूझै । अहंकार वश करतहिं बूझै ॥
सदसतरूप ऋषीजन जानैं । सदायथारथ चेतन मानैं ॥
कारन प्रकृति जानि ततवादी । मुक्त रहतते सिव सनकादी ॥
प्रकृति संगवस आपन रूपा । मूढ़ न जानत सुद्ध स्वरूपा ॥
इन्द्रिह्व आतम मानि दुखारी । राग द्वेष वस भ्रमत अनारी ॥
पाप पुन्य जाकर जस होई । तैसेहि फल पावै नर सोई ॥
आतम दोष रहित तुम जानो । माया स्त्रित बहु भाँतिक मानो ॥
परमारथी मुनी अस कहहीं । वास्तवएकातम सब अहहीं ॥
माया कृत बहु भेद लखाई । अस मन महँ तुम धरहु दृढ़ाई ॥

१—परमेश्वर ।

दोहा

धूम संग बस मलिन नहिं, सदा स्वच्छ आकास ।
अन्तःकरणिक भावसों, तैसेहि आतम भास ॥ १००

चौपाई

जथा फटिक मनिनिज गुनभाती । आतम तथा अमल दिनराती ॥
ज्ञान रूप देखहिं जगकाहीं । मगन रहहिंमुनिनिजसुखमाहीं ॥
देखहिं मूढ़ विषय मय रूपा । सदसत भेद न जानि निरूपा ॥
आत्मा चेतन सच्चित ताता । भ्रमितबुद्धि जन जान न बाता ॥
जथा फटिक मनि सुध सब भाँती । पर उपाधि जुत मलिन लखाती ॥
तथा देह संजुत यह आतम । भासत मलिनसदासत आतम ॥
सुनहु तात आतम अविनासी । नित्य सर्बगत सदा प्रकासी ॥
असविचारि अवराधहिं जोगी । जानहिं नित्य ताहि रसभोगी ॥
आतम जासु चित्त दृढ़ भासै । सब जग तासु एक परकासै ॥
आतम सब भूतन महँ देखै । पुनि आपुहिं सबजगकरि पेखै ॥

दोहा

देखै नहिं जब आपु महँ, सकल भूत कहँ तात ।
केवल देखै ब्रह्म कहँ, परमहंस ह्वै जात ॥ १०१ ॥

चौपाई

हियते सकल वासना टूटै । तब उरपरी गाँठि सब छूटै ॥
जब सब भूत एक महँ देखै । तबहीं ब्रह्म विचार सुपेखै ॥
केवल देखै आपुहिकाहीं । सकल जगत परमारथ नाहीं ॥
जरामरन जनि दुख बहु रोगा । ब्रह्म ज्ञान औषध सुठि जोगा ॥
जब अस ज्ञान जीव कहँ होई । सिव स्वरूप आपुहिं लखसोई ॥
नद अरु नदी समुद्रहिं जाई । तदाकार ह्वै जावहि भाई ॥

तैसेहि ब्रह्महिं मिलकरि आतम । होय एकरस नासै सब तम ॥
थिति अरु जगत पदारथ नाहीं । सरबउपरि विज्ञान सदाहीं ॥
रहत ज्ञान अज्ञान सुछादित । ताते रहमति मोह निसादितं ॥
जो उपदेश ज्ञान हम दीना । निरमल हृदय धरिय परवीना ॥

दोहा

जो यह दृश्य दिखात है, माया कल्पित जानु ।
चर अरु अचर सकल जग, परमानन्दहि मानु ॥१०२

चौपाई

सांख्य जोग यह उत्तम ज्ञाना । वेदसार सब कहेउँ बखाना ॥
एक चित्तता जोग कहावै । जोग सबहिंविधि ज्ञान लखावै ॥
ज्ञानहि जोग प्रवृत्त करावै । जोग जुक्त जन सब कछु पावै ॥
जेहि मारग जोगी जन जाहीं । सांख्ययोगितेहिमार्गसिधाहीं ॥
भिन्न दृष्टि कबहूँ नहिं आनै । सांख्य जोग जो एकहि मानै ॥
तत्व वेत्ता सोई जानहु । पवनकुमार हृदय अनुमानहु ॥
जे ऐश्वर्य चहैं जग जोगी । ते संसार भोग के भोगी ॥
एक आतमहिं सत्य जे जानै । ते संसार असत करि मानै ॥
जोगी जुक्त ताहि चित ध्यावै । अचल दिव्य ऐश्वर्यहिं पावै ॥
यह आतम अव्यय अविनासी । साछी रूप सर्व घटवासी ॥

दोहा

व्यापक है आतम सकल, ज्ञानी देखहिं जाहि ।
बरनत वेद पुरान नित, ऋषि मुनि गावत ताहि ॥ १०३

चौपाई

हौं मैं अजर अमर अविनासी । अन्तरजामी सकल प्रकासी ॥
पग बिनु धावौं सब जगमाहीं । कर बिनु ग्रहन करौं सब काहीं ॥

१—सताई पीड़ित । २—तमाशा जगत ।

अखिल विस्व देखौं बिनु नयना । सुनौंस्रवनबिनुसब कर बयना ॥
जानत हौं मैं सब कर भेदा । मोर भेद जानहिं नहिं वेदा ॥
ततदरसी मोहिं कहहिं महाना । पुरुषोत्तम अनादि भगवाना ॥
मम ऐश्वर्य अनूपम जोई । माया बस सुर जान न सोई ॥
सूछ्म रूप जो मम यह देहा । जोगी प्रविसि होयँ निरगेहा ॥
विस्वव्यापिनी दारुन माया । जेहि न मोहतेहिपै ममदाया ॥
पद निरबान सो निसचय लहई । गरभवास दुख कबहुँ न सहई ॥
मम प्रसाद ते होवै ज्ञाना । बड़े भागि नर लह हनुमाना ॥

दोहा

गुह्य ज्ञान यह कहिय नहिं, मूढ़ सिष्य सनतात ।
जो मैं तुम सनकथन किय, ज्ञानविसिष्टकिबात ॥१०४
सरग रुद्र पूरन भयो, कीन कृपा रघुनाथ ।
"तेजभानु" बरननकियो, लहिभो ज्ञानसनाथ ॥१०५

हरिगीतिका

जो है अगोचरसबन्हतें, तेहिकौनविधिकोउ ध्यावहीं ।
अव्यक्त परमानन्द है, जो वेद भेद न पावहीं ॥
सोइरामव्यापकअखिलजग,जेहिकहहिंमायापतिधनी ।
अंब तेज को आधारसोइप्रभु,अवधेसजूरघुकुलमनी ॥
अव्यक्त परमानन्द व्यापक, सकल जगदाधार है ।
जेहि वेद चारों सगुन निरगुन, भनत महिमा पार है ॥
कवि सेष सारद नारदादिक, गाय गुन पाते नहीं ।
तेहि गानमैं किमिकरिसकौंगो, निपटजो अज्ञानहीं ॥

आनन्द सागर हे दयाकर, भक्त सुखदाता प्रभो ।
निज अंस को रघुबंस भूषन, लीजिये सरनै विभो ॥
अंसी समेटत अंस कौं निज, यह पुरातन चाल है ।
जैसे दिवाकर अस्तवेला, किरन करषत जाल है ॥

इति श्री अद्भुत रामायणे एकादश सर्गः समाप्तः



अथ द्वादश सर्ग प्रारम्भः

दोहा

द्वादस सरग कहौं अब, सुनहु कथा अभिराम ।
सृष्टि निरूपन विषयज़हँ, हनुमत सों कह राम ॥१०६

चौपाई

पुनि बोले रघुवंस कुमारा । सुनहु विप्र प्रिय वचन हमारा ॥
परब्रह्म सों उपज्यो काला । ताते भयो विराट विसाला ॥
तासों उपज्यो सब जग ताता । सुनहु विस्व तो मुख की बाता ।
कर सिर पद मुख बहुहैं जाके । नयनस्त्रवनचहुँदिसिपुनिताके ॥
इन्द्रिह्न गुन सब भासत जामें । रहै लिप्त नहिं कबहूँ तामें ॥
अद्वय ब्रह्म सरब आधारा । आनन्द रूप तिगुन के पारा ॥
उपमा रहित सोई सब भाँती । बहुरि प्रमानातीत विजाती[1] ॥
इन्द्रिन परे ताहि तुम जानो । निर विकल्प निरभासहि मानो ॥
सब महँ भासै मुक्त कहावै । भिन्न अभिन्न बेद अस गावै ॥
निरगुन निराकार चिदरूपा । जानैं बुध मति अमल अनूपा ॥
सब प्रानिह्न कर आतम जानहु । अन्तर बाहर परे सो मानहु ॥
सोइ परमातम मोहिं कहँ लेखहु । ममकृत विस्तृत जगत परेखहु ॥

दोहा

सब प्रानी मोहिमाँ बसैं, जो जानै यह भेद ।
ता कहँ जानु तु वेदविद, सुद्ध बुद्ध गतखेद ॥ १०७

१—जातिरहित ।

चौपाई

प्रकृति पुरुष दोउ तत्व अनादी । कहैं ऋषी मुनि जे ततवादी ॥
तेहि दुहुँ कहँ संजोजक[1] काला । तत्वतीन ये भये विसाला ॥
तीनिहुँ तत्व अनादि अनन्ता । रहैं ब्रह्म संग कह स्तुति सन्ता ॥
दृश्य मान त्रय तत्व लखाहीं । वास्तव मोसन भिन्न न आहीं ॥
सकल जगत सिरजत बहुभाँती । कौतुक करत रहत दिनराती ॥
अखिल विस्व कहँ मोहन हारी । प्रकृति सन्त तेहिकहत विचारी ॥
करै पुरुष जब प्रकृति प्रसंगा । भोगत गुन प्राकृत सब अंगा ॥
अहंमिति धर्म[2] पुरुष जब मानेउ । तत्व पचीस विशिष्ट बखानेउ ॥
प्रथम विकार प्रकृति ब्रह्मकेरी । कहत बिचारि संत स्तुटि टेरी ॥
आतम को पुनि कहैं महाना । ज्ञानसक्ति विज्ञान ते माना ॥
तासों अहंकार भो भाई । सोइ आतम अहमितिहिं दृढ़ाई ॥
अन्तर आतम जीव कहावा । तत्व चिन्त[3] कन्ह नाम बतावा ॥

दोहा

जनम केर दुख सुख सबहिं, जीवहिं होवै भास ।
मनहि नचावतसकल दिसि, परो जालके फाँस ॥१०८

चौपाई

प्रकृति संग बस भा अविवेका । ताते भोगत दुःख अनेका ॥
यह सब काल कृतहिं तुम जानहु । जीवन मरन कालकृत मानहु ॥
सकल चराचर काल अधीना । काल नाहिं काहू आधीना ॥
सब कर सासक काल कहावै । आगम निगम पुरान बतावै ॥
प्रानहिं ईश्वर करि तुम मानो । इन्द्रिन्ह परे मनहि कहँ जानो ॥
अहंकार है मन के पारा । अहम परे है महत विचारा ॥

१—मिलनेवाला । २—अहंकार । ३ सांख्यवादी ।

तेहिते पर अव्यक्त बखाना । पर अव्यक्त पुरुष परधाना ॥
तेहिके ऊपर ईश्वर प्राना । ताके बस है सकल जहाना ॥
प्रान परे आकास जनाई । ताते परे है ईश्वर भाई ॥
सो मैं ईश्वर परम प्रकासक । अन्तरजामी सब घट भासक ॥

दोहा

मोंसन परे न है कछू, राखहु चित्त दृढ़ाय ।
श्रुति सिद्धान्तितबदत हौं, वचननकहौं बनाय ॥१०६
थावर अरु जंगम सबहिं, नस्वर जग में जान ।
व्योम रूप केवल हमहिं, सर्वेस्वर तैं मान ॥११०

सोरठा

हौं मैं सिरजन हार, सब प्रकार चर अचर कर ।
संहारक संसार, हनूमान मोहिं जानिये ॥ ८ ॥

दोहा

सिरजन पालन संहरन, करै जो कछु जगकेर ।
सो सम्बन्धहिं काल के, नाहिं न यामें फेर ॥ १११
मम समीप रह काल ही, करत विस्व व्यापार ।
पुनि नियुक्त कर्महिं करै, कहेउँ तोहिं स्तुतिसार ॥ ११२
द्वादस सरग सुपूर्न भो ज्ञान कथा निष्कर्ष ।
"तेजभानु" बरनन कियो, राम प्रसाद सहर्ष ॥ ११३

इति श्री अद्‌भुत रामायणे द्वादश सर्गः समाप्तः

अथ त्रयोदश सर्ग प्रारम्भः

दोहा

सरग त्रयोदस कहौं अब, सुनहु कथा तुम भक्ति ।
जेहि बस मैं प्रगटौं जगत, दरस देउँ सहसक्ति ॥ ११४

चौपाई

सुनु हनुमान कथा यह नीकी । भगति भावभूषित प्रिय जीकी ॥
भगत हेतु प्रगटौं मैं भाई । सगुन होउँ निरगुनहिं बिहाई ॥
जप तप करि मोहिं तस नहि पावै । जस निःकेवल भगति दृढ़ावै ॥
सकल वस्तु महँ व्यापक जानहु । तिलगत तेल जथा करि मानहु ॥
सुनहु वीर साची सब केरा । मोहिं न जानहिं परिभव फेरा ॥
यह सब जगत है अन्तर जाके । जो सब अन्तर है पुनि ताके ॥
सो मैं विस्वरूप भगवाना । मोहिं न जानैं मुनि करि ध्याना ॥
चारिहु वेद निरन्तर गावहिं । विप्र यज्ञ करि मोहिं मनावहिं ॥
सुर मुनिनमत पितामह काहीं । ध्यावहिं जोगी सिव सब ठाहीं ॥
सब देवन महँ भासौं ताता । जानहु मोहिं जज्ञ फल दाता ॥

दोहा

देखहिं हम कहँ वेद विद, धरम निष्ठ सब माहिं ।
जे मोहिं भजहिं निरन्तर, बास करौं तिन पाहिं ॥ ११५

चौपाई

भूसुर छत्री वैस्य जे अहहीं। मम आराधन करि सुख लहहीं ॥
सूद्र भगति करि जे मोहिं ध्यावैं। ते नर मुक्ति धाम मम पावैं ॥
कपि वर सुनहु सत्य प्रण मेरो। होय न नाश भक्त जन केरो ॥
भगत हमार अनघ[1] सब होहीं। सत्य सत्य भाषौं मैं तोहीं ॥
मम भगतन्ह जे निन्दा करहीं। ते जनु मम निन्दा चित धरहीं ॥
जे मम भगतन्ह आदर करहीं। ते जनु मम आदर चित धरहीं ॥
पत्र फूल फल सजल चढ़ावै। सो पूजक प्रिय अतिसय भावै ॥
आदि सृष्टि मैं रचेउँ विधाता। दीन्हेउँ तिनहिं बेद हे ताता ॥
मम मुख निरगत[2] वेदन्ह जानौ। धर्म अधर्म विधायक[3] मानौं ॥
सब जोगिन कर गुरु मैं ताता। स्तुति निन्दकनासकविख्याता ॥

दोहा

रक्षक धार्मिक जनन कर, मैं ही हौं हनुमन्त।
वचन अन्यथा मोर नहिं, भनत वेद कवि सन्त ॥११६

चौपाई

जे जोगी जन यहि संसारा। तिन कहँ हमहिं करैं भवपारा ॥
सब संसार प्रवर्तक एका। निःसंकल्प रहौं सविवेका ॥
सब कर हौं मैं सिरजन हारा। पालक नासक पुनि संसारा ॥
लोक विमोहनि मम यह माया। चरित जासु लखि काहु न पाया ॥
मोरि सक्ति जो विद्या रूपा। जोगी हिय बस सुद्ध स्वरूपा ॥
अज्ञानिन्ह चित बसै अविद्या। तिन कहँ नहिं सूझै कहुँ विद्या ॥
दुहुँ कर मोहिं प्रवर्तक जानहु। बन्ध मोक्ष प्रद जीवहिं मानहु ॥
सात्विक राजस तामस केरा। त्रिविध सक्ति प्रेरक बहुतेरा ॥

१—निष्पाप। २—निकला हुआ। ३—विधान करने वाला।

कोउमोहिं ध्यानज्ञान करि देखहिं । कोउकरिकरमभगतिमोहिपेखहिं ॥
सब भगतन्ह महँ प्रियतर ज्ञानी । आराधत मोहिं सब महँ मानी ॥

दोहा

और त्रिविध जे भगत हैं, भाषत तेज पुकार ।
तेऊ हरि कहँ प्राप्त ह्वै, पुनि न लहैं संसार ॥ ११७

चौपाई

मम विस्तारित यह संसारा । जो जानै होवै भवपारा ॥
अहै पुरातन यह संसारा । वर्तमान इव देखौं सारा ॥
समय पाय प्रगटौं यहि काहीं । व्यापक विस्व रूप सब माहीं ॥
कहहिं विज्ञवर मोहिं जोगीसा । महादेव भगवान गिरीसा ॥
अहौं परात्पर ब्रह्म असेसा । पुरुष पुरातन अरु सरवेसा ॥
वेद तत्व के वर विज्ञानी । ब्रह्म भनहिं वेद मय जानी ॥
मोहिं अनादि अचल सर्वेस्वर । जे इमि जानहिंप्रभु जोगेस्वर ॥
अविचल जोग जुक्त ते होहीं । नहिं सन्देह सुनहु सन मोही ॥
सब कर प्रेरक हौं मैं सासक । निज दासन्ह कर दुःखविनासक ॥
नित्य जोग में थित मैं रहऊँ । वचन सार स्रुति कर तोहिंकहऊँ ॥

दोहा

गुह्य ज्ञान स्रुति संमतहिं, तुम सों कहेउँ मैं तथ्य ।
सुचि सेवकसों किमंपि[1] नहिं, बार्ताअहै अकथ्य ॥ ११८
सरग त्रयोदस पूर भो, सीतानाथ सहाय ।
"तेजभानु"बरननकियो, सुनतैभवदुख जाय ॥ ११६

१—कोई नहीं ।

इति श्री अद्भुत रामायणे त्रयोदश सर्गः समाप्तः

अथ चतुर्दश सर्ग प्रारम्भः

सरग चतुरदस कहौं अब, सुनहु ज्ञान की बात ।
पर स्वरूप विषयक कथा, अनुपम बरनौं तात ॥१२०

चौपाई

रचना सकल लोक कर करऊँ । रक्षा करि पुनि तेहि संहरऊँ ॥
सब वस्तुन्ह कर अन्तरजामी । पिता सनातन सब कर स्वामी ॥
मोरे हृदय चराचर रहई । मैं सर्वत्र न इस्थित अहई ॥
अद्भुत रूप जो तोहिं दिखावा । माया द्वारा हमहिं बनावा ॥
सब भावन्ह महँ हमहीं राजैं । क्रिया सक्ति ममजगबिच आजैं ॥
चेष्टा करत विस्व मम द्वारा । मम स्वभाव बरतत संसारा ॥
सिरजन काल सृजौं हनुमन्ता । हरन काल महँ हरौं तुरन्ता ॥
उभय दसा यह मम कृत लीला । आदि अन्तमधिरहितसुसीला ॥
हमहीं तत्व प्रवर्तक भाई । बहुत कहौं का कथा बढ़ाई ॥
आदि सृष्टि महँ अस मन धरऊँ । प्रकृति पुरुष संचालन करऊँ ॥

दोहा

प्रकृति पुरुष संजोग ते, उपजै विस्व महान ।
सांख्य सास्त्र सिद्धान्त यह जानहु हे हनुमान ॥ १२१

चौपाई

जो कछु तैजस वस्तु विराजै । तेज सकल मोरहि महि छाजै ॥

ब्रह्मा जो सब जगत विधाता । सोऊ उपजे मम वपु[1] ताता ॥
आदि कल्प महँ सुनु कपिराया । चारिहु वेद दीन करि दाया ॥
दिव्य ज्ञान ऐस्वर्य समेता । विधि कहँ दीन कुसल के हेता ॥
मम अनुसासन पालत धाता[2] । मोरे भाव रहत जगत्राता ॥
नारायन अव्यय अबिनासी । सरवलोक के परम प्रकासी ॥
परामूर्ति है सोऊ मेरी । पालन करत जगत हर बेरी ॥
हव्य कव्य सुर पितरन हेता । अगिनिदेव विरचैं धरि चेता ॥
आज्ञा वहन करत नित पावक । प्रेरित सक्ति मोरि सुचि भावक ॥
महारुद्र मम रूप कहावहिं । काल रूप है जगत नसावहिं ॥

दोहा

भुक्त अन्न जो पचत है, जठरागिन के द्वार ।
वैस्वानरहु अगिनि सो, बहत नियोग हमार ॥ १२२

चौपाई

वरुन देवता जल के स्वामी । सबहिं जियावतमम अनुगामी ॥
अन्तर बाहर रहि सब भूतन । पोषत देह पवन नित नूतन ॥
देवन कहँ संजीवन दाता । सोम[3] सुधाकर सब जन त्राता ॥
निज स्वभाव सों करत प्रकासा । रजनी तमहरि हँरि[4] सुभ भासा ॥
बरषा करहिं दिवाकर देवा । सकल जगत पालत करि सेवा ॥
अमराधिप सब देव मंझारा । देत जज्ञ फल सकल प्रकारा ॥
वैवस्वत[5] जमदेव सदाहीं । देत दण्ड दँडनीयन्ह काहीं ॥
धनाधीस कुबेर विख्याता । सेवित जच्छ चरन जल जाता ॥
निऋति गनेस ईस सेनानी । मुनी मरीचि आदि विज्ञानी ॥
और प्रजापति जे जगस्वामी । ते सब मम निदेस अनुगामी ॥

१—शरीर । २—ब्रह्मा ३—चन्द्रमा । ४—चन्द्रमा । ५—सूर्य सुत ।

दोहा

देव पितर गन्धर्वगन, अनुगामी हैं मोर ।
यथाधिकारहिं काज निज, बहैं निरखि दृगकोर ॥ १२३

चौपाई

पतिनी नारायन श्रीदेवी । लछिमी विदितसकल सुरसेवी ॥
सरस्वती विद्या वर देहीं । जो जन ध्यावतनिसि दिनतेहीं ॥
नरक निवारन तारन कारिनि । सावित्री जन कर दुख हारिनि ॥
ब्रह्मज्ञान विधायिनि माता । पारवती ध्यातन्ह सुख दाता ॥
मम आस्रित सब सक्ती आहीं । मम निदेस सों काज निबाहीं ॥
धराधार जे सेस फनीसा । महिमा अमित कहत गुनईसा ॥
संवर्तक आदित वसु रुद्रा । स्वर्ग वैद्य वायू गुनभद्रा ॥
सिद्ध साध्य, चारन गन्धर्वा । यच्छ, उरग राच्छसअरु सर्वा ॥
भूत पिसाच प्रेत वैताला । मम आज्ञा पै रहैं उताला ॥
काष्ठा कला मुहूर्त निमेषा । पच्छ मास ऋतु काल असेषा ॥

दोहा

युग मन्वन्तर बरस दिन, यावत काल विभेद ।
सब मम आज्ञा बहत हैं, कहत नित्य असवेद ॥ १२४

चौपाई

चारि प्रकार सृष्टि स्तुति गाई । भूतल माहिं प्रगट समुदाई ॥
नगर भुवन अगनित ब्रह्मण्डा । भूमि वायुजल अनलप्रचण्डा ॥
मन बुधि पंचभूत अरु प्रकृती । विद्या और अविद्या विकृती ॥
ए सब मम निदेस नित पालहिं । बहुत कहौं का कथा बिसालहिं ॥
अखिल विस्व यह मम उपजाया । अन्त माहिं मोमाहिं समाया ॥
स्वयं प्रकास सनातन ईसा । परब्रह्म हौं सुनहु कपीसा ॥

मोसे परे अधिक कोउ नाहीं । यह वर ज्ञान कहेउँ तुव पाहीं ॥
उत्तम ज्ञान लहै यह जोई । भवसागर से छूटै सोई ॥
मायास्रित मैं जनम जो लीना । दसरथ गृह नर लीला कीना ॥
भरत सत्रुहन लछिमन रामा । रूप चतुर्धा भा अभिरामा ॥

दोहा

रूप कथन जो कहेउँ मैं, सगुन रूप सो जान ।
भाव सहित हिरदै धरहु, भूलेहु नहिं हनुमान ॥ १२५

चौपाई

यह संवाद पढ़ै नर जोई । जीवन मुक्त अमर सो होई ॥
ब्रह्मचारि द्विजवर जे भाई । तिन्ह कहँ कथा परम सुखदाई ॥
जे नर अरथ विचारहिं मन से । लहहिं परम गति ते सब जग से ॥
जे मन लाय सुनहिं हरि लीला । भगति भाव ते होहिं सुसीला ॥
ब्रह्मधाम महँ आदर पावहिं । साधु समाज तासु गुन गावहिं ॥
विज्ञानी विरक्त जे अहहीं । परम हंस इव शोभा लहहीं ॥
नृप विद्या सुनतहि दुख भागै । आतम सुख दिन दिन अनुरागै ॥
कबहुँ न संसय चित महँ आवै । दोष विपर्यय आदि नसावै ॥
यह विद्या सी खैजो कोई । अमित लाभ जगपावै सोई ॥

दोहा

ज्ञान भानु बिनु मिटै नहिं, भवरजनीकर दोष ।
कहेउँ सार सिद्धान्त यह, मनन ते पावै मोष ॥ १२६
सरग चतुरदस पूर भो, श्रीरघुनाथ सहाय ।
"तेजभानु" बरनन कियो, इष्टदेवि सिरनाय ॥ १२७

१—उलटा ।

इति श्री अद्भुत रामायणे चतुर्दश सर्गः समाप्तः

अथ पञ्चदश सर्ग प्रारम्भः

दोहा

सरग पंचदस की कथा, कहौं सुखद अभिराम ।
अस्तुति राघव पवनसुत, कियो मुदित गुणग्राम ॥ १२८

मालती सवैया

श्री हनुमान हृदै धरि ध्यान कियो रघुनन्दन को अभिवादै । कीन उचार तबै प्रनवै लखि रामहिं भो तुरतै अहलादै ॥ जो सनकादिक सों अभिवन्दित पूर्ण अनन्दित वेद निगादै । अस्तुति "तेज" पुकारि करै तेहि जो भजतै हरि लेत बिषादै ॥ ८ ॥

हरिगीतिका

तुमहीं पुरातन परम ईश्वर, व्यक्ति प्रति सब राजते ।
चैतन्य ब्रह्मस्वरूप मुनिजन, प्रनत दीन निवाजते ॥
ध्यावहिं सदा तव अचल रूपहिं, आप आपहिं मानहीं ।
सब विस्व हेतु निमित्त कारण वेद सकल बखानहीं ॥
बड़ से बड़े लघु से लघू, यहि भाँति सन्त बखानहीं ।
भे सृष्टिकर्ता आपु से, सिरजे मही सब जानहीं ॥

१—प्रणाम । २—कहते हैं । ३—जन । ४—भक्त ।

सब वेद सिरजे आपही, लय होत अन्तहि आपहीं ।
जगहेतु भूत विलोकि नाथहिं, दासनितचितथापहीं ॥
ब्रह्माण्ड चक्र सुभ्रमत तुमसों, आपही जगनाथ हौं ।
तुव चरनकमलविलोकिप्रभुवर, भक्तियुतनतमाथ हौं ॥
तोहिं हृदय मंदिर राखि रघुवर, सुद्ध चित्त लगाइहौं ।
तब पाय परमानन्द माधव, परमधाम सिधाइहौं ॥
वाचक प्रनव है आपका, जो मुक्ति बीज विराजता ।
आप अक्षर रूप हौ प्रभु, चरन तुव जग पूजता ॥
नमते ऋषीगन नित्य हीं, करिके स्तुती सुर सेवते ।
प्रबिसत यती सब आपमें, जो ब्रह्म रूप निषेवते ॥
सब वेद वेद्य अभेद्य प्रभुवर, सरन गहत जे आपकी ।
पाते सनातन सान्तिते जन, रहति रटिजिन्ह जापकी ॥
सब सृष्टि के करता प्रभो तुम, वेद भेद बतावतो ।
पालत हरत जग सर्वदाहीं, नाथहीं सिर नावतो ॥

दिग्पाल छन्द

हे राम प्रान दाता, विधु सूर्य पवन धाता ।
अक्षर तुम्हीं हो ज्ञाता, तुम विश्व के विधाता ॥
तू विष्णु जग कहाता, ब्रह्मा भी विश्व ख्याता ।
शिवनाम करके भाता, अब, तेज, तोहि ध्याता ॥
तम के हौ तुम हरैया, भवपार के करैया ।
दासों के मल नसैया, जन कष्ट के दुरैया ॥

१–कारन स्वरूप । २–शिर नवाता हूँ । ३–अबिनासी । ४–जो जानने योग्य

मस्तक तुम्हैं झुकाऊँ—भक्ती तुम्हारि पाऊँ।
यहि भाँति मैं रिझाऊँ साकेत धाम जाऊँ॥

दोहा

रूप चतुर्भुज दूरि करि, द्विभुज भये श्रीराम।
पवनसुतहिं दरसन दियो, लहेउ अमित अभिरामं॥१२६

सोरठा

अस्तुति सुनि हनुमान, बोले श्री रघुनाथ जू।
दैहों तिन सन्मान, अस्तुति जे यह पढ़हिं जन॥६
पैहैं ते मम धाम, सुनहु पवनसुत वचन यह।
करहु सबै तुम काम, सुस्थिर मन ह्वै के सदा॥१०

दोहा

सरग पञ्चदस पूर भो, श्री हनुमान प्रसाद।
तेजभानु वरनन कियो, सुनतै मिटै बिषाद॥१३०

१—आनन्द।

इति श्री रामायणे पंचदश सर्गः समाप्तः।



अथ षोड़श सर्ग प्रारम्भः

दोहा

सरग तरक विधु कहौं अब, जुद्ध दसानन राम ।
करि सुकराठ सों मित्रता, हति अरिगे निजधाम ॥१३१

चौपाई

बचन मृदुल बोले रघुबीरा । कथा हमारि सुनहु कपिबीरा ॥
हरी दसानन प्रिय वैदेही । इत उत खोजौं कपि वर तेही ॥
सुनि हँसि बोले पवन कुमारा । सुनहुनाथ मम वचन उदारा ॥
लागै हँसी अकंनि प्रभु बचना । प्राकृत नर इव करत हौ रचना ॥
है सर्वज्ञ अज्ञ इव ताता । कहहु मोहि सन तुम यह बाता ॥
या में गूढ़ तत्व कछु भासै । जो मम चित्त न नेकु प्रकासै ॥
नाथ जो मो कहँ आज्ञा दीना । दास करिहिं सो है लवलीना ॥
अस कहि मुदित चित्त कपिवीरा । लियो बिठाय काँध दोउ बीरा ॥
लै आयो कपि नायक पासा । देखि राम कहँ भयो हुलासा ॥
मोर मनोरथ पूरन भयेऊ । जीत्यों बालि न संसय रहेऊ ॥

दोहा

रुमा प्राप्ति होइहि अबै, संसय मिटा हमार ।
कीन मित्रता राम सों, जानि जगत करतार ॥१३२

१—सुनि के ।

चौपाई

बालि बधन करि श्रीरघुनायक । दीन्हेउ राज सुखद कपि नायक ।।
देस-देस के कपिन्ह बोलाये । पावत खबरि तुरत उठि धाये ।।
हनूमान अंगद के ऊपर । राम लखन गे सागर तट पर ।।
गे सुग्रीव साथ रघुराई । कपि सेना तदनन्तर आई ।।
सागर पार पुरी है लंका । देखि राम बोले निःसंका ।।
हे लछिमन तुम करहु उपाई । जा विधि पहुँचौ लंका जाई ।।
लछिमन पुनि सागर सों बोलेउ । अचल होहु तुम तनिक न डोलेउ
उतरै वानर कटक अपारा । करहु यतन सुनि वचन हमारा ।।
यह निदेस सागर नहिं भावा । तब सौमित्रि कुपित ह्वै धावा ।।
कूदि पर्यो सागर मधि जाई । ताको जल निज ज्वाल सुखाई ।।

दोहा

जीव जन्तु व्याकुल भये, डरे सकल तब देव ।
चहुँ दिसि कहँ भागन लगे, पाये कछुक न भेव ।।१३३

चौपाई

अद्भुत लीला कपिन जो देखा । विस्मित भयो समस्त विसेखा ।।
चर अरु अचर लोक समुदाई । हाहाकार कीन्ह तब भाई ।।
स्वस्ति स्वस्ति बोले ऋषि बानी । अनुमोदन कीन्हेउ सब प्रानी ।।
लछिमन प्रति बोले रघुराई । तात उचित नहिं कीन उपाई ।।
सीता विरह विकल मैं भाई । भरि हौं सागर आँसु बहाई ।।
अस कहि वारिधि पुनि भरि दीना । सुमन वृष्टि सब देवन्ह कीना ।।
थिर भे लोग बिज्ञ गुनवाना । लागे करन विचार महाना ।।
जलनिधि स्तुति कीन्हेउ प्रभु केरी । बांधेउ सेतु न लायउ देरी ।।
वारिधि पार गयो तब लंका । मारेउ सदल दसानत बंका ।।

सारा तिलक बिभीषन जबहीं । पुलकित भयो लंकपति तबहीं ॥
पुष्पकयान बिभीषन आना । राम समीप धरेउ मति माना ॥
सीय बुलाय यान बैठाई । सखा सहित चलि पुर नियराई ॥

दोहा

पहुँचि अयोध्यानगर महँ, भ्रातु मातु पुरलोग ।
दीन्हेउ सबहिं अनन्त सुख, रघुपति मेटेउ सोग ।१३४
पाय अवनिपति रामकहँ, सुखी भये सब जीव ।
नभ बाजे बाजन लगे, बरषहिं सुमन अतीव ॥१३५॥
यथा समय बरषहिं जलद, सुखी रहहिं सब लोग ।
पितु आगे सुत मरैं नहिं, लहैं सदा सुखभोग ॥१३६॥
सर्ग तर्क[1] बिधुपूर[3] भो, सीतानाथ सहाय ।
"तेजभानु"बरनन कियो, सुनत कथा दुख जाय॥१३७

१—पृथ्वी । ६ । ३—चन्द्रमा ।

इति श्री अद्भुत रामायणे षोडश सर्गः समाप्तः ।



अथ सप्तदश सर्ग प्रारम्भः

दोहा

सर्ग सप्तदश कहौं अब, कथा सुधारघुबीर ।
आय चहूँदिसि से ऋषी, अस्तुति कीन गंभीर॥१३८

चौपाई

आये मुनिगन नाना देसा । अभिनन्दन हित श्री अवधेसा ॥
पूरब दिसिवासी जे मुनिवर । नाम निरूपौं तिन्हकर द्विजवर ॥
विस्वामित्र, रैभ्य, यवक्रीता । च्यवन, कण्व आये सुपुनीता ॥
दच्छिन दिसिवासी जे अहहीं । तिन्हकर नाम सुनहु हम कहहीं॥
स्वस्त्यात्रेय, नमुच मुनिईसा । घटसम्भव, अरिमुच गुनईसा ॥
पच्छिम दिसि जे विप्रनिवासी । तिनकर नाम कहौं परकासी ॥
कामठ, उपगु, धूम्र मुनिजेष्ठा । रौद्राश्वहु आये मुनि श्रेष्ठा ॥
उत्तर दिसा निवासी आये । मुनि वसिष्ठसह सिष्य सुहाये ॥
राम राजधानी मुनि आये । लिये फूल फल पानि सुहाये ॥

दोहा

परम मनोहर नृपभवन, निरखि मुदित भे विप्र ।
राम भवन महँ प्रविसि सब, बैठे आसन छिप्र१ ॥१३९

चौपाई

अग्नि सरिस दीपत मुनिवृन्दा । निरखि मुदित भे रघुकुल चन्दा॥

१—शीघ्र ।

साधुवाद रघुवर कहँ देहीं । अरघ पाद्य मधुपर्क ते लेहीं ॥
राम जानकी अनुज समेता । मन्त्री अरु पुरवासि सहेता ॥
पूजेउ सविधि सकल मुनि पाँती । भागि सराहत निज बहु भाँती ॥
घट सम्भव आदिक विज्ञानी । प्रभुहिं सराहत जगपति जानी ॥
हौ प्रभुवर तुम जग उपकारी । रावनादि दल नासेउ भारी ॥
दसमुख सरिस दुष्ट कोउ नाहीं । मार्‌यो निसिचर अति खल काहीं
जासु त्रास कम्पित त्रयलोका । सकल सुरासुर रहत ससोका ॥
ताहि मारि आनंद अति दीना । सब कहँ परम सुखी प्रभु कीना ॥
द्विज देवता साधु सुर लोगा । करन लगे जप तप मख योगा ॥

हरिगीतिका

श्रीनाथ हेरघुनाथ प्रभुवर, जगत हितकारी सही ।
वधकरिदसाननसकुल, जनकहँअमितसुखदीन्हेउमही
उपज्यो जगत जनु बहुरि नूतन, दुखित रावनतापसों।
दसकण्ठ सासन व्याप्तजगसब, पार कियतेहि पापसों

सोरठा

अनुनंय धाता कीन, पहिले सब कहँ दुखित लखि ।
ताहि मानि प्रभुलीन, दसरथ गृह प्रगटत भयो ॥१३९

दोहा

कमलनयन आजानु भुज, स्यामगात रघुबीर ।
वन्दित सुकसनकादि सों, हरेहुसकल भवभीर॥१४०॥

चौपाई

हम सब दरसन पाय अनन्दे । निरभय बिचरैं तव पद बन्दे ॥
तव प्रसाद निरभय मुनिझारी । करहिं तपस्या होहिं सुखारी ॥

१—विनती ।

किन्तु खिन्नमन सीय लखाहीं । कारन नाथ कहौ मोहिं पाहीं ॥
सुनि मुनि वचन हँसीं तब सीता । बोलीं गूढ़ गिरा सुपुनीता ॥
रघुपति अस्तुति कीन्हेउ भूरी । रावन वधहित हे स्त्रु तिसूरी[1] ॥
है परिहास योग मुनिराया । राम सुजस जो सब मिलि गाया ॥
रहा यथारथ दसमुख पापी । लम्पट लोलुप जगपरितापी ॥
पर विसेष अस्तुति नहिं योगा । दसमुख वध मुनिनायक लोगा ॥
सुनि मुनि वृन्द वचन वैदेही । विस्मित ह्वै कछु कहेउ न तेही ॥
का यह कहति जानकी सीता । रघुकुल बधू सती सुपुनीता ॥

दोहा

एक एक कर लखैं मुख, सुनि वैदेही बैन ।
हँसी करति सिय वचन मम, जानि न पायों सेन ।१४१

चौपाई

ज्ञानिन्ह केरि स्रवन करि बाता । बोलीं सीता हर्षित गाता ॥
प्राकृत जन इव मैं मुनिनाहीं । नहिं असत्य भाषौं तुव पाहीं ॥
आयसु देहु मोहिं मुनिराई । कथा पुरातन कहौं सुनाई ॥
घटसम्भव तब बोले बानी । रामचरन रत प्रिय सब प्रानी ॥
बरनहु कथा जो जानहु नीकी । कहहु प्रतीति प्रीति रुचि जीकी ॥
पति, देवर, मुनि, सचिव समेते । रहे सभासद जे केउ तेते ॥
दीन रजायसु सीता काहीं । कहहु सुखेन कथा मों पाहीं ॥
रहेउँ तात गृह जब लरिकाईं । अतिथि बिप्र आयो तेहि ठाईं ॥
कहेउ तात सन बात जनाई । रहिहौं चारि मास ढिगसाईं ॥
राजन मम सेवा जो करिहहु । सुरसम ह्वै यस जग विस्तरिहहु ॥

१—हे वेद बुद ।

दोहा

विप्र वचन सुनि भूपमनि, विधिवत दीन सुपास ।
आदर कीन यथोचित, अतिथि विप्र दै वास ॥१४२॥

चौपाई

पिता हमारे द्विज सुर सेवक । मानत साधु धेनु महि देवक ॥
दै अतिथिहिं भोजन बहु भाँती । अति सन्मान करत दिनराती ॥
द्विज सेवा विधि सब विधि ज्ञाता । कीन नियुक्त हमहिं तब ताता ॥
जब जस विप्र रजायसु पाऊँ । तत्परता ते ताहि निभाऊँ ॥
तनिक नमन महँ आलस आनौं । राति दिवस सेवा सनमानौं ॥
नाना तीर्थाटन द्विज करेऊ । कथा तहाँ की भाषत भयेऊ ॥
मम सेवा धीरता विलोकी । भयो तुष्ट अति परम विसोकी ॥
एक समय प्रियवादी द्विजवर । कथा पुरातन कहेउ विविधतर ॥
तुम सन कथा सोइ प्राचीना । कहहुँ सतर्क सुनहु परबीना ॥

दोहा

परम विवेकी विप्रवर, कीन अरम्भ प्रसङ्ग ।
दै सम्बोधन मोहिं सन, बोल्यो बचन अभंग॥१४३॥

हे सीते अचरज महा, भ्रमत लख्यों जो ताहि ।
तुमहिं सुनावों आदि ते, सुखलहिहौसुनिजाहि॥ १४४

चौपाई

दही, माँड, जल सागर पारा । और मधुर जल सागर धारा ॥
पुष्कर द्वीप घेरि सो रहई । विविधकमल तहँसोभितअहई ॥
अगिनि सिखासम दीपत रहहीं । दस दस सहस पत्र भल अहहीं ॥
द्वीप बरष के बीच हिंमाहीं । मानस उत्तर सैल सुहाहीं ॥

दस सहस्र दीरघतेहि जानौ । तैसेहि आयंत मान प्रमानौ ॥
चहुँ दिसि सैल चारि पुरराजैं । लोकपाल इन्द्रादि बिराजैं ॥
तिनहिं विस्वकर्मा रचिराखा । क्रीड़ा करैं तहाँ हर पाखा ॥
राक्षस एक सुमाली नामा । तासु कैकसी सुता ललामा ॥
मुनि विस्रवा संग सो व्याही । दुइ रावन जायो सों ताही ॥
सहस वदन इक दसमुख भयऊ । महा प्रतापी जगयस ठयऊ ॥
दसमुख रावन लंका रहई । सिव प्रसाद अति सुख सो लहई॥
विधि सों लहिवर भा अति गर्वित । कीन्ह त्रिलोकी अतिसय मर्दित॥

दोहा

लोक रुलावन रावनहि, बसेउ सो पुष्कर द्वीप ।
जीति सुरन्ह मदमत्त भा, राक्षस वंस प्रदीप ॥१४५॥

चौपाई

कन्दुक सम विधुभानु उठाई । गिरिन्हगेंद इव खेलि वहाई ॥
चहुँदिसि पुरी दिगीसन्ह[1] आजै । मानस उत्तर सुन्दर राजै ॥
करहिं जहाँ दिगपाल निवासा । तिनहिं जीति दीन्हेउ अति त्रासा
कुलपरिवार सहित तहँ राजा । रावन राजै सहित समाजा ॥
इन्द्रपुरी जहँ रही सुहावन । रमै तमीचर[3] तहँ मन भावन ॥
मन्त्रीपद दीन्हेंउ बहुलोगा । ते सब हरषे पाय नियोगा ॥
कीन अलंकृत पुरी विसेषा । खींचेउ जनु जगसार निसेषा ॥
चम्पक अर्जुन कदलि तमाला । पाटल जम्बु पनस बट साला ॥
कोबिदार चन्दन सुरदारू[4] । ताल बकुल बहुआम्र[5] मँदारू ॥
सुरतरु, पारिजात, बहुसोहैं । देखत पुरी मुनिन्ह मन मोहैं ॥

१—चौड़ा । २—दिगपाल । ३—राक्षस । ४—देवदारू । ५—आम ।

दोहा

दिव्य गन्ध सों युक्त तरु, फूले फल सब भाँति ।
कूजहिं खग गुञ्जहिं भँवर, केलि करैं दिनराति ॥१४६॥

चौपाई

कनक बरन के पादप[1] राजैं । अगिनि सिखा सम बहुतक भ्राजैं
नीलाचल[2] इव सोभित काहू । सितगिरि[3] समलखि होत उछाहू॥
सलिल सुसोभित बाँपि[4] तड़ागा । मनि सोपान बना चहुँ भागा ॥
सेत कमल के जूथ सुहाये । चक्रवाक[5] बिचबिच अतिभाये ॥
मनि मानिक भूषित रहि धरनी । चित्रित सारदूल किय अवनी ॥
मनरञ्जन हित सबै बनावा । सुख निमित्त यह दृश्य दिखावा॥
सब ऋतु कोयल बोलैं बोली । मधुर मनोहर प्रिय अनमोली ॥
नन्दन बन चैत्रादिक जेते । मन्दर मेरु के पादप तेते ॥
दिव्यपुरी बिलसत है जहँवा । ते सब वृक्ष विराजैं तहँवा ॥
मनि मुक्तामय भूमि विराजै । तासन बेलि बनी अति भ्राजै ॥
राज भवन सोभित सोपाना । छज्जा बने अनेक विधाना ॥
नाकनिवासि मनुज अरुदेवा । करि न सकैं अनुभव पुर भेवा ॥

दोहा

सुभगपुरी महँवासहित, मुनिह्वकरहिं तप घोर ।
रावन सहसवदन तहँ, राज करै वर जोर ॥१४७॥

चौपाई

इन्द्रादिक किन्नर सुर सर्वा । सर्प भीम दानव गन्धर्वा ॥
कीन पराजय इन सब काहीं । बालक सम सब काहिं खेलाहीं ॥

---

१ वृक्ष । २ नील पर्वत । ३ श्वेत पर्वत । ४ बावली । ५ चकवा चकई ।

पर्वत कहँ सरसौं सम जानै । द्वीपह्व ढेला सम करि मानै ॥
गिनै न तनिकहु वीरह्व काहीं । धूरि तूल सम देइ उड़ाहीं ॥
जब सब लोकह्व त्रास सो दीना । मुनि पुलस्त्य विधिवर्जित कीना॥
यहि प्रकार रावन मुनिराया । बसै द्वीप पुष्कर मन भाया ॥
दसमुख रावन तेहि लघु भ्राता । लंका बसै लोक विख्याता ॥
अपर विचित्र कथा द्विज गाई । चौमासा रहि तीर्थ सिधाई ।
गमन समय मोहिं अरु भूपाला । मुदित असीसेउ विप्र कृपाला ॥

दोहा

तीरथ यात्रा कहँ गयो, मुदित चित्त द्विजराय ।
कथा सत्तदस सरग की, पूरन भइ मुनिराय ॥१४८॥

इति श्री अद्भुत रामायणे सप्तदशः सर्गः समाप्तः ।



अथ अष्टादश सर्ग प्रारम्भः

सरग अष्टदस की कथा, सहस वदन संग्राम।
कपिदल पुष्कर पहुँचिकर, जग बोले श्रीराम ॥१४६॥

चौपाई

जब द्विज कथा कह्यो इमि बरनी। सहस वदन की अद्भुत करनी ॥
विस्मय भयो हृदय मम भारी। सुनि यहचरितसुनहमुनिझारी ॥
अजहुँ न भूल्यों मैं सो गाथा। वीर भयङ्कर दस सत माथा ॥
पवनतनय लंकापुर जारा। सेतु बँधायो नाथ उदारा ॥
सदल सपुत्र दसानन मारा। ममहित लागिकरम कियसारा ॥
हनुमदादि सुग्रीव सहाया। कीन अलौकिक करम सुहाया ॥
तदपि न कछु अचरज मुनिराई। सहसवदन जौ लौं न नसाई ॥
जब बधहोय सहस मुख रावन। रघुबर कीरति होइह पावन ॥
पुनि जग निरुजहोय सब भाँती। आनँद लहैं देव मुनि पाँती ॥
द्विजपुंगव छमिये मम हाँसी। कहेउँ कथा जो द्विज परकासी ॥

दोहा

सुनि वैदेही के वचन, धन्यवाद सबदीन।
जगहितकारिनिसीयकहँ भे सराहिसुखलीन ॥१५०॥

चौपाई

कर्ष[1] वचन सीता जब बोली। रघुनायक की मति तब डोली ॥
मुनिगन सुनहु मोरि यह बाता। मरिहौं रावन आजुहिं जाता ॥

१—उत्तेजक।

प्रभु आज्ञा सब भाइन कीना । पुनि सुग्रीवहिं आयसु दीना ॥
सैन सहित चलौं अब तहवाँ । सहसवदन रावनरह जहँवाँ ॥
सुमिरन रघुपति कीह्ना जबहीं । पुष्पक यान प्रगट भा तबहीं ॥
ता ऊपर सब सेन समेता । भरत लषन श्री कृपा निकेता ॥
कपिपति और निशाचर राजा । चढ़ेयान सब सहित समाजा ॥
मात पिता सन कछु नहिं कहेऊ । रामरजायसु धारत भयऊ ॥
सचिव आदि अरु मुनिगन जेते । आयुध वीरन गहे सचेते ॥
कीन्हेंउ सिंहनाद सब घोरा । धनुष बान गहि राम टँकोरा ॥
पृथिवी सैल तुरत चलि गयऊ । गिरैं नखत सरि सूखत भयऊ ॥
ऋच्छराज कपिराज समेते । मनहुँ ग्रसत नभ चले सचेते ॥

दोहा

तब सीता ढिग राम के, बैठि गईं चढ़ि यान ।
आयसु लहि पुष्पक चल्यो, तुरतहिं पवन समान १५१

चौपाई

मनोवेग इव पुष्पक धावा । पुष्कर द्वीप सबन्ह पहुँचावा ॥
मानस उत्तर सैल सुतीरा । उतरि भये विस्मित कपिवीरा ॥
अस विचित्र नहिं द्वीप विलोका । रचना भासत जनु सुरलोका ॥
बार बार इमि भाषन लागे । चहुँदिसि चितवहिं जनुभ्रमपागे ॥
राम सबन्धु सदल किय नादा । नभ थल व्यापेउ जनुघन नादा ॥
रावन चौंकि कह्यो का भयऊ । सहसा उठिद्रुतंद्वारहिं गयऊ ॥
सहस वदन कह व्याकुल देखे । राक्षस गन तहँ भये अलेखे ॥
ताही समय क्रोधकरि वीरा । पहुँचे आय द्वार रनधीरा ॥
कहैं परस्पर सुनहु सुयोधा । महानाद कर करहु सुसोधा ॥

१—शीघ्र ।

कहाँ होत महिरव यह भारी । देखहु भटगंन नयन उघारी ॥
अस कहि असुरन्ह कहँ ललकारा । पुरते बाहर सो पगुधारा ॥
अरुन नयन रावन तेहिकाला । चला संग लै सेन विसाला ॥
द्वादस रविसम तेज विराजै । जगमहँ कहुँ प्रतिपंच्छि, न आजै ॥

दोहा

सहस वदन रावन नयन, दुइ सहस्त्र परमान ।
भुज प्रमान त्यों जानिये, भरद्वाज मतिमान ॥१५२
सौ योजन विस्तार युत, रथ पै आयुध धारि ।
गर्जत तर्जत मेघसम, चल्यो भटन्ह ललकारि ॥१४४

चौपाई

परिघ प्रास तोमर अरुमुद्गर । चक्र भुशुण्डी परसु उग्रतर ॥
घण्ट विपांट धनुष अरुबाना । लिये करन महि आयुधनाना ॥
जहाँ राम राजैं तेहि ठामा । क्रोधवन्त धायोरन कामा ॥
रिसि वस अरुननयन करि आवा । अगिनि समान रोष दिखरावा ॥
अस को योधा जगत बलीना । सिंहनाद जो मम पुर कीना ॥
इन्द्र आदि लोकप सब देवा । मम आधीन करैं नित सेवा ॥
मम प्रभाव कम्पै त्रयलोका । रहत सभय सब निजनिज ओका ॥
सैल सकल चूरन करिडारौं । महि उठाय अहिराज बिदारौं ॥
सुरलोकहिं नरलोक बनावौं । नरलोकहिं सुरलोक सजावौं ॥
ब्रह्मा लखि अस मोर विचारा । बरजेउ हमहिं देव ऋषि द्वारा ॥

दोहा

नतरु विस्वमनुजादमय, दीखत मनुज न एक ।
दिनकर हिमकर रूप ह्वै, करतेउँ तिथिन्ह विवेक ॥१५४

१—दुश्मन । २—काँटादार अस्त्र । ३—मुक़ाम । ४—शेष ।
५—नारद । ६—निशाचर ।

चौपाई

लोकपाल के जेते करमा । सब करिसकौं त्यागि सब धरमा ।।
यहि प्रकार गरजत अभिमानी । आवा निकट राम धनुपानी ।।
राक्षसेन्द्र रावन के संगा । सेनाध्यक्ष चले बहुरंगा ।।
बहु प्रकार आयुधकर धारे । नाना बेष धरे मतवारे ।।
रथ अनेक पैदल बहुलोगा । एक से एक रहे भट योगा ।।
भरद्वाज बरनौं तिन्ह नामा । जे वर वीर ख्यात सुभ नामा ।।
कोटिश, मनस, पूर्ण, शलपाला । चक्र, हलीमुख, पिच्छल, काला ।।
कौणप, कालवेग, अरु कक्षक । करभ, कालदन्तक, जगभक्षक ।।
पुच्छाण्डक, मण्डलक, कुमारक । पिण्डसेकता, मूक, प्रकालक ।।
उच्छिख, भद्र, रभेणक, शलकर । जेता विश्व, विरोहण, मुदगर ।।

दोहा

पारावत, पाण्डुर, हरिण, शरण, शरभ, अरुमोद ।
सहतापन, कुण्डर, क्रूकर, विहँग, दक्ष, परमोद ।। १५५

चौपाई

कनक बाहु, बैणी, अरुवेनी । शंखवेग, धूर्तक, कृशसेनी ।।
महाहनू, रेषण, शशरोमा । पारियात्र, पातकहु सुरोमा ।।
स्कन्द, पात, बाहुक, व्यय, पिटरक । शंकुकर्ण, भैरव पिण्डारक ।।
पूर्णामुख, प्रभाव, हरि, शकुली । सेचकमुख, कुटीर अरु बकुली ।।
ऋषभ, चोडपालक अरुमानस । मुण्ड, सुषेण, बराहक पानस ।।
कामठ, माहिठ, पाट सुवासक । वेगवान, रक्ताङ्ग, सुचित्रक ।।
तरुणिक अरुणि पराशर वीरा । मणि स्कन्ध रावणक सुधीरा ।
सेनाध्यक्ष मुख्य जे रहेऊ । तिनके नाम बखानत भयेऊ ।।
आगिल कथा सुनहु हे मुनिवर । रहे निशाचर सकल वीरवर ।।
भटगन अपर रहे परधाना । भय विस्तार न कीन्हेउ गाना ।।

दोहा

युद्ध हेत जे वीरवर, आये जहँरन खेत ।
नहिं लेखा मैं करि सकौं, तिनकर सुनहु सचेत ॥१५६

हरिगीतिका

कोउ नील रक्त सुफ़ेद बहुतक, घोर बीर भयङ्करा ।
कोउ सप्तशिर कोउ युग्ममस्तक, पंचमस्तक बहुकरा ॥
कालाग्नितुल्य अनेक योधा, अनल सम बहु राजहीं ।
कोउ शैल शृंग समान ऊँचे, दीर्घविग्रह भ्राजहीं ॥
कोउ कामरूप विरूपधारे, एक योजन आयता ।
कोउ युग्म योजन उच्चविग्रह, कामबल कमनीयता ॥
धारे अनेकन्ह शूल पट्टिश, राजते रन खेत में ।
कोउ दिव्य आयुध धारि करमें धावते रनहेत में ॥१७

दोहा

रावन सैनिक और जे, सुनहु नाम परबीन ।
बरनौं तुव लखि लालसा, कथा सुधारस लीन ॥ १५७

चौपाई

शंकु कर्ण अरु पद्म निकुम्भा । द्वादश भुज अनन्त वसु परभा ॥
कपिस्कन्ध, घ्राणास्त्रव, कृष्णा । महाजलन्धम, पुनि उप कृष्णा ॥
काञ्चनाक्ष, कुनदीक्र, अजोदर । सहसबाहु, क्षितिकम्प, महोदर ॥
तमो,ऽभ्रकृत, एकाक्ष, कराला । अक्षसंतर्दन, विकट, विशाला ॥
द्वादशाक्ष, अनुनाम, एकजरा । व्याघ्र सुवक्त्र, और गजशिरा ॥
नान पुण्य, प्रियदर्शन, नन्दा । शतलोचन, पारश्रित वृन्दा ॥
अस्कन्धाक्ष, कोकनद, वीरा । ज्वालजिह्व, सितकेश, शरीरा ॥

चतुर्दंष्ट्र अरु हैं विकृताक्षा, । मेघनाद पृथु स्त्रक्उदराक्षा ॥
ओष्ठजिह्व, वृष मेष प्रवाहा । धनुर्वक्त्र, वैतालि, सुवाहा ॥
वज्रनाभ, मरुताशन, वीरा । उदधिवेग, ध्रुव ए रनधीरा ॥
गिरिकम्पी, स्वस्तिक वैताली । धूम्रश्वेत, गायन, गतिताली ॥
वरद, कलिंग, प्रियक एकनन्दा । उन्मादन, सिद्धार्थ अनन्दा ॥

दोहा

क्षेमबाहु, बहुवीर्य सब, खड्ग, प्रमोद, प्रहास ।
तेजवान, सुव्रत, कथक, करहिं महा परिहास ॥१५८
सिद्धपात्र, गोव्रज प्रमुख, हंसज नन्दक जान ।
कनकापीड़ समुद्र, पुनि, वीर्यवान दम बान ॥१५६
महा पारिषदेश्वरहु, वेतसिद्ध बलवान ।
वातिक, पँकदिग्धाङ्ग सब, गहे रणोत्कट बान ॥१६०
रावण सेनापति सकल, आयुध गहे अनेक ।
चढ़े हंस वृष मेष पै, चले अभय सविवेक ॥ १६१

सोरठा

सिंहनाद किय घोर, पहुँचे जबरन खेत महँ ।
कीन सबै बहुशोर, युद्ध राम सों करन लगि ॥ १२

दोहा

सरग अष्ट दस पूर भो, श्रीहरि कृपा प्रबीन ।
देखहु रावण राम कर, युद्ध विचित्र नवीन ॥ १६२

इति श्री अद्भुत रामायणे अष्टादश सर्गः पूर्णः

अथ एकोनविंशसर्गारम्भः

दोहा

सरगनन्द ससि कहौं मुनि, रावन पुत्रन्ह सैन ।
बरनन जामें विपुल है, सुनहु निगमयुत बैन ॥ १६३

चौपाई

रावण औरस सुत हैं जेते । महा घोर राक्षस सहतेते ॥
धाये सेनप सँग तहँ सारे । तासु नाम बरनौं बल भारे ॥
कालकण्ठ, प्रभाष, कुम्भाण्डक । कालकक्ष, भूतल संचानक ॥
शित, उन्मथन, तुहार सुबाहू । देवयाजि, सोमप, यज्ञबाहू ॥
महा तेजसी, तुहर, प्रबाहू । मधुर, वसुव्रत, रजदँउबाहू ॥
सूप्रसाद, कलशोदर, धर्मद । महाबली, मधुवर्ण, कोकनद ॥
क्रथ, मञ्जाल, किरीट, सुवक्त्रा । वीर्यवान अरु सूचीवक्त्रा ॥
चित्रदेव, पाण्डुर, शुभवक्त्रा । क्राथवसन, कुञ्जर, सितवक्त्रा ॥
अचल, बाल भक्षक, मन्मथकर । बालेश्वर, कोकिलक, नामवर ॥
जम्बुक, मुण्डग्रीव, गृधपत्रा । कृष्णौजा, लोहाजव, वक्त्रा ॥
कालकाक्ष, निसिचर, हँसवक्त्रा । कुँजर जवन, अपर कुँभवक्त्रा ॥
रावणसुत तजे विकट सुयोधा । कहेउँ नाम तिन्हके निजबोधा ॥

दोहा

नाना मुखहारे सबै, नाना बाहन बेस ।
तिनपर चढ़ि धावत भये, तुरतहि कीन प्रबेस ॥ १६४

१—वेद । २—सगे ।

पुष्कर पतिसुत की अनी, बनी विचित्र विशाल।
मुख्य मुख्य जे भट रहे, बरनेउँ तिन्हकर हाल ॥१६५

चौपाई

सहस बदन सुत रहे घनेरे। महापराक्रम शूर बड़ेरे ॥
निज भुजताल देत सबवीरा। सिंहनाद करि करत अधीरा ॥
सहस अरब सेना रहि जिनकी। बहु मुख विकट कुढंग करन की ॥
कोउ कच्छप मुख, अहिमुख केहू। कुक्कुट, जम्भक, शशक मुखेहू ॥
जम्बुक, खर, बराह मुख हारे। ऊँट भेड़ बिड़ाल मुखवारे ॥
बहुतक काक नकुल मुख केरे। बहु उलूक मुखदीर्घ मुखेरे ॥
नरमुख मत्स्य मोर मुखवारे। महिषी अजावदन बहुकारे ॥
बड़वा रीछ बदन बहुतेरे। बाघ सिंह गज गोमुखकेरे ॥
केहूँ कपोत कोकिल मुख केहू। नक्रबाज तीतर मुखकेहू ॥
महाजरठ नासा बिनु आहीं। काहू रहे जिनहिं पग नाहीं ॥
मुख कृकलास व्यालमुख केऊ। चण्ड शुकानन सुन्दर भेऊ ॥
चित्थड़धारे कोउ कृश अंगा। स्थूलोदर कृश उदर बेढंगा ॥

दोहा

बहुतक व्यालविभूषणहिं, धारेउ हस्वग्रीव।
केतिक धारे चर्म गज, पुत्र सहस्रग्रीव ॥१५७॥

कवित्त

कोऊ पीठि मुख हनुमुख जंघमुख कोऊ, पार्श्वमुख कोउ अंग अंग मुखवाले हैं। कोऊ कीटमुख बहुमुख सिरबाहु कोऊ, बन्त हैं अनेकमुख भुजग निराले हैं। खड्ग वृक गरुड़ समान मुखवारे कोउ, देह अंग रक्षक फलक वस्त्र घाले हैं। नाना वेषधारे नाना

१—पुष्कर द्वीप के स्वामी के पुत्रों की सेना।

मालिका सँवारे, अनुलेपन लगाये सुखसाज मतवाले हैं ।। १ ।। धारे वरवसन चरम अरु पाग सिर, सुन्दर मुकुट शंख ग्रीव कान्ति साने हैं । कोऊ पंच सिख कच कठिन त्रिसिख कोउ पत्त सिख कोऊ सात सिखनि सजाने हैं । मुकुट विहीन मुंड चित्रमाल धारी कोउ, कोऊ रोम आनन शिखण्डी रूपताने हैं । पीठि दीर्घ आयत उदर निर मांस मुख, खरब महान बहु भुजनि बखाने हैं ।। २ ।। कोऊ खर्वकाय लघु जंघ कूबरे हैं कोउ करिके समान कान कन्ध घ्राणवारे हैं । कोऊ वृक नास कुर्मनास कोऊ दीप्ति-भानु-वारणेन्द्र के समान डील डौल हारे है । कोऊ पिङ्गलाक्ष शङ्कुकर्ण वक्र नास कोऊ, कोऊ दीह दाढ़ होठ दीरघ निनारे हैं । हरित शिरोरुह अनेक पदबाहु शिर, छादित चरम वर वस्त्रन सँवारे हैं ।। ३ ।। परिघ समान भुज दीह ग्रीव नखवारे, नीलकण्ठ स्वर्णकर्ण अञ्जनाद्रिसम हैं कोऊ सितनयन अरुन कन्ध पिंगनैन, कोऊ भुजकारे कोऊ बरन विषम हैं । नाना रंग रञ्जित सुवर्ण मोर के समान, दीप्तिमान दमकत चमचमचम हैं । कोऊ पाश हाथन उठाये मुख बाये कोऊ, रेंकत समान गरदभ हरदम हैं ।। ४ ।।

पद्धरी छुन्द

कोउ धरे शतघ्नी चक्र हाथ, कोउ मूसल मुग्दर दंड साथ । कोउ गदा भुशुण्डी चन्द्रहास, तोमर पट्टिश कोउ तीव्र प्रास । १ । या बिधि सजि सजि सब शूर बीर, करि सिंहनाद धाये अधीर । रणआँगन निरतत गाय-गाय धरु मारु-मारु बोलहिं रिसाय । २ । गे सकल दौरि रघुनाथ पास, बहु बकत

१—सहस्रवदन ।

झकत करि अट्टहास। धरि पकरि लेहु जनि भाजि
जायँ, इमि बोलहिं सब रघुबर सुनाँय ॥ २२

दोहा

या विधि सेना सकल सजि, गई युद्ध के हेतु।
'तेजभानु' निधिशशि सरग, कहेउ सुमिरि वृषकेतु १६७

इति श्री अद्भुत रामायणे एकोनविंशः सर्गः समाप्तः।



अथ विंशतितमसर्गारंभः

दोहा

सर्ग बीसवां कहौं अब, संकुल युद्ध महान ।
राक्षस बानर गणनकर, सुनहु शिष्य मतिमान ।१६८

चौपाई

सहस वदन तब धनु टंकोरा । चिन्ता मन में कीन्हेउ घोरा ॥
कौन कहाँ ते यह भट आवा । हमहिं महा उत्कर्ष जनावा ॥
ताही समय भई नभ बानी । आये रामचन्द्र रण ठानी ॥
धन्वी वीर धर्म कर रूपा । राज्य अयोध्या के वर भूपा ॥
लंका रावण जिन वध कीना । राज्य विभीषण कहँ पुनि दीना ॥
वानर रीछ निशाचर वीरा । लाये तव वध हेतु सुधीरा ॥
लोक रुलावन रावन सुनेऊ । अतिसय क्रोध करत सिर धुनेऊ ॥
वचन सकोप कहेउ तब रावन । वैरी नर कहँ हतिहौं चावन ॥
मोहिं जग विजयी जीतन हारा । आयो को है युद्ध मझारा ॥
यही प्रकार कहि तबहीं रावन । धनुष बाण लै कीन्हेउ धावन ॥

दोहा

पर्वत, तोमर, चक्र, गहि, पुष्पक पैं किय घात ।
घोर तमीचर वाहिनी, खायो कपि संघात[1] ॥१६९॥

1—संघात - समूह ।

चौपाई

घोर निशाचर अनी समूहा । भच्तरिच्छ कपिन कर जूहा ॥
पटकेउ वहुतक गर्वित वीरा । कीन्हेउ काहू परम अधीरा ॥
रीछ वानरी सैनहिं रघुवर । रावण अनुचर हतेउ बाण वर ॥
दोउ दल युद्ध करन तब लागे । भिड़हिं परस्पर सब भय त्यागे ॥
रात्तस वानर गिरहिं अचेता । भये मलिन मन कछुक सचेता ॥
तब श्रीराम सुमित्रा नन्दन । भरत शत्रु सूदन जग वन्दन ॥
हनूमान सुग्रीव विभीषन । जामवन्त नल नील कोपिरन ॥
कीन युद्ध अति विकट रणाङ्गन । समर भूमि मारेउ निशिचर गन
भाजि निशाचर करहिं कोलाहल । युद्ध त्तेत्र महँ मचा हलाहल ॥
जे रण विमुख भये नहिं वीरा । ते जनु हर्षहिं पायउ हीरा ॥

दोहा

महो धड़ाका नाद् सों, काँपि उठी तेहि काल ।
सिंहनाद् करि पूर्णकिय, नभहिं तमीचर पाल ॥ १७०

चौपाई

वानर हाथ शिला सब लीन्हें । तिनसन निशिचर रणमन दीन्हें
नर रात्तस वानर सो भाई । रात्तस सेना कीन लड़ाई ॥
भीड़ भई तवरथ हयहाथी । किंकिणि नाद सुनेउ सब साथी ॥
सब दिशि पूरि रही तेहि काला । रजनी चरन समूह विशाला ॥
देखिति नहिं सब वानर वीरा । धाये क्रुद्ध सकल रण धीरा ॥
शिला विटप गहि २ सब मारहिं । मारि चपेटन उदर विदारहिं ॥
शिखर उठाय बली मुख तर्जहिं । निश्चिर गणहिं मारि महि मर्दहिं
गजरथ तुरगारुढ निशाचर । नखन विदारहिं तिनकहँ तरुचर
मारि मुष्टिका आँखि निकारहिं । गर्जहिं तर्जहिं मही पछारहिं ॥

दोहा

यहि विधि मारु खाय सब, कम्पहिं निशिचर वीर।
रोवहिं करमलि गिरहिं महि, चिघरहिं निपट अधीर १७१

पद्धरी छन्द

फिर शूल वज्र मुष्टिकन मार, भरि गई मेदिनी रक्तधार। वानर सुवीर सब धाय धाय, करि दई व्यथित निशिचर निकाय। इमि निरखि पराक्रम करतकीश, भे परम क्रुद्ध राक्षस अनीश। गिरि शिखर मारि मर्दहिं प्लवङ्ग[1], धरि बाहुन फेंकहिं अति उतङ्ग[2]। यहि भाँति वानरन मारुखाय, भिरिगये हृष्टमन पुलककाय। राक्षस सों राक्षस मारि मारि, गहि रथी रथहिं पटकहिं प्रचारि। या विधि राक्षस अरु सकल कीश, लड़ि रहे परस्पर जनु गिरीश[3]। गिरि पादप गहि बहु अस्त्र शस्त्र, करि दई एक एकहिं निरस्त्र। करि छिन्न-भिन्न राक्षस निकाय, जय बोलहिं वानर मोद-पाय झरिरह्यो रुधिर झरना समान निशिचरं गणदेहिन सों भयान। अतिभयो कोलाहल शब्द घोर, राक्षस रजधानी चहूँ ओर। अति भे प्रसन्न मुनिवर निकाय, कपि सिंहनाद किय मोदपाय ॥२३॥

दोहा

विंशतिसर्ग समाप्त भो, भुवनेश्वरी प्रसाद।
"तेजभानु" वर्णन कियो सुनतहिं मिटै विषाद॥१७२

इति श्री अद्भुत रामायणे विंशतितमः सर्गः समाप्तः।

१—प्लवङ्ग-वानर। २—ऊँचा। ३—हिमालय।

अथ कविंश सर्ग प्रारम्भः

दोहा

सर्ग भूमि युग कहौं अब, राम सैन्य विक्षेप ।
जा में वर्णन भूरि है, कहौं ताहि संक्षेप ॥१७३॥

चौपाई

पवन तुल्य गति रथ आरूढ़ । रावण चला शक्ति गहि गूढ़ा ॥
पैठेउ राम सैन महँ भारी । झष पैठत जस जलनिधिबारी ॥
सहसवदन निरखेउ कपि हीना । छन महँ सबहिं चहेउ बध कीना ॥
हृदय विचारत बहु यहि भाँती । आये पामर ए तजि थाती ॥
नेकु न मोह प्राणकर कीना । चलिदीना रण खेत नवीना ॥
द्वीपान्तर महँ आय विराजे । मोसन ठाने रण बल साजे ॥
इन कर बध कीन्हे ममहासा । होइहैं सुयश न शूरन्ह पासा ॥
यहि कारण पहुचावौं देशा । आये जहँ ते स्वामि निदेशा ॥
पामर नर बानर प्रति वीरा । कबहुँ न अस्त्र गहैं रण धीरा ॥
अस विचार करि कीन प्रयोगा । वायव्यास्त्र करि धनुष संयोगा ॥

दोहा

छाँडि अस्त्र कपि सैनपै, भेजेउ निज निजदेश ।
जिमि तस्कर कहँ राजभट, बाहर करहिं हमेश॥१७४॥

चौपाई

अस्त्र वेग सेते सब बीरा । पहुँचे निज गृह भये अधीरा ॥
कहाँ रहे हम आये कहँवा । स्वप्न तुल्य मानेउ यह तहँवा ॥
प्रलय पवन इव अस्त्र महाना । आहत कियो हमहिं मनमाना ॥
भरत लषन रिपु सूदन जेते । पवन तनय नल नील समेते ॥
अरु कपिराज विभीषण सर्वा । नर वानर जे रहे अखर्वा ॥
निराघात निजसदन सुहाते । केवल रामहिं हित पछिताते ॥
सीता सहित राम तहँ राजैं । पुष्कर द्वीप पुष्पकहिं भ्राजैं ॥
अस्त्र वेग नहिं राम दुरायो । समरथ जानि न कछु करि पायो ॥
मुनि जन लखि २ अचरज कीना । सीतहुँ तहाँ रहीं आसीना ॥
राम अनीजहँ तहँ पहुँचाई । मायामय यह कौतुक भाई ॥
अस विचारि मुनि स्वस्ति उचारे । शान्ति सूक्त तब मनमहँ धारे ॥
हा हा कार कीन नभचारी । शक्रदेव आदिक मयभारी ॥

दोहा

कीन्हेंउ रावण काह यह, सुरगण करहिं विचार ।
भरद्वाज सुनुरण कथा, जो है अति बिस्तार ॥१७५

चौपाई

गरुड़ारूढ़ विष्णु जब आये । सहस बदन बध हेत सुहाये ॥
अट्टहास करि तब सोइ योधा । फेकेउ श्री हरि जलधि सक्रोधा ॥
हँसत वामकर कीन्हेउ लीला । जानहिं सुर समूह गुण शीला ॥
तब सों नहिं फटकहिं यहि वोरा । सुर किन्नर नर सब मुखमोरा ॥
गन्धपाय भागहिं सब लोगा । जम्बुक यथासिंह संयोगा ॥
सोइ अवतरेउ हरण महिभारा । कोसलेश दशरथ आगारा ॥
जीतैं राम हमारे भागा । कहहिं देवता मरहि अभागा ॥
सुर सब अन्तर्हित ह्वै करहीं । जय जय श्री राघव उच्चरहीं ॥

सहस बदन पुनि गर्जन ठाना। श्री राघवहिं अवल करिमाना ॥
दुष्कर कर्म राम तेहि देखा। विस्मित ह्वै रिस कीन विसेखा ॥

हरिगीतिका

श्रीराम राघव पद्मलोचन, कोह सो तव भरि गये।
जय कामना करिवीर पुंगव, मान मर्दन हितरये ॥
नहिं सक्यो करि रघुबीर पै, रिपुवार कछु संग्राम में।
तत्कालधरणीवारिनिधिग्रह,कँपिउठ्योविश्राममें ॥ २४

दोहा

रावण वध प्रति कोप लखि, रजनीचर करिशब्द।
किलकिलात धाये सबै, घर्घराहिं जिमि अंब्द[1] ॥ १७६
सर्ग भूमिं युंग पूर्णभो, श्री राघव परसाद।
"तेजभानु"वर्णन कियो, सुनतहिं मिटै विषाद॥ १७७

इति श्री अद्भुत रामायणे इत्येकविंश सर्गः पूर्णः

१—बादल



अथ द्वाविंशतितमः सर्गारम्भः

दोहा

द्वाविंशतितम सर्ग में, युद्ध कथा श्री राम ।
सहस बदन सन जस भई, सुनहु मुनी सुखधाम॥१७८

चौपाई

रिपुगण नाशदक्ष श्रीरामा । धाये गरजन सुनि तेहि ठामा ॥
प्रलय अनल समधनु टंकोरा । बेधेउ हिये तमीचर घोरा ॥
छाँड़िविशिख[1] बहु श्रीरघुराया । निमिष मात्र रिपुदलहिं नसाया ॥
श्रीरघुनन्दन रिपुगण मारहिं । यथा रुद्र पशुगण संहारहिं ॥
रामपराक्रम देखेउ रावन । कीन युद्ध अतिसय मनभावन ॥
सेना सों रावन तब बोला । बचन वीर रस सहित अमोला ॥
सेनप सकल लखहु अब ठाढ़े । हतिहौं मैं अकेल रण गाढ़े ॥
पृथिवी आजु मनुज ते हीना । करौं स्वर्ग कहँ देव विहीना ॥
सागर सोखउँ अब छन माहीं । पर्वत चूर करौं लवमाहीं ॥
ग्रहगण कहँ धरि धरणि गिरावौं । तब मैं रावण वीर कहावौं ॥
कह्यो राम सों तब यह बानी । का तुम यहि कहँ लंका जानी ॥
असकहि रावन राम हँकारा । युद्ध हेत बहुबार प्रचारा ॥

दोहा

मारि खड्ग सों तोहिं अब, तृप्त करौं मनुजाद[2] ।
सुनहु राम यह बचन मम, नहीं अन्यथा वाद ॥१७९

१—बाण । २—राक्षस

चौपाई

लंकापुरी न या कहँ जानो । दशमुखरावन हमहिं न मानो ॥
गदाघात सों हतिहौं जबहीं । चूर-चूर शिर होइहैं तबहीं ॥
गज जस कैथा कहँ गहिलेई । पटकै तुरत महीमहँ तेई ॥
तैसेहि अब गति होय तुम्हारी । सत्य कहौं हे राम खरारी ॥
अस कहि रावन गरजै लागा । सायक वृष्टि राम पै त्यागा ॥
विरथ युद्ध बलिवासव जैसे । भयो राम रावण कर तैसे ॥
अस्त्र शस्त्र बहु कीन प्रयोगा । भयकारी संग्राम सँयोगा ॥
सर्व शस्त्र कोविद रघुराई । काटेउ अस्त्र निशाचर राई ॥
पन्नगास्त्र रावण रणधीरा । छाँड्यो रघुवर पै गंभीरा ॥
प्रेरित बाण राम पै गिरहीं । वमत वह्नि अहि ह्वै ते परहीं ॥
वासुकि सदृश वंक्त्र[1] फैलाये । करैं प्रकाशित चहुँदिशिधाये ॥
यह कौतुक जब रघुपति देखा । मनमहँ कियो बिचार विसेखा ॥

दोहा

धावत भये सर्प सब, रामचन्द्र की ओर ।
गरुड़ अस्त्र छाड्यो तबै, नास भयो अहि घोर ॥१८०

चौपाई

कामरूप राघव के बाना । नाश कियो रावण शर नाना ॥
रावण कीन क्रोध तब भारी । उपल वृष्टि रामहिं पर डारी ॥
विफल देखि शर आपन रावन । कियो कोप जनु अनल भयावन
सौ सहस्त्र सायक करि वर्षा । राम बाण नासेउ उत्कर्षा[2] ॥
देव पितर चारण गन्धर्वा । दुखी भये लखि कौतुक सर्वा ॥
देखेउ रामहिं व्याकुल जबहीं । सोचहिं सकल ऋषीगण तबहीं ॥
रावण राहु ग्रसेउ शशि रामा । मुनि मन करत विचार निकामा[3] ॥

१—मुँह । २—जबर्दस्त । ३—खूब ।

शशि युति रोहिणि पै तेहि काला । कीन आगमन बुध दुख ज्वाला ॥
प्रजा अहित सूचक यह योगा । तातें दुख पैहैं सब लोगा ॥
मनहुँ वारिनिधि प्रज्वलित भयऊ । धूम चहूँ दिशि अतिशय ठयऊ

दोहा

कूदेउ रावण क्रोधकरि, ऊपर गयो अकास ।
मनहुँ दिवाकर छुवन चह, मन्द भयो परकास ॥१८१॥

चौपाई

बहु प्रकार उत्पात दिखाहीं । करत विषाद सबन्ह मनमाहीं ॥
राम कोप करि भृकुटि तरेरे । अरुन नयन करि निसिचर हेरे ॥
कोप सहित राघव मुख देखे । भये जीव सब विकल विसेखे ॥
काँपि उठी धरनी तेहि काला । सहित सिंह गिरि डिगे विशाला
वृत्त जले भभकी गिरि ज्वाला । सागर क्षुब्ध भये ततकाला ॥
दशमुख मारेउ जेहि शर रामा । सोइ शर गह्यो तीव्र बलधामा ॥
मुनि अगस्त्य यह सायक दीना । विधि सों लह्यो जो परम प्रवीना
ब्रह्मा रच्यो प्रथम यह बाना । दीन्हेउ शक्रहिं विजय निदाना ॥
जासु पंख महँ पवन विराजै । फल महँ भानु कृशानु सुभ्राजै ॥
अंग दीर्घता व्योम समाना । गुरुता गिरि मन्दरसम जाना ॥

दोहा

भ्राजैं लोकप ग्रन्थिमहँ, वरुणलिये कर पास ।
यमधारे हैं दण्ड कहँ, चाहत मनहुँ विनास ॥१८२॥

चौपाई

हाटक पंख सूर्य सम दीपत । काल अगिन समधूम उलीचत ॥

१—विचलित । २—अग्नि । ३—शरीर का लंबान । ४—गरुआई ।
५—तमाशा करनेवाला ।

हय गय स्यन्दन छेदनिकरता । सहस परिघ भूधर संहरता ॥
वीररक्त कीन्हेउ बहु पाना । मेदा मण्डित बहुल प्रमाना ॥
काल समान शब्द भयकारी । विविध शक्ति भंजन अधिकारी ॥
शत्रु त्रास दायक वर सायक । पंखयुक्त अहिसम अभिनायक ॥
मारि निश्चरन पोषत बाना । काक गीध घूक जम्बुकनाना ॥
रिपुदल कीर्ति विनाशन हारा । निज उत्कर्ष सदा बरियारा ॥
अभिमन्त्रित करि सोइ वर बाना । वेदमन्त्र पढ़ि विविध विधाना ॥
प्रत्यञ्चा पै सर सन्धानेउ । रघुपति रिपु प्रतिद्रुतसो ठानेउ ॥
प्रेरितराम चला सो बाना । वमत धूम प्रज्वलित महाना ॥

दोहा

आवत देखि अमोघशर, वासव वज्र समान ।
करि हुँकार गहि वामकर, भंजेउ तृन सममान ॥१८३

पद्धरी छन्द

लखि विफल बाण निज राम वीर, भे भग्न मनोरथ ह्वै अधीर । तब सहस कन्ध करि बहु प्रकोप, शर तीव्र गुनहिं कीन्हेउ अरोप ॥ करि बल प्रयोग रात्तस अधीश, उर हन्यों बाण रघुवीर ईश । सो बाण वत्त हनिरसांछेदि, धँसिगयो पतालहि शत्रु भेदि ॥

सोरठा

महाबाहु श्रीराम, मुर्छित ह्वै पुष्पक परे ।
निश्चल लखिविश्राम, हा हा सुरन्ह पुकारहीं ॥१३॥

१—पृथ्वी ।

उठी मेदिनी काँपि, सहित भूधरन्ह के तुरत ।
होठ दन्त सो झाँपि, मुनिगन स्वस्ति उचारहीं ॥१४॥

दोहा

रणविजयी रावण विकट, कीन्हेउ युद्ध महान ।
होन लगे उत्पात बहु, मनहुँ प्रलय नियरान ॥१८४॥
द्वाविंशतितम सर्गकर, पूर भयो रनहाल ।
'तेजभानु' वर्णन कियो, सुमिरत दशरथलाल ॥१८५॥

इति श्री अद्भुतरामायणे द्वाविंशति तमः सर्गः सम्पूर्णः



अथ त्रयोविंशः सर्गारम्भः

दोहा

सर्ग राम[3] युग कहौं अब, हियधरि परम हुलास ।
सीता काली रूप धरि, कीन्हेउ असुर विनास ॥१८६

चौपाई

मुनिवर देखेउ रामकृपाला । व्योम[1]यानपै परे बिहाला ॥
हाहाकार करन कोउ लागे । कोऊ शान्ति पढ़त भयत्यागे ॥
मुनिन्ह दीखतेहि अवसर सीता । हँसत मन्द मुख परमपुनीता ॥
गुरु वशिष्ठ आदिक मुनिराजा । बोले सिय सोंसहित समाजा ॥
सहसा[2]नन की कथा सुनायो । जो सुनि राघव अति दुखपायो ॥
भ्राता कहाँ गये रघुनायक । अरु मर्कट मन्त्री अधिना[3]यक ॥
मुनिन्ह केरिसुनि अद्भुत बाता । सीता लखीं राम कर गाता ॥
पुष्पक पै मूर्छित रघुराया । परे अचेतन सुधि नहिं काया ॥
कमल समान नयन युगमीचे । हृदया[4]लिङ्गित धनुशर खींचे ॥
युद्ध बीच लखि गति श्रीहरि की । देखेउ बहुरि गरजना अरि की ॥

दोहा

अट्टहासकरि जनकजा, विकट रूप तब कीन ।
रूप कालिकाधरि लियो, निजस्वरूप तजिदीन ॥१८७

१—विमान । २—सहस बदन । ३—अफ़सर । ४—हृदय से लगे ।
५—कोप ।

हरिगीतिका

जब जानकी निजरूप परिहरि, धरेउ मूर्ति भयङ्करी। अतिक्षुधित ह्वै करि वक्रलोचन, भ्रमतरनबिच शङ्करी। ह्वै किंकिणी नर अस्थिराजित, मध्य कटिके भाग में। तहँ मेघसम करि नाद काली, हुँकरत भरि रागं में। गल मुंडमाल सुमाल राजित, विकृतमुख विकृतामहा। भुजचारि शोभित अतिहिं दीरघ, पानि महँ घंटामहा। हैं लोल जिह्वा होठ चावत भूषिता रतनान सों। लै खड्ग खप्पर करन्ह कूदीं कालिका नभयान सों ॥२६॥

दोहा

सिंहिनि समधावत भई, सहस बदन पै जोर।
छनमहँ काट्यो सहससिर, आनन्द भा चहुँओर ॥१८८

चौपाई

और जे योधा रनबिचमाहीं। नखनिबिदारेउतिन्ह शिरकाहीं ॥
उदर अनेकन केर विदारा। केतिक दाबि चरन सों मारा ॥
बहुतकअंग खड्ग सो काटा। कछुकन वीर काटि महि पाटा ॥
बहुतक चरणघात करिडारा। पुनि अन्त्रावलि तासु निकारा ॥
पार्श्व भाग सों करि कछु घाता। इत उत धक्कामारि निपाता ॥
बहुतहिं देहपवन सों पारेउ। निसिचर कटक सकल संहारेउ ॥
अट्टहास करि केतिक मारा। पीठि फारिके तिनकर डारा ॥
बहुत वीर कहँ कचधरि पीसा। हय गय स्यन्दन बहुतन्ह खीसा ॥

१—कोप। २—आंतें। ३—नसाया।

उदधि मध्य महँ बहुतन्ह बोरा । बहुतन गला दाबि रद तोरा ॥
केतिक कूदि कन्ध शिरतोरा । केतिक पकरि मुण्ड महि फोरा ॥
करि हुँकार सबन्ह कहँ मारा । पशु सम मारि कछुक कहँपारा ॥

दोहा

निमिष मात्र महँ रजनिचर, काली कीन्ह सँहार ।
मुण्डनमाला गूँथिकर, कीन्हेउ गर कर हार ॥१८६॥

चौपाई

रावणशिर लीन्हें करमाहीं । कन्दुक सम खेलहिं तेहिकाहीं ॥
तेहि अवसर यह कौतुक कीना । प्रगटीं योगिनरूप नवीना ॥
रोम कूप सों निज निरमायो । कंदुक क्रीड़ा महँ चितलायो ॥
सो सब भईं सहायक काली । कन्दुक खेलि बजावहिं ताली ॥
मुनिवर सुनिये तिनके नामा । जगत प्रसिद्ध स्रवन सुख धामा ॥
करौं बखान सहित बिस्तारा । जो विख्यात सकल संसारा ॥

कवित्त

श्रीमती, प्रभावती, औ बहुला, विशाल, अक्षी, गोनसी, गोपाली, अरुपालिता । जयावती, अप्सुजाता, पुत्रिका, बहूल, मालतिका पुनि, बृहद, अम्बालिका, भयङ्करी, भयावती । नन्दिनी विशोका, वसुदामा, व सुदामा, जया, एक चूड़ा चक्रनेमि, शोभना जटावती । सेना कमलाक्षी, महाचूड़ा, चटीतमा, खरी, शत्रुञ्जयी, शलभी उत्तेजनी, महामती ॥ १ ॥ तीर्थसेनी क्रोधना, कल्यानी, माधवी, महान, रत्नाध्रुव उज्ज्वला कनकवती भाती है । गतिप्रिया कद्रुरोमा, मेघस्वना, भोगवती, सुभ्रू, अलताक्षी, विज्ञुजीहा, दरसाती है । भारती सुनेत्रा, पदमावति, है वेगवती, शुभ्रवस्त्रा, गन्धरा, सनालिका, सुहाती है । ऊर्ध्ववेनी, मेखला, सुधारिणी,

विविध रंग, रञ्जित, लम्बायमान, रूप सरसाती है ॥ २ ॥
अमिताशना, औ बहु भोजना, महाबला है, महाकाली, कमला, यशस्विनी, सहामला। परानन्दा, शतानन्दा, नृतिप्रिया शताघटा, वपुष्मती, जु शत उलूखल सुमेखला। भवतारिणी, औ भद्रकाली, चन्द्रसिता, चारु, रामा, निष्कुटिका, झंकारिका, श्री सूमला। सुप्रभा सुकुचवती, आनंदा, समेड़ी, भेड़ी, भवदा, जनेश्वरी, वेताल, जननी, चला ॥ ३ ॥ वृद्धिकामा, कन्दुती, अजिरवासिनी, सुदेवि, ऐड़ी, सुप्रसादा धनदा हड़ा, शतोदरी। वेदमित्रा, कन्दुका औ केतकी हैं, चित्रसेना, अचला, लम्बास्या और कुकुटिका, यशोभरी। कुंभिका, सुकुलिका, शृखलिका, जयप्रिया हैं काँदालिका, काकलिका, कंकिनी मनोहरी खेशया, जबेला, महावेगा, उतकाथिनी हैं, मनोजवा प्रघसा, तड़ित् प्रभा मँदोदरी ॥ ४ ॥
मेघवाहिनी, औ अति द्रढिमा, विकत्थिनी, है, सुभगा, कटकिनी, औ कोटरा श्रीपूतना। तुँडी, बहुचूड़ा, ऊर्ध्ववेणी, धरालम्बिनी, जू, लम्बा लोह, मेखला, पिङ्गाक्षी, रम्यक्रोशना। रण्याता, मधुकुंभा, और जरायु, मतसरिका हैं, हृष्टा, यक्षणिका, पृथुवक्त्रा, जर्जरानना। पृथुसेनी, पूषना, औ अमलोचा, निम्लोचा, पयोधरा, वेणु वीणा, धरा, महिषानना ॥ ५ ॥ खंडखंडा, धमधमा, मधुल जीहा, दहदहा, मणि कुट्टिका, औ शिशुमार, मुखी श्वेता हैं। खरजंघा, महाजरा, शशोलूकमुखी अरु लोहिताक्षी दीर्घजीहा, मालिका, अजेता हैं। बिभीषणा, जटालिका, कामचारी बलोत्कटा, कालाहिका मुकुटा मुकुटेश्वरी खेता है। महाकाया, पिण्डिका, हविपिंडा, एकत्वचा कर्णिका, सुकर्मा वेदपथनि निकेता हैं ॥६॥
कुलाकर्णी सुरकर्णी करन प्रवर्णी अरु खर औ गोकर्णी फेरि चारि कर्णवारी हैं। महाकर्णी भेरीस्वना भगदा महास्वना हैं शंखकुम्भ

श्रवा महाबला यशकारी हैं। कन्यका गणा औ सुगणा महायशा महान कामदा विभूतितीर्था सुखदा सुखारी हैं। चारिपथरता अन्य गोचरा चतुर्भुजा हैं, रोचमाना विशिरा मथनि मुदसारी हैं ॥७॥ एकमुखी मेघरवा मेघवामा द्विरोचना, विभुदा पयोदा गोश्यारिदा सुलोचना। दीर्घवक्षधारी सुविशाला सुप्रतिष्ठा अरु, पयदा प्रतिष्ठा नवकर्णी अघमोचना। यौवनवती औ दीर्घनासिका करन वारी सरस मधुर कामरूप धारिणीगना। महाभागा अरुणाभा दीर्घदन्त वारी पुनि नीरद समान कृष्ण "तेजभानु" हू भना ॥ ८ ॥

दोहा

लम्बोदरी पयोधरी, अरि अच्छी बहुरंग।
ताम्र लोचनी मांसविनु, क्रीडत मैथिलिसंग ॥१६०॥
रिपुदल भयदायिनिसकल, वेगवती जिमि पौन।
शिलासरिस शिर शत्रुगहि, कर महिखेलैं तौन ॥१६१
मुँडमाल धारण किये, कोउ कोउ भूषित मुण्ड।
रणबिच विचरैं योगिनी, काकगीध के झुण्ड ॥१६२

चौपाई

मांस रुधिर पूरित रन खेता। तहँ नचत सिय हर्ष समेता॥
तेहि अवसर अवनी थरराई। प्रेरित वात[1] नाव इवभाई॥
डगमग भये महीधर भारी। जलनिधि[2]हू नहिं सकेउ सँभारी॥
नभते खसे विमान अनेका। रवि हय[3]मगु छाँड़ेउ अविबेका॥
सीता भार न सहि सकि धरनी। गा चहि अधः सुमिरि सिय करनी
अट्टहास सुनि सीता केरा। अरु योगिनिन हास्य बहुतेरा॥
जीव चराचर व्याकुल भयऊ। भयो प्रलय जनु मनअस ठयऊ॥

१—हवा। २—समुद्र। ३—सूर्य के घोड़े।

सुरसमूह यह दशा विचारी । शिवसन विनती तब अनुसारी ॥
सुनि पुकार आये रन ठामा । महादेव अनुकम्पा धामा ॥
धरि शवरूप पर्‌यो सिय चरना । धरा धरनहित लीन्हेउ शरना ॥
वहन कीन अवनी कर भारा । अचल भई तब पाय सहारा ॥

दोहा

यद्यपिहर अवनी परे, अखिल विश्वकरतार ।
तदपि अन्य लोकनि रह्यो, चहुँदिश हाहाकार ॥१६३॥
चरन शब्द हुँकार अरु, पुनि निःश्वास समीर ।
भूर्भुवः स्वः आदिकर, पीर न मिटी गंभीर ॥१६४॥
महाभयङ्कर नृत्य लखि, जयजय सुरमुनिकीन ।
भुवन भङ्ग होवै चहत, कृपा करिय जनदीन ॥१६५
सर्ग राम युग पूर्णभा, जगदम्बा परसाद ।
"तेजभानु" वर्णन कियो, सुनतहिं मिटै विषाद ॥१६६॥

इति श्री अद्भुतरामायणे त्रयोविंशः सर्गः समाप्तः ॥



१—दया ।

अथ चतुर्विंशसर्गारंभः

दोहा

सर्ग वेद युग कहौं अब, सीता कृत आश्वास ।।
कथा अलौकिक सुनहु मुनि, मानि हिये विश्वास १६७

चौपाई

सिय सन्तोषणहित सुरयूथा । करैं विविध विधि यत्न बरूथा ।।
करयुग जोरि विनयसुर करहीं । बारबार पायँन लै परहीं ।।
राक्षस नाशिनि सुनु हे माता । ज्ञान अखण्ड रूप विख्याता ।।
रामवल्लभा[1] तीनिहुँ काला । जानहिं तोहिं सुविज्ञ विशाला ।।
तुम हौ शक्ति स्वभाविक माता । सूर्य प्रभासम सोभित गाता ।।
वैष्णवि शक्ति युद्ध बिच कोपेहु । राम समीप खेल बहु रोपेहु ।।
करि निर्माण जगत कर सारा । विहरत कार्य हेत बहु बारा ।।
ईश्वर साक्षीमात्र निराला । इन्द्रियार्थ कर जानत हाला ।।
निवृति, प्रतिष्ठा, विद्या, मानहु । शान्ति शक्ति सीता को जानहु ।।
चतुर्व्यूह परमेश्वर देवा । भाषैं बुध जन जान जे भेवा ।।

दोहा

पराशक्ति के द्वार सब, आनंद भोगत देव ।
अतुल महत ऐश्वर्य जो, है अनादि गुरु भेव ।।१६८

१—राम प्रिया ।

परमात्मा श्रीराम जू, पायो तुव सम्बन्ध ।
सब भूतन की प्रवृति कर, खानि तुहीं निर्बन्ध ॥१६६

चौपाई

तुम्हरे बलहि नचावहिं रघुपति । अखिल जगत कहँ सुनहु दयावति
तुहीं सनातन शक्ति भवानी । आद्या प्रकृति बखानहिं ज्ञानी ॥
प्रगट करत तुम विश्व निकाया[2] । ईश्वर सब ते पृथक अमाया ॥
और शक्ति विरचेउ तुम माता । भनत तत्त्व यह कोविद ज्ञाता ॥
ज्ञानु क्रिया अरु प्राणन्ह शक्ती । विरच्यो शक्तिमान निज युक्ती ॥
शक्तिमान अरु शक्ती एका । तासु भेद बरनौं सविवेका ॥
परब्रह्म शिवरूप अनूपा । आद्या शक्ति तासु चिद रूपा ॥
इन महँ भेद न मानैं ज्ञानी । दूनौं कहँ इक तत्त्वहिं जानी ॥
शक्ति सकल सीता सन उपजै । शक्तिमान सब राम विभ्राजै ॥
गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा । उभय तत्त्व ये विगत विभेदा ॥

दोहा

भोग्य रूप श्री जानकी, भोक्ता हैं श्रीराम ।
मंन्ता हैं श्रीराम जी, मंन्ती सिया अभिराम ॥ २००

चौपाई

सतचित आनँद अचल अरूपा । सूक्ष्म सर्वगत वेद निरूपा ॥
जो पद योगी लखहिं विवेका । सो पद परम पदारथ एका ॥
निष्कल केवल ब्रह्म अन्ता । कहैं परात्पर तेहि श्रुति सन्ता ॥
आनँद निधि के चाहन हारे । लहहिं मुक्ति पद दास तिहारे ॥
तुम त्रयताप नसावन हारी । कृपा करिय अब जननि हमारी ॥
यहि औसर निज कोप सम्हारो । जग संहार चित्त नहिं धारो ॥

२—समूह ।

सदल सहस मुख रावन मारा । कियो जगत कर भल उपकारा ॥
नृत्य व्याज जनि जग संहारहु । सुनि विधि विनय क्षमा उर धारहु
विधि आदिक देवन्ह सन भाखीं । निर्णय जो कछु मन करि राखीं ॥
प्रियतमराम विंद्रुशर सोवैं । करहु यतन जेहि सुखयुत होवैं ॥

दोहा

यहि विधि स्वामी मोर हैं, परे अचेतन यान ।
केहि विधिजगहित करौं अब, सोचहु सबैसुजान २०१

चौपाई

सकल जगत करिहौं इक ग्रासा । जानहु सत्य न है परिहाँसा ॥
वचन भयङ्कर सुनि सुर डरपे । बार-बार सिर सिय पग अरपे ॥
हाहाकार करैं पुनि लागे । काँपि उठी अवनी तेहि लागे ॥
तेहि अवसर विधि सुरन्ह समेता । रामहिं दीन प्रबोध सहेता ॥
कर असपरस विधाता कीना । तुरत राम उठि भे लवलीना ॥
पुनि बोले श्री रघुकुल नायक । रावण नहिं बचि है मम सायक ॥
यमपुर तुरत पठावौं तोहीं । कालरूप जानहु तुम मोहीं ॥
धनुष सुधारेउ तेहि छन माहीं । देखेउ सन्मुख सुरगण काहीं ॥
प्राणप्रिया कहँ नहिं तहँ देखा । नृत्य करत काली कहँ पेखा ॥
रूप कराल दिगम्बर जो है । चारि भुजा असि खप्पर सोहै ॥

दोहा

रसना डोलै चहूँ दिसि, रुधिर पान के हेत ।
जग भक्षण कीन्ह्यो चहत, शिव भे जगहित प्रेत ॥२०२

चौपाई

काली निजपग शिव उर धारे । मुण्डमाल भूषणनिसवारे ॥

१—बोद्धा । २—बुद्धि । ३—मज़ाक ।

महाभयङ्कर योगिनि साथा । रावण मुण्ड गहे निजहाथा ॥
कन्दुक सम क्रीडहिं तिनकाहीं । कौतुक अमित करहिं रणठाहीं ॥
घर घराहिं जिमि प्रलय पयोदा । चालहिं निजपद सहित प्रमोदा ॥
कर शिर नेत्र आँत कृतमाला । संग कवन्ध तमीचर पाला ॥
नाना क्रीड़ा करहिं विधाना । हरषहिं लखि शवहय गय नाना ॥
हाथ पैर शिर संयुत नाहीं । राक्षस गण जे रह रणमाहीं ॥
जे कवन्ध निरतत तेहिठाहीं । पदयुत तेही तहाँ लखाहीं ॥
रावणहू कर दीख कवन्धा । नृत्यत तहँ जहँ युद्ध प्रबन्धा[1] ॥
प्रेतराजपुर[2] सम रण खेता । निरखेउ राम विचित्र सचेता ॥

दोहा

महाभयङ्कर कालिका, सहित योगिनी दीख ।
कम्पित राघव पाणि सों, गिर्यो बाण धनु तीख ॥२०३

चौपाई

कमल समान नेत्र रघुराई । भयवश कर सों लीन दबाई ॥
विधिइमि लखि विस्मित रघुराया । बोले बचन विनीत अमाया[3] ॥
विह्वल लख्यो सीय तुम काहीं । पुनि रावनहिं कुपित रनठाहीं ॥
कूदि परीं रथसों ततकाला । रूप उग्र धारे विकराला ॥
रोम कूप सों योगिनि जायो । तिन संग क्रीड़ा अमित मचायो ॥
सहस वदन मारेउ तुरताहीं । राक्षसदल नासेउ छनमाहीं ॥
नृत्य विधान मनहिं अब ठाना । सुनहु राम तुम परम सुजाना ॥
सीता आश्रय गहि सब करहू । जगरचि पालहु अरु संहरहू ॥
सकहु न कछुकरि इन विनुरामा । इनके बल जीतहु संग्रामा ॥
अद्भुतकाज कीन प्रभु सीता । तव प्रबोध हित राम पुनीता ॥

१—इन्तज़ाम । २—यमपुर । ३—कपट रहित ।

भय त्यागहु अब हे रघुराया । सीता रूप लखहु जगमाया ॥
सुनि श्रुति सुखदवचनविधिकेरा । त्यागि शोक पुनि सीतहिं हेरा ॥

दोहा

जनक सुता कहँ निरखि तब, आनन्द भो रघुनाथ ।
रणश्रमसब तवं दूरिकरि, कीन्हेउ सबहिं सनाथ॥२०४
सर्ग वेद युग पूर्णभो, कृपा कालिका मात ।
"तेजभानु" वर्णन कियो, सुनत कथा दुखजात॥२०५

इति श्री अद्भुतरामायणे चतुर्विंशः सर्गः सम्पूर्णः



अथ पंचविंशः सर्गारम्भः

दोहा

सर्ग भूतयुग कहौं अब, जेहि महँ अस्तुति सीय ।
श्रीराघव श्रीमुखकियो, मृदुलगिरा कमनीय ॥१०६॥

चौपाई

कमल नयन सुनि विधि की बानी । भे भयभीत राम धनुपानी ॥
नयन उघारि भूमि सिर धरेऊ । व्याकुल तेज सभय ह्वै रहेऊ ॥
करसम्पुट करि कीन प्रणामा । बोले परमेश्वरिसों रामा ॥
द्वैज चन्द्र राजत शुभ माला । तुम को हौ हेदेवि कृपाला ॥
मैं तुम कहँ कछु जानिन पावा । बरनहु निज घृत्तान्त सुहावा ॥
सुनि रघुवर के वचन सुहाये । आदि शक्ति बोलीं मन भाये ॥
अभय करनि योगिन्ह सुखदाई । निजदासन्ह पै सदा सहाई ॥
आद्या अविनाशिनि मोहिं जानहु । परमाशक्ति अचिन्त्या मानहु ॥
जे मुमुक्षुजन हैं जगमाहीं । देखहिं एक रूप हमकाहीं ॥
सर्वभावगत पुनि सर्वात्मा । शिवारूप से बसहुँ सदात्मा ॥

दोहा

हौं सर्वज्ञ सनातनी, उत्पादनि सबभूत ।
महिमाअमितअनन्तअति, तारनिजगतअकूत ॥२०७

दिव्यनेत्र मैं देऊँ तोहिं, देखहु पद ऐश्वर्य[1] ।
असकहि मौनगहीं तब, लखेउसो पदरघुवर्य ॥२०८

चौपाई

कोटि दिवाकर सरिस प्रकासा । परिपूरित चहुँदिसा स्वभासा ॥
संकुल सहसन ज्वाल कराला । काल अनलसम दाढ़ विशाला ॥
गहेपानिमहँ घोर त्रिसूला । सोहै जटा सघन अतिथूला ॥
वदनमनोहर विकसित भ्राजै । महिमा अमित अनन्त विराजै ॥
इन्दुखण्डद्युति मस्तक सोहै । चन्द्रकोटि सममुकुट विमोहै ॥
गदाहाथ पगनूपुर भ्राजित । मालगले शुचि वसन विराजित ॥
दिव्यगन्ध चर्चित शुभ अंगा । शंख चक्रधरि रहहि असंगा ॥
लोचन तीन मृगाजिनधारी । अण्ड वाह्यमधि परेपसारी ॥
सर्व शक्ति मयशान्त अनूपा । शाश्वत सवीकार अरूपा ।
ब्रह्म इन्द्र आदिक सुर जेते । वन्दहिं पद सरोज सबतेते ॥
चहुँ दिसि पाणि पाद चख शीशा । सर्वावृत करि सुस्थित ईशा ॥
पद माहेश्वर सो तव देखा । राम चकित भे अतिहिं विसेखा ॥

दोहा

मन आतम मँह राखि कर, ध्यावत प्रणव प्रवीन ।
सहस अठोतर नाम सों, अस्तुति सियकी कीन ॥२०६

चकोर छन्द

दैत्य विदारन कारन जानकि कीन कलेवर कालमयी जब । "तेज" भनै करि कोप कराल सुचन्द मुखी मुख राहु भई तब । चक्र त्रिशूल कृपाण गदा-

---

१—ईश्वर संबंधी । २—परिपूर्ण ।

दिक धाय गही कर दाँतन को चब। शीश सहस्र भयावन रावन कालिका ह्वै शिरकाट लई सब ॥ ३५

मदिरा सवैया

धेनु धरा द्विज के हितहीं सिय कालिक रूप कराल करी। खप्पर, खड्ग, सचक्र त्रिशूल, भुशुण्डि भुजा युध सर्वधरी। शीश सहस्त्र जो रावण को वधि नृत्य करैं बहु कोप भरी। "तेज विनम्र ह्वै ध्यान धरै पग में लखि शम्भु उचक्क परी ॥ ३६ ॥

अथ साकेतवासि श्रीरामकृत सीताष्टोत्तर सहस्र नाम प्रारम्भः ॥

छन्द

सीता, उमा, शक्ती, शिवा, परमा, लता, परमाक्षरा।
शान्ता, अनन्ता, निष्कला-अमला, कला सब कोचरा।
जय शालिनी, सुखदा शुभा-जयदा, जय श्रीबालिका ॥
सकला, महेशी, अम्बिका, शक्ति, ध्रुव श्रीकालिका ॥
नित्या, अनन्ता, अच्युता, एका, अनादी, मानिनी।
शान्तिः शिवात्मा, अव्यया, अतिलालसा, नरवाहिनी
रम्या, उमा, अमृतप्रदा, शक्ता, अचिन्त्या, केवला।
जानकी सर्वान्तरस्था, रक्ता, ध्रुवा, श्रीनिर्मला ॥
मातामही, प्राणेश्वरी, मलवर्जिता, जय तामसी।
माया अतीता, योगिनी, वृद्धा, अनादी, मानसी ॥
आकाशयोनि, दुरत्यया, मान्या, विशोका, व्यापिनी।
महिमास्पदा, काष्ठा, कला, अमृताश्रया, परमेष्ठिनी ॥
नन्द प्रथमजा, जित्वरी, संसार सारा, श्रीफली।

भागस्थिता बहु, ज्वालिनी, वृषवाहना, योषा, बली ॥
सर्वशक्ती, प्राणरूपा, कार्यजननि, दुरासदा।
कारणात्मानादि, नाभी सर्वात्मिका जो योगदा॥
सर्वविद्या, योगनिद्रा, संसारयोनी, वासवी।
व्योमनिलया, पद्ममाला, आदित्यवर्णा, माधवी॥
कामधेनु र्नित्यसिद्धा, भूतान्तरात्मा, तापिनी।
पौरुषं, रम्या, प्रथमजा, व्यक्ता, गुणो, नरवाहिनी॥
देवात्मिका, परमात्मिका, श्रीरामवक्ष कृतालया।
व्योम मूर्ति, ज्योतिरूपा, स्वर्गस्थिता, कमलालया॥
शुद्धा, महामाहेश्वरी, सिद्धिः, स्वधा, विश्वम्भरी।
प्राणशक्तिः, प्राणविद्या, विद्या, प्रतिष्ठा, सुन्दरी॥
विश्वेश्वरी, अमितप्रभा, चिच्छक्ति मिथिलानन्दिका।
शान्तिर्निवृत्ति, निरञ्जना, अयुताक्षरी महनन्दिका॥
माहेश्वरी, औ शाश्वती, हैं राक्षसान्त विधायिनी।
व्योमाधरा, व्योमामयी, जो सर्वशक्ति प्रदायिनी॥
देवी महा, तरुणी, कला, जो, सर्वशक्ति समुद्भवा।
जैत्री, परात्मा, ईश्वरी, औमूल प्रकृती सम्भवा॥
कृष्णा, पुराणी, कर्षिणी, मेधा, सुनाभी, कौशिकी।
ब्राह्मी, प्रधाना, नन्दिनी, अरु मानिनी, संसार की॥
पूज्ये, श्रुती, शोभा, धृती, स्वाहा, सुरूपा, निर्गुणा।
भीमा, विरूपा, धीमती, विद्या धरी, गुरु, दक्षिणा॥
चन्द्र ज्योत्स्ना, ब्रह्म हृदया वृद्धमातृ, जरातुरा।
दुर्निरीक्ष्या, शब्द योनिः, तापिनी, मति, स्रग्धरा॥

वेदगगर्भा, ईश्वराणी, विश्वा, शिवार्धशरीरिणी ।
सर्ववर्णा, पार्वती हैं, औ भक्ति गम्य परायणी ॥
भुक्ति मुक्ति फलप्रदाजो, हैं सर्व शक्ति समन्विता ।
ब्रह्ममूर्ति, र्नाददेहा, दिव्यभूषण भूषिता ॥

तोटक छन्द

कमला, वरदा शुभदा, महती, पुरुषः परमा, अदितिः सुकृती । भगिनी, नियता, सगुणा, विनया, दहना, विकृति, बृंहती, विजया । सकला, कपिला, भगिनी, नलिनी, सुरभी, रजनी, कमला, वशिनी । सुरभी, गिरिजा, प्रक्रिया, ललिता, बडवा, तनया, बलदा, अमृता ॥

छन्द

दुःस्वप्ननाशिनि, अम्बिका, जयजय, प्रतिज्ञासाधनी ।
जय जगद्धात्रि, गुहाम्बिका, उत्पत्ति, गुह आराधनी ॥
जय हव्यवाहन अन्तरा, वातात्मजा पीठामहा ।
जयदेवि अगमस्वरूपिणी, जयजगद्योनि,भयावहा ॥
जयजगन्मातृ, सुबुद्धिदा, जय जन्ममृत्यु जरातिगा ।
जय पुरुष अन्तरवासिनी, जयजय तपस्विनि शुद्धिगा ॥
जय हव्यवाह समुद्भवा, जय सर्व भूतहृदिस्थिता ।
जयजय अपूज्या धीमती, जयजय समाधीसंस्थिता ॥

चौपाई

रावणान्त कारिणि जय देवी । जय प्रधान पुरुषेश्वरि सेवी ॥
जय क्षेत्रज्ञ विभावरि माता । अमित प्रभाव युक्त बुध ज्ञाता ॥

जय सर्वेन्द्रिय मन की की माता । हौं संसार तारिणी धाता ॥
ब्राह्मी ब्रह्माणी पुनि विद्या । परिवर्तिका जगत अनवद्या ॥
सर्व सहा उन्मीलनि अम्बा । निराश्रया जय श्री जगदम्बा ॥
शुद्धि निरंकुश रन की अरनी । जगत् प्रिया जग पालन करनी ॥
जय त्रिमूर्ति सुर सेवित माता । तोहिं विश्वतोमुखि कह ज्ञाता ॥
जन शक्तिः अरु कपिला कान्ता । पुष्करिणी भोक्ती जय शान्ता ॥
भानुमती जय श्री परमात्मा । सुखी करत तुम सदा सदात्मा ॥
आत्म विग्रहा देवि सुमन्त्रा । जयतु जननि दुर्मुख मुख यन्त्रा॥

दोहा

अग्रेसर तुम सक्र हौ, पोषणि जगती मातु ।
परमैश्वर्य विभूतिदा, भूतिभूषणा त्रातु ॥ २१० ॥

चौपाई

पञ्च भूत उत्पादन कारी । ताते तुम सब जग बिस्तारी ॥
नर्मोदया योगि जन ज्ञेया । योग रूपिणी मन्त्रिणि देया ॥
क्लेश नाशिनी निज जन माता । भक्त सुखद अमोघ विख्याता ॥
वेद रूपिणी वन्द्या माला । श्रुति विद्या तापसी विशाला ॥
नन्द वल्लभा भारति भारत । विद्युन्माला पालनि आरत ॥
योगेश्वरे श्वरी हौ माता । महाशक्ति जन सौख्य विधाता ॥
मनोहारिणी जन मन गोप्त्री । धरा धारिणी त्रिभुवन भोक्त्री ॥
वीर मुक्ति पीवरी विशाला । परमानन्दा परम सुबाला ॥
जय जय देवि विहायसि माता । पर अरु अपर विभाजित गाता ॥
सर्व शस्त्र धारिणि विख्याता । वृन्दारक गण सेवित माता ॥

दोहा

दुर्लेखा काम्या परा, धन्या भ्रान्तिः भानु ।
गन्धदायिनी शारदा, करहु सदा कल्यानु ॥ २११ ॥

चौपाई

धन रत्नाढ्या और सुगन्धा । दीप्ति प्रभावति सत्य सुसन्धा ॥
हृत्कमलोद्भूता जय आद्या । देवि रणप्रिय और अनाद्या ॥
जय शुद्धा सत्क्रिया सुदेवी । कात्यायनी विज्ञ जन सेवी ॥
हिरण्यवर्णा चण्डी दुर्गा । देत सबहिं सुखदायक स्वर्गा ॥
स्वर्ण मालिनी पृथ्वी माता । विश्व प्रमाथिनि देवन त्राता ॥
पद्मासिनी वरेण्या माया । वरदर्पिता करहु तुम दाया ॥
शान्त विग्रहा रामा जय जय । कल्याणी वाच्यापुनि जयजय ॥
दुरतिक्रमा दुर्जया नन्द्या । भक्तभद्र दायिनि जग वन्द्या ॥
पद्मनिभा कूष्माण्डी देवी । दृषद्वती रविमाता सेवी ॥
दुष्प्रकम्प्य धुन्वती माता । नित्य तुष्ट दुर्लभा सुगाता ॥

दोहा

महानदा संवत्सरा, रुद्रा सांख्या मान ।
खरध्वजा मधु सूदनी, माला तीता जान ॥ २१२ ॥

चौपाई

शिरोहया अरु पिङ्गल नैनी । महिमाचिन्त्य व्याप्तिपिकबैनी ॥
कामेश्वरेश्वरी जय माता । उद्भूता वामन पद दाता ॥
आयत कमलनयनि वर शोभा । भगिनी शक्र देखि मन लोभा ॥
पञ्चभूत बरदायिनि माता । वीरभद्र हित प्रिया सुख्याता ॥
कालरात्रि, पद्मिनी, यशोदा । भक्त भद्र दायिनी प्रमोदा ॥
सांख्य योग प्रवर्तन हारी । जगत्पूरनी कला तुम्हारी ॥
महा वेग पिङ्गल आकारा । भद्र कालिका रुद्राकारा ॥
जगन्मातृका वरदा माता । शंखिनि तपस्विनी विख्याता ॥
नाम वेदिका देह कराला । शुम्भारी खेचरी विशाला ॥
साम्यस्था इन्द्रजा विरक्ता । परमालिनी परार्ध्या व्यक्ता ॥

दोहा

कलिप्रिया, गरुडासना, रम्या, विश्वा जान ।
क्रियावती, वनमालिनी, भुक्तिः मुक्तिः मान ॥ २१३

चौपाई

कम्बुग्रीवा जय जय खस्था । सदा शिवा वैदेही स्वस्था ॥
जय पुष्टिर्जय तुष्टिर्देवी । अहौ सदा तुम शुचि जन सेवी ॥
जय लोहिता सर्व जनयित्री । जय अनन्त शयना सुखयित्री ॥
महा मूर्ति जय परम भीषणा । जय शङ्करी और निर्वर्णा ॥
जय नरसिंही और सुभद्रा । दैत्य मंथिनी और वलीन्द्रा ॥
यथा मार्ग परिवर्तन शीला । वैभव रत्न सदन शुभ लीला ॥
नित्य दृष्टि जय सिध संकल्पा । सत्व वेग विज्ञान सुकल्पा ॥
गुप्त उपनिषद इच्छित दात्री । शंख चक्र गदधारि सुगात्री ॥
जय संकर्षण कारिणि देवी । जयति उपान्त संश्रया सेवी ॥

दोहा

गिरि पुत्री पर देवता, स्थानेश्वरी सुमातु ।
चतुर्वर्ग फल दायिका, कमल लोचनी त्रातु ॥२१४॥

चौपाई

नील कमल सम प्रभा विराजै । ज्ञान विराग विवेक सुभ्राजै ॥
धर्म अधर्म विवर्जित अहऊ । सर्वशक्ति प्रेरक तुम रहऊ ॥
गौर वर्ण तुम अहौ अवर्णा । गौरी शार्श प्रभावित वर्णा ॥
जय त्रिशूलवर धारिणि नाद्या । महाभूतिदा वली सुमध्या ॥
जय निरिन्द्रिया धीरा गोत्रा । शान्त मानसा जय नभमात्रा ॥
वीज सम्भवरे गोमति माता । गोप्त्री गुह्यरूप परित्राता ॥
गव्यप्रिया गणेश्वर वन्द्या । गोश्री गुणान्तरा अभिनन्द्या ॥

जयतु अनन्यस्था महरानी । जयसु प्रभा अपूर्वा दानी ॥
आज्ञा चक्र निवासिनि जननी । जय विचित्र गहना वर वरनी ॥
नित्य धाम वासिनि जगदम्बा । विश्व देवता मूर्ति पराम्बा ॥

दोहा

जय निशुम्भ विनिपातिनी, निरानन्द गणरूप ।
निरालोक जय देवता, परमानन्द स्वरूप ॥ २१५ ॥

चौपाई

जय जग मंत्र प्रचारिणि माता । महा पुरुष ते पूरब जाता ॥
सहस कमलदल वासिनि अम्बा । सांख्या शून्य जयतु जगदम्बा ॥
परब्रह्म पद आश्रय हारी । वर्ण रहित सीता सुकुमारी ॥
पुष्प वासिनी देवि विसंगा । सत्य मात्रिका ज्ञान अभंगा ॥
परे तमोगुण हौ हे माता । भेद रहित त्रयतत्व विधाता ॥
त्रिविधा शुद्ध कुलोद्भव नामा । निर्विकार श्री शङ्कर वामा ॥
बिन्दुनाद उत्पति अरु ललिता । शान्त्यतीत जय सन्धि वर्जिता ॥
सांख्य योग्य ऊत्पादनि देवी । अप्रमेय सुन्दरी सुसेवी ॥
सर्ववाद आश्रय महरानी । जयति महा श्री देवकि रानी ॥
जय श्री समुत्पत्ति जय तारा । लिङ्ग धारिणी शिवा अपारा ॥

दोहा

अहो सूक्ष्मपद संश्रया, कालकर्णिका माय ।
निराश्रया नारायणी, वामलोचना भाय ॥ २१६ ॥

चौपाई

शास्त्रयोनि जय जयति शान्तिदा । जय कौमुदी कामुकी बलदा ॥
सत्यदेवता, बड़वा, दान्ता । पुरुहूता, दीर्घा, जयशान्ता ॥
क्रिया, मूर्ति, काश्यपी, माता । दुर्ज्ञेया, उद्भूती ज्ञाता ॥

हेमाभरण भूषिता देवी। शान्ति वर्धिनी सुरगण सेवी ॥
जय त्रिशक्ति जननी जय सिधिदा। परमेश्वरी वैष्णवी मणिदा ॥
जय किरीटिनी स्वाहा जन्या। जयऐन्द्री राजती हिरन्या ॥
संकर्षणा देवि जयवीरा। जय प्रद्युम्न दयिता जयधीरा ॥
हँसगती जय तनया माता। नीतिज्ञा व्रतरता सुख्याता ॥
जय शिव ज्ञान स्वरूपिणि कम्पा। अमृतास्वादा हैमी शम्पा ॥
वेद वेदाङ्ग पारगा सेवा। चण्डविक्रमा अद्भुत भेवा ॥

दोहा

ज्योतिष्टोम फलप्रदा, जगद्धात्रि जगमातु।
ककुद्मिनी अनिलाशना, युग्मदृष्टि परिपातु ॥२१७॥

अनुष्टुप् छन्द

महामोहा, विभावज्ञा, स्त्रग्विणी शोकनाशिनी।
चित्राम्बरधरा नाभिः, शङ्करेच्छानुवर्तिनी ॥
देवसेना, महाशाला, स्वकार्या ज्ञानरूपिणी।
सर्वमाता, महाभ्रान्तिः गुणाढ्या क्षोभकारिणी ॥
महालक्ष्मीः समुत्पन्ना, भवानी, तत्त्व सम्भवा।
माहेश्वरी, स्वयम्भूतिः बीजरूपा मनोजवा ॥

छन्द

जयविचित्राङ्गी, अविद्या, बिज्जुजीहा जयति जय।
जय कुण्डली जयचेकितानी, व्योमलक्ष्मी जयति जय ॥
जय तैजसी, विद्यामयी, सत्कीर्ति जय हे तारिणी।
जय सद्मना व्यापामहा—देवाश्रया दुखहारिणी ॥

चौपाई

जयत्रिशक्ति जननीजय पावनि । आप्यायन्ती खिला विभांवनि ।।
जय गन्धर्व निराकृति पोषणि । जय विद्याधर क्रिया सुतोषणि ।।
जय रजता चलवासिनि माता । हिमवन्मेरुकृतासन दाता ।।
जय विन्ध्याचल वासिनि देवी । जय श्री अवध निवासिनिषेवी ।।
जय चाणूर निहन्त्रि वहन्ती । जय श्री दैत्य मृगेन्द्र निहन्ती ।।
जय युगान्त दलनी सुप्रचण्डा । कामरूपिणी सुधा ब्रह्मण्डा ।।
जय षडूर्मि परिवर्जित देहा । कामयोनि श्रीशा जन गेहा ।।
लक्ष्मी आदि शक्ति कर जननी । महोत्कटा शतरूपा बरनी ।।
जय मातृ का वारिजा बानी । बाहन प्रिया सुकीर्ति बखानी ।।
जय स्वर्णाक्षी वसुमति माई । सिंह वाहिनी श्रीकरि भाई ।।

दोहा

हरि प्रिया अरु श्री धरी, पुनि श्रीधरा बखानि ।
ईशवीरणी मङ्गला, मङ्गल्या सुखदानि ।। २१८ ।।

चौपाई

जय करीषिणी देवी माता । मन्मथ उद्भूता जय दाता ।।
देवि सिनीबाली सुख दायिनि । गरुत्मती सेविका सुहायिनि ।।
जयति वरा रोहा श्रीवामा । देवि वराही चान्द्री नामा ।।
अरुन्धती जय माला मलिना । वसुप्रदा श्री साध्वी सुखिना ।।
जय श्री फली उत्सुका माया । जय श्रीमती करहु तुम दाया ।।
जय अनन्त दृष्टी अरु नारी । जयति अक्षुद्रा सुखदा प्यारी ।।
धनद प्रिया सिंहिका माता । धात्रीशा दिव्या सुखदाता ।।
मातु सुसेना जयति निवासा । देवि चन्द्र निलया जगवासा ।।
छिन्न संशया बलज्ञा अम्बा । जय वसोर्धारा जगदम्बा ।।
नित्योदिता गारुड़ी देवी । गन्धर्वी कन्ता जन सेवी ।।

दोहा

वीणावादनतत्परा, युगन्धरा जय मातु ।
देवी जय मल हारिणी, सौदामिनी विभातु ॥ ११६ ॥

चौपाई

वज्र दंष्ट्रा जयति त्रिसन्ध्या । हर्ष वर्धिनी मातु सुगन्ध्या ॥
जय शिष्टेष्टा और विशिष्टा । देवि जनान्दा शाक्री इष्टा ॥
दिवापरा दिवि गन्धा माता । सुरभी सुरा विनीता त्राता ॥
धर्मज्ञा अरु ज्ञान पारगा । देत जनहिं जो सदात्रिवर्गा ॥
जयति समीचा अरु सुद्युम्ना । सूर्य संस्थिता और सुषुम्ना ॥
धर्मवाहना अरु निर्वृत्तिः । जय सर्वा जय धर्म सुशक्तिः ॥
धर्ममयी अरु जयति विधर्मा । धराधरा धर्मात्म सुकर्मा ॥
सूक्ष्मा और कपाली देवी । धर्मान्तरा देव मुनि सेवी ॥
कंस प्राण हारिणि जय माता । अमृताश्रवा महा सुखदाता ॥
अमृत जीविनी वज्र विग्रहा । अशनी जिह्वा असुर निग्रहा ॥

दोहा

कम्बलाश्वतर गेहिनी, कर्णिकार धृतपानि ।
जय भ्रुकुटी कुटिलानना, राजत जगलेलिहानि ॥२२०

छन्द

जय ब्रह्मवादि मनोलया, जय चन्द्रबदना धारिणी ।
जय सुसौम्या व्योम शक्ती, मालिनी शुभ कारिणी ॥
देवी कलातीता शता नन्दा परागति भोगदा ।
जय ब्रह्म विष्णु शिव प्रिया जय बुद्धि माता सर्बदा ॥

चौपाई

स्वयं ज्योति परकाशिनि माता । इन्द्रासन शोभित जगत्राता ॥
विश्व धर्मिणी धर्म सुपूर्वा । युगावर्त जय जननि अपूर्वा ॥
धन प्रिया जय धर्माख्यात्री । वासव माता जन सुखदात्री ॥
जयति शतावर्ता नभ मूर्ती । धर्म प्राप्या देव सुमूर्ती ॥
शिष्टाशिष्ट प्रपूजित चरना । शकला मूर्तिः जय जग सरना ॥
कला कलित काया जग माया । धार्मिक जन सुखदायिनि साया ॥
धर्म शास्त्र कुशला सुर सेवी । धर्माधर्म विधायिनि देवी ॥
देवि धर्ममध्या जग माया । सर्वेश्वरी करहु तुम दाया ॥
सर्वशक्ति निर्मुक्ता देवी । सर्वशक्ति आश्रय सुरसेवी ॥
महापुरुष साक्षिणि जय माता । सूक्ष्मज्ञान रूपिणि जनत्राता ॥

दोहा

पुरुष प्रधान सुस्वामिनी, पुनि अमूर्तिका मातु ।
अहो देवि प्रत्यक्ष तुम, वसुधा उद्भव त्रातु ॥२२१
करणी कर्म त्रिलोचना, महाकाल पर सूति ।
त्रयलोकी नमिता जननि, धर्मशील शुभमूर्ति ॥२२२

छन्द

जय त्रिनेत्रा क्षोभिका जय,—रौद्रिका भेद्या सती ।
जय अभिन्ना भिन्न संस्था, वंशिनी सुकलावती ॥
जय पद्मवासिनि सर्वविद्, जय सर्वतोभद्रा शिवा ।
वंश हेरिणि गुह्यशक्ती, योग मात्र मृतोद्भवा ॥

चौपाई

जय चैत्री अमरेश्वर स्वामिनि । भगवत्पत्नि जयति जयस्वामिनि ॥
नर नारायण उद्भव माता । पर अरु अपर विभूतिदख्याता ॥

दानव दैत्य सँवारनहारी । देवि सुमूर्ती जन सुखकारी ॥
जय प्रधान पुरुषा महरानी । जय अष्टयेदश भुजाबखानी ॥
जय परान्त महिमा सब देवा । नव उद्भूते कृत सुर सेवा ॥
अहौ महाज्वाला तुम माता । देवि चित्र निलया विख्याता ॥
देवि मन्यु माता विख्याता । महामन्यु उद्भव आख्याता ॥
पुरु प्लुता जय जयति अशोच्या । भजनानन्दि सुजन नहिं शोच्या ॥
जय अव्यक्त लक्षणारानी । हाटक रजत प्रिया सुखदानी ॥
जयतु भिन्न विषया सुप्रकासा । जयअमृत्यु जय विश्वनिवासा ॥

दोहा

शक्ती चक्र प्रवर्त्तिका, वृषावेशनी त्रातु ।
सर्व प्रत्ययसाक्षिणी वपुः संज्ञजा मातु ॥२२३॥

चौपाई

देविरत्न माला सत्कीर्ती । मातु रत्न गर्भा शुभ मूर्ती ॥
पद्मवासिनी जय कुण्डलिनी । हिरण्मयी जय पद्म धारिणी ॥
जय अनादि निधनासावित्री । विश्वावस्था जगपावित्री ॥
मनोमयी जय गार्गी देवी । पूज्या दुष्पूरा सुरसेवी ॥
चिता मध्य वासिनि निर्यन्ता । महारात्रि रुद्राणी कान्ता ॥
जयगन्धर्वा भाविनि प्रकृती । निराहार जय सत्या सुकृती ॥
जय कूटस्था विद्यामाया । महाभ्रान्ति जो जग भरमाया ॥
देवि ब्रह्म भूता जय माता । जय शुक्ला व्यक्ता सुख दाता ॥
धनुष्पाणि जय निर्भयकारी । परामूर्ति निज जन भयहारी ॥

दोहा

भ्राजमान जगती अखिल, चतुर्वर्गदा अम्ब ।
महती निद्रा नामिका, सकल विश्व अवलम्ब ॥२२४

छन्द

जय जयति विद्येश्वर प्रिया, जय जय सुरूप भयावनी ॥
देवी गुणातीता गुहावलि, पुण्या सुगन्धा नन्दनी ॥
जय काल कारिणि कर्म शक्तिः, देवी मलत्रय नाशिनी ॥
जय सहस्त्रश्रवण जाता, देवी अनाहंत ह्लादिनी ॥

दोहा

भेदा भेद विवर्जिता, पद्मरोधिका पूर्ण ।
पर अरु अपर विधानगा, ब्रह्मर्षी सम्पूर्ण ॥२२५॥

चौपाई

जय दुर्धर्षा महाविभूती । जय अव्यक्त गुणाभव सूती ॥
महिष वाहना जयति सनातनि । दुवीरा स्थित योग शवासनि ॥
प्राणेश्वर प्रिय मूल प्रकृति जय । कला कुला संचया अमृत जय ॥
सर्वयोग ईश्वर ईश्वरी । जयति सुदुर्वाच्या मुदकरी ॥
जय सर्गस्थिति संहृतिकारी । जय अनादि अनन्त विभवारी ॥
जय जय शब्दमयी नादाख्या । जय प्रधान पुरुषात्मा आख्या ॥
जय अव्यक्त स्वरूपा माया । धर्म विराग विभव उपजाया ॥
मुदित मानसा जय सर्वेश्वरि । ब्रह्मेन्द्रादि सुपूज्यमहेश्वरि ॥
अर्धासन ईश्वर आसीना । राघव पतिव्रता जयपीना ॥
पुरुष रूपिणी आदि पुरुष जय । यब्रह्मास्या जय हृदिस्थिता जय ॥

दोहा

सर्वासक्तुद्र विभाविता, दायिनि परमानन्द ।
जय समुद्र परिशोषिणी, वागीश्वरी अमन्द ॥२२६॥

चौपाई

जय ईश्वरी सर्व भूतेश्वर । माहेश्वरी जयति पुरुषेश्वर ॥
जन्म मरण अरु जरा अतीता । अनवच्छिन्न प्रवेशिनि गीता ॥
जय अनादि माया संभिन्ना । जयति त्रितत्वा शक्ति अखिन्ना ॥
माया महा समुत्पन्नानी । पुरुष प्रधाना तीत भवानी ॥
जय जय ब्रह्म संश्रया माता । धर्म विभव वैराग्य प्रमाता ॥
मुदित मानसा हिमवत्पुत्री । जय विकाशिनी योग्य सवित्री ॥
जय जय ज्ञान मूर्ति शुभ आसनि । शुभ्रा लक्ष्मि सरस्वति हर्षनि ॥
जय अनादि हृदय स्थित कीर्त्ती । जय जग जेष्ठा मंगल मूर्त्ती ॥
जय सर्वार्थ साधिका विद्या । महा गुह्य वाच्या सुर विद्या ॥
आत्म सर्व विद्या सुशोभना । आत्म भाविता सौम्य सन्मना ॥

दोहा

लीला भोग प्रदायिनी, वंशकरी शशिरम्य ।
काम चारिणी सुन्दरी, लोकत्रयी अगम्य ॥ २२७ ॥

छन्द

जय महादेव मनोरमा जय, सिंहस्यन्दन संस्थिता ।
विश्वेश्वरे श्वरि कनक आभा, सर्वभूत मनःस्थिता ॥
ब्राह्मी कला जय वागदेवी, जयति जय ताण्डव प्रिया ।
जय वेद शक्ती वेद माता, वेद विद्या जगत्प्रिया ॥
जय विभावरी महिष मर्दिनी, पाप हरा जग सृष्टि-
विवर्धिनी । हंसाख्या विचित्र मुकुटाननि, भद्र कालिका
शिखिवर वाहनि ॥

चौपाई

मन्त्र वाहना जय कौमारी । गौरी वृषासना असुरारी ॥

जय सुरार्चिता रौद्री रात्री । महा फला विरुपाक्षि विभात्री ॥
जय विवाहना अनवद्याङ्गी । देवि पद्म गर्भा शुभ अङ्गी ॥
लेहन कर्त्री सबजग व्यापिनि । असुरदलन हित रहत उतेजिनि ॥
कामपूरणी मोक्ष प्रदायिनि । जय त्रिदशार्ति विनाश विधायिनि
महा असुर नाशिनि जय माता । भव भय हारिणि तुम जगत्राता ॥
जय भक्तार्ति विनाशिनि माया । करहु सदा सज्जन पर दाया ॥
रत्न विचित्र मुकुट शुचि धारिनि । प्रणत ऋद्धि मतिवृद्धि सुधारिनि
नित्य विभव भव्या निस्सारा । निरपत्रपा यशस्विनि सारा ॥
सामगीति सर्वार्ति शायिनी । जय भवाङ्ग निलया आलयिनी ॥

दोहा

जय महेन्द्र विनिपातिनी, सागर वासिनि मातु ।
विद्या मोह विनाशिनी, दीक्षा दीक्षा त्रातु ॥२२८॥

चौपाई

जय तार्क्षी अकलंका उर्वी । देवि निराधारा हौ गुर्वी ॥
देवि निरामाया जय भव्या । निःसंकल्पा सुरगण हव्या ॥
मातु निरातंका जय श्रेष्ठा । देवी सत्या जय जग ज्येष्ठा ॥
जय सर्वेश्वर प्रिया भवानी । नमो देव देवी युगपानी ॥
मनोन्मनी जय विजय प्रदा जय । महा भगवती सदा जयति जय ॥
जय वसुदेव समुद्भव तारनि । ज्ञेया ज्ञान गुणत्रय धारनि ॥
इन्द्रोपेन्द्र भगिनि जय माता । जय वेदान्त विषय जग त्राता ॥
ज्वाला माला सहस सवाँरा । महीयसी सत्या सुविचारा ॥
नमस्कृता सब भूत शाङ्करी । महाशक्ति मति ख्याति शुभंकरी

दोहा

इमि अष्टोत्तर सहस सों, बद्धाञ्जलि श्रीराम ।
हर्षित तनुरुह जानकिहिं, अस्तुति कीन निकाम ॥२२९

१—खूब ।

यहि अद्भुत अस्तोत्र को, सुनै जो मनचित लाय ।
पढ़ैपढ़ावै प्रेम सों, यमपुर को नहिं जाय ।।२३०

चौपाई

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विजाती । वेद पाठ फल लह भलि भाँती ।।
सद्गति लहत शूद्र मुनिराया । अरुलहि सम्पति रहत अमाया ।।
स्तोत्र महातम मंगलदायक । योगक्षेम वाही मुनि नायक ।।
मारी, तस्कर नृपभयहारी । हरत कृशानु जनित भयभारी ।।
आधि व्याधि भयङ्कर रोगा । सुनतहिं संकटमिटि लहभोगा ।।
रिपुगण बाधा नहिं पहुँचावै । अनावृष्टि दुख दूरि भगावै ।।
कहँ लगि महिमा कहौं बखानी । सर्वशान्तिकर है मुनिज्ञानी ।।
जोइ जोइ वस्तु इष्टतम होई । स्तोत्र पाठसन पावै सोई ।।
यहिकर पाठ होय नित जहवाँ । सीता सहित राम बस तहवाँ ।।
हे द्विजवर यह अतिशय पावन । महाभयावन पाप नसावन ।।

दोहा

महापाप त्रयताप अरु, विलय होत ततकाल ।
श्रोता बक्ता लहि कृपा, सिय की होत निहाल ।।२३१
सर्ग भूत युगपूर्ण भो—श्री सीता परसाद ।
"तेजभानु" वर्णन कियो, सुनतहिं मिटै विषाद ।।२३२

इत्यार्षे श्री अद्भुत रामायणे पंच विंशतितमः सर्गः समाप्तः ।



अथ षड्विंशातितमस्सर्ग आरभ्यते

दोहा

सर्ग तर्क युग कहौं अब, सम्भाषण श्रीराम ।
वैदेही प्रति जो भयो, गिरा सुखद अभिराम ॥२३३

चौपाई

यहि प्रकार अस्तुति करि रामा । बोले बाणी सहित प्रणामा ॥
हे देवी लखि रूप सुघोरा । भा भयभीत थकित मन मोरा ॥
याते सौम्य रूप दिखरावहु । भयदायक यह रूप दुरावहु ॥
गिरा विनीत सुनत रघुबर की । प्रगटेउ छटा स्वरूप सुघर की ॥
परम सुहावन, सोक नसावन । स्वर्ण कमल सम नयन लुभावन ॥
नयन चारु भुज युग शुभधारी । नील अलक भूषित सुखकारी ॥
लाल कमल सम पदतल सोहै । ताविधि कर पल्लव मनमोहै ॥
श्रीयुत चारु सुभाल विराजै । तापै बिन्दी अति शुचिराजै ॥
पुनि सर्वाङ्ग विभूषण भूषित । पाटाम्बर तन सोह अदूषित ॥
मणि माणिक कनकाचित माला । राजित कण्ठ सुनहु मुनिपाला ॥

दोहा

बिम्ब होठ कछु हासयुत, मुखप्रसन्न श्रीमन्त ।
मुक्राग्रन्थित वसनयुत, हरषत लखि श्रीकन्त ॥२३४
असमुन्दर लखि रूपसिय, त्यागिभीति श्रीराम ।
बोले रघुकुल भूप तब, बचन स्रवन अभिराम ॥२३५

चौपाई

धन्य जन्म तप सुफल हमारा। लखि तव रूप सुभग सुखसारा ॥
अखिल विश्व यह तुव निरमाया। प्रकृति आदि तुम महँथित माया
अन्ततोहिं महँ सब लय पावहिं। तुमहीं परमगती श्रुतिगावहिं ॥
विकृतिपरे तोहिं प्रकृति बखानहिं। कोउ तत्त्वज्ञ शिवाकरि मानहिं ॥
पुरुष, प्रधान, महान, विधाता। नियँति, अविद्याँ, ईश्वर ज्ञाता ॥
माया काल अनेकन तोमहिं। राजत सकल तत्त्व संशय नहिं ॥
परमा शक्ति अनन्ता देवी। भेद भाव बर्जित सुरसेवी ॥
पुरुष प्रधान आदि निर्मित करि। पालति पुनि संहारति दुँर्धरि ॥
तव संगति पावत परमेसा। लहत अनन्द अनन्त असेसाँ ॥
ज्योति निरंजन महा अकासा। परब्रह्म अति सूक्ष्म प्रकासा ॥

दोहा

सबदेवन महँ इन्द्र तुम, ब्रह्मा ज्ञानिन माहिं।
कपिल देव सांख्यनि अहो, शङ्कर रुद्रग नाहिं ॥ २३६

चौपाई

हौ उपेन्द्र आदित्य न माहीं। पावक वसुन्ह मध्य श्रुतिगाहीं ॥
सामवेद हौ वेदन्ह माहीं। छन्दन गायत्री गनि जाहीं ॥
विद्याध्यात्म सुविद्यन मध्मा। परमागति गतिमध्य अवध्या ॥
सब शक्तिन मधिमाया गाई। कलँना कारिन काल कहाई ॥
ओंकार गुह्यन महँ राजहु। ब्राह्मण वरणनि माहिं विराजहु ॥
हौ गृहस्थ आश्रमन मझारा। अहो महेश्वर ईश्वर सारा ॥
आदि पुरुष पुरुषन महँ अहऊ। सब भूतन हृदयस्थिल रहऊ ॥
उपनिषदन महँ गुप्त उपनिषद। पुनि ईशता नृपन मधि श्रुतिवद ॥

१—भाग्य। २—अज्ञानता। ३—अजेय। ४—सम्पूर्ण। ५—गणना।

युगन मध्य कृतयुग तुम अहऊ। अर्चिरादि महँ आदित ठहऊ ॥
वाणिन माहिं सरस्वति माता। सुभग रूप महँ लक्ष्मी ख्याता ॥

दोहा

माया चिनमहँ विष्णु हो, सतिन अरुन्धति जानु।
पुरुष सूक्त श्रुति सूक्त महँ, गरुड़ विहङ्गन मानु ॥२३७
ज्येष्ठ साम हो सामहँ, सावित्री जयमाहि।
शत रुद्रिय हो यजुष महँ, गिरिन्हि सुमेरु कहाहिं ॥२३८
सर्पन माहिं अनन्त तोहिं, गावत वेद पुरान।
ब्रह्मरूप सों सबन महँ, भासत सकल जहान ॥२३९

भुजङ्ग प्रयातम्

नमो देवि तुभ्यं कलातीत रूपं, महानिर्मलं शुद्ध बुद्ध स्वरूपम्। सदा दृश्यते विज्ञ पुंसा प्रसूती, जगत कारणं मूल माद्यं विभूती। सदा सन्निविष्टं जगत्सूत्र मध्ये, सुतेजोमयं नित्य प्राण प्रसिद्धे। नतोहं भवानी सदा व्यक्त रूपं, विभिन्नं प्रकृत्या स्वरूपं अनूपम्। नमो रूप माद्यं महत्वं विशेषं, जनुर्नीश हीनं सदा शुभ्र वेषम्। सदा ज्ञान वैराग्य धर्मैरूपेतम्, नमो वारिवासी उदासी जनेशम् ॥५१॥

हरिगीतिका

जय पुरुष एक अनंत निवसित भूत सब श्रुतिहेतुकम्। ब्रह्माण्ड भूरि विराजते तवरोम प्रति मुनिभाषितम्। जेहि तेज सों दिन नाथ मण्डल पूर्णरूप

नमाम्यहम् । भुज सहस मस्तक पुरुष निरुपम सलिल शायि प्रणौम्यहम् । जय भीम दन्ती देववन्दित-काल अग्नि युगान्तकम् । जय सर्व भूत विनाश-कारी काल रूप नमाम्यहम् । जो सहस फनपर भार भूतल बहुत अबलीलामयम् । तेहि शेष रूपहिं बद्ध-अञ्जलि "तेजभानु" नमत्ययम् । नित नौमि ब्रह्मानन्द आस्थित, रुद्ररूप भजाम्यहम् । जय शोक मुक्त पवित्र पद सुर असुर पूज्य नमाम्यहम् । यहि भाँति अस्तुति ठानि रघुपति, जानकी ढिग राजते । अस्तुति पढ़त यह ओघ अघ नित, 'तेज' भय दुख भाजते ॥५२॥

दोहा

इमि रघुपति के बचन सुनि, बिहँसि कहीं वैदेहि ।
सुनिये स्वामी बचन मम, त्यागि सकल सन्देहि ॥ २४०

चौपाई

रावण वध हित जो तनु धारा । तेहि तनु बसिहौं मानसपारा ॥
नीलरूप स्वाभाविक रघुपति । रावण अर्दित अरुण भयो अति ॥
नील अरुण तवरूप सुहावन । सदा साथ बसिहौं मन भावन ॥
माँगहु वर जो भावत जी को । सुनि प्रमोद भो रघुपति नीको ॥
प्रणवौं बहुरि युगल कर जोरे । पुरवहु देवि मनोरथ मोरे ॥
पर्वत वास अंशते करहू । यह मम बिनय मानि अनुसरहू ॥
जो दयाल देवी मोहिं ऊपर । करि अब कृपा दीजिये यह वर ॥
जो शुभ रूप देखायहु मोहीं । रहै सदा हिय नयननि सोहीं ॥
अनुज, विभीषण, वानर वीरा । सेना सकल शूर रन धीरा ॥

जे केउ मर्दित भये हमारे । मिलैं सुभट मोहिं कृपा तुम्हारे ॥
बजी दुन्दुभी नभ तेहि काला । लगी सुमन झरि होन विशाला ॥
तब "तथास्तु" कहि सीता माता । रघुबर कहँ हेरेउ मुसक्याता ॥

दोहा

ब्रह्मादिक सब देवतन, बिदा कीन रघुनाथ ।
चढ़ि पुष्पक गवने तुरत, अवध पुरी सिय साथ ॥२४१
सर्ग तर्कयुग पूर्ण भो, श्री सीता परसाद ।
'तेजभानु' वर्णन कियो, सुनि मन मिटै विषाद ॥२४२

इत्यार्षे अद्भुतरामायणे षड्विंशः सर्गः समाप्तः ।



अथ सप्तविंशः सर्गारम्भः

दोहा

सर्ग शैल युग कहौं मुनि, सेनप प्रभु संवाद ।
राम रहस्य अकथ्य सुनु, त्यागि बितण्डा बाद ॥२४३

पद्धरी छन्द

सुनि शब्द सकल पुष्पक विमान, भरतादिक पुरजन ऋषि महान । दर्शन हित धाये अति उछाह छलकत वर नयनन नीर चाह । सब धाय धाय प्रणमहिं नरेश, कृत कृत्य होंय लखि हृषी केश । वानर ऋच्छादिक राक्षसादि, सब कहँ पुर लाये प्रभु अनादि । रावण वध गाथा कहि अनूप, समुझाये सब कहँ अवधभूप । सुनि धन्य धन्य सब कहहिं लोग, सियराम जानकी शुभ संयोग ॥५३॥

चौपाई

करत विचार चले पुर लोगा । बरनन रामसीय संयोगा ॥
बहुत कीन मुनि जन अभिनन्दन । सीय राम शुचि जन उर चन्दन ॥
आशिष बहुत भाँति तिन दीना । ह्वैकर बिदा गमन गृह कीना ॥
सीता अनुज सहित रघुराया । सुरहित शासन कीन अमाया ॥
भूमि सकल निष्कंटक कीना । सरयु तीर मख रचेउ नवीना ॥
या विधि रामचन्द्र रघुराया । कीन राज्य सब पै करिदाया ॥
रुद्र सहस्र अधिक मुनिराया । कीन राज सुखमय रघुराया ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा । विनै करहि रामहि सरसर्वा ॥

रामचरित्र अमित मुनिराया । तामहँ कछुक कहेउँ हरषाया ॥
विधि यह चरित गुप्त करि राखा । डीर युनरुक्ति न तुम सन भाषा ॥
जो यह अद्भुत चरित निरन्तर । पढ़िहैं सुनिहैं लहहि ब्रह्म पर ॥
श्लोक अर्ध अरु जो एक चरना । सुनहिं सप्रेम लहहिं हरि शरना ॥

दोहा

सायक विंशति सहसमित, रामायण फल जोय ।
श्लोक एक पढ़ियाहि कर, पावै पुण्यहि सोय ॥२४४

चौपाई

जिन यह पढ़ेउ सुनेउ नहिं काना । वृथा गर्भ महँ कीन पयाना ॥
जे यहि कथहिं प्रेम सों पढ़िहैं । ते नहिं मातृगर्भ अवतरिहैं ॥
चारि वेद एक अंग तुला धरि । रामायण विधि धरेउ अन्यपरि ॥
तुल्यो न वेद सकल तेहि संगा । लही उच्च पद तबहिं अभङ्गा ॥
पूछेउ सुरपति सुरसरितीरा । प्रथम कही तहँ कथा गँभीरा ॥
सो मुनिवर मैं तुम सन भाषा । नहिं सुजान कछु अन्तर राखा ॥
महारत्न यह विधि उर माहीं । रहेउ गुप्त कछु संशय नाहीं ॥
पुनि नारद पायो यहि काहीं । क्रमशः हौं पायों तिन पाहीं ॥
ब्रह्म लोक यह चरित विराजत । पुनि पाताल स्वर्ग महँ छाजत ॥
मैं ब्रह्मा नारद ऋषि जानत । अपर व्यक्ति हियरे नहिं ठानत ॥

दोहा

कथा जो अद्भुत काण्ड महँ, कहेउँ कहौं पुनि ताहि ।
सूची रूप मुनीश सुनु, सुनतहि पाप बिलाहि ॥२४५

चौपाई

प्रथमहिं रघुपति जन्म कहानी । कथा श्रीमती बहुरि बखानी ॥
राक्षस रावण अधम मलीना । जेहि विधि रक्त ऋषिन कर लीना
नारद शाप रमा अपराधा । गर्भ मंदोदरि जिमिनिज साधा ॥

जन्म जानकी ताते गावा। राम बिराट रूप दिखरावा॥
भृगुपति कहँ सो सबहिं सुनावा। चौभुज रूप राम दिखराया॥
ऋष्यमूक महँ पवन कुमारहिं। सुनेहु चरित सबराम उदारहिं॥
जिमि कपिराज मित्रता कीना। वारिधि सोषन लषन प्रवीना॥
जेहि विधि लंकेश्वर कहँ मारा। आय अवध जिमि राज पसारा॥
कथा सहस मुख रावन केरी। जब मुनि निकट जानकी टेरी॥
भ्रातन सहित राम भगवाना। पुष्कर द्वीपहिं कीन पयाना॥
जिमि सिय काली रूप सँवारा। सहस मुखहिं निजकर संहारा॥
जेहि विधि लौटि अयोध्या आये। तुमसन सुखद चरित सब गाये॥

दोहा

संग्रह रघुपति वृत्त कर, पढ़ै सुनै जो कोय।
सीय रामपद रति बढ़ै, भक्ती अविचल होय॥२४६

सोरठा

तीरथ फल अभिषेक, पावे जय संग्राम महँ।
मखफल अमित विवेक, छूटै कल्मष कायकर॥
राम सीय धरिध्यान, एक रूप जे भजत हैं।
नहिं होवे आधान, गर्भ मातु के तासु पुनि॥

दोहा

सर्ग शैल युग पूर्णभो, इष्टदेव परताप।
"तेजभानु" वर्णन कियो, पायो भक्ति अमाप॥२४७
नन्द खेट ग्रह भुमि मित, संव्वत माघ सुमास।
पञ्चदशी तिथि मन्द दिन, पूरेउ ग्रन्थहिं दास॥२४८

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे अद्भुतोत्तर काण्डे भाषापद्यानुवादे।
"श्रीतेजभानु" रचिते सप्तविंशतितमः सर्गः समाप्तः।

कविवंश परिचय

दोहा

रायबरेली प्रान्तबिच, राज्य टेकारी नाम ।
'तेजभानु' प्रपितामहहि, थाप्यो तहँ निज धाम ।।
तासु तनय तिन पितामह, सर्वजीत सिंह नाम ।
नीति निपुण अति प्रीति सों, पाल्यो प्रजा मुदाम ।।

कवित्त

वीर सिरमौर कान्हवंस अवतंस नृप, बाबू गङ्गाबख्श तासु तनय ललाम भे । दानवीर, धर्मवीर, बचन गंभीर धीर, दीन प्रजा पालक रुचिर गुण धाम भे । चन्द्रभानु, उदैभानु, भैरोंबख्श, तेजभानु, ताके चारि शिच्छित सुवन अभिराम भे । सबसों कनिष्ठ एही 'तेजभानु' नामवारे, जासों रामसीय के लिखित गुन ग्राम भे ।।

अम्ब के प्रसाद रूप पाये हैं सुवन युग, सुन्दर सुशील गुरुजन अनुगामी हैं । परम विनीत हैं हिमांशुधर, तेजवान, ज्येष्ठ ताते राज्य के विचार शील स्वामी हैं । शारदा के सेवन में करत व्यतीत दिन, दूजो लघु बालक 'सुधांशुधर' नामी हैं । भुवनेश्वरी प्रताप 'भुवनेश्वरी प्रताप', पौत्र चिरञ्जीवी पाय आप अभिरामी हैं ।।

दोहा

राज्यभार बड़ सुतहिं दै, भजत चरणनित अम्ब ।
सन्त सरन अनुसरन करि, नाम रटनि अवलम्ब ।।
ज्ञानविवेक, भरोस तजि, अम्ब कृपाबल एक ।
तेहिबल भव उतरन चहत, कर्म प्रबलता छेंक ।।
अम्ब चरित गावत रहत, पुलकित परमानन्द ।
तासु कृपा सों लगन यह, निसि दिन बढ़ै अमन्द ।।

दयाशंकर वाजपेयी
"गिरीश"